THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com

वर्ष-28 अंक : 312 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) **माघ कृ.4 2080 मंगलवार, 30 जनवरी-2024**

प्रधान संपादक - **डॉ. गिरीश कुमार संघी** हैदराबाद नगर **पृष्ठ : 16 मूल्य : 8 रुपये**

RENAULT TRIBER
life on demand
new

5 से 7 सीट्स
शुरुआती EMI ₹6 999/-#
शुरुआती कीमत ₹5.99 लाख*

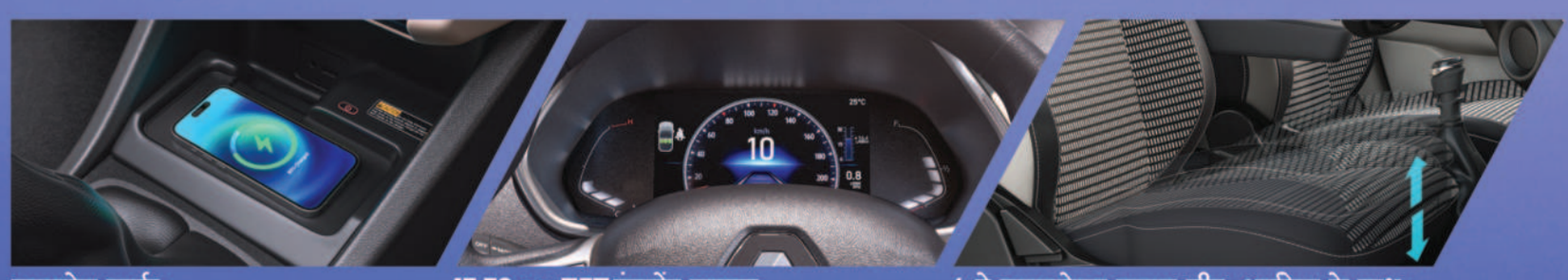

वायरलेस चार्जर | 17.78 cm TFT इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर | 6-वे एड्जस्टेबल ड्राइवर सीट, आमरिस्ट के साथ

for a test drive, call on 1800 315 4444. select variants available in CSD.

terms and conditions apply. *the above-mentioned price of ₹5 99 500 is for the base variant of the Triber and is exclusive of all local taxes. #₹6 999 EMI based on a loan amount of ₹4.11 lakh for a tenure of 84 months. EMI may vary based on actual loan amount and tenure. not valid for any added loan amount or tenure. finance at the sole discretion of Renault Finance. corporate/PSU/defence personnel/government employee/professional benefits applicable on each model are basis eligibility of the customer and based on submission of required proof by the customer. price valid on the date of purchase. for detailed offers, visit www.renault.co.in/offers. Renault India Pvt. Ltd. reserves the right at its absolute discretion to terminate this scheme or vary, delete or add to any of these terms and conditions from time to time without notice or limitation. offers may vary across variants and cities. model/accessories shown may not be a part of the standard fitment. the color in the image may vary slightly from the actual color of the product. prices & offers are valid till 29th February 2024 and can be availed of exclusively through Renault dealerships. Renault India Pvt. Ltd. shall not be liable for any loss or damage arising from your failure to comply or understand the offer details. in the event of any dispute, all matters shall be governed by all applicable laws of India and court at Gurugram shall have exclusive jurisdiction. for detailed terms and conditions, please visit www.renault.co.in

SHOWROOMS: TELANGANA: HYDERABAD: RENAULT Banjara Hills Mob: +91 7428892716, RENAULT Begumpet Mob: +91 9311733972, RENAULT Gachibowli Mob: +91 9289220863, RENAULT Hitech City Mob: +91 9311733970, RENAULT Kukatpally Mob: +91 7067322620, RENAULT LB Nagar Mob: +91 9311700671. **KARIMNAGAR:** RENAULT Karimnagar Mob: +91 9582305983. **KHAMMAM:** RENAULT Khammam Mob: +91 8527234093. **KOTHAGUDEM:** RENAULT Kothagudem Mob: +91 7428439271. **MAHABUBABAD:** RENAULT Mahabubabad Mob: +91 9311341235. **MAHBUBNAGAR:** RENAULT Mahbubnagar Mob: +91 7799766431. **MANCHERIAL:** RENAULT Mancherial Mob: +91 9582571953. **MIRYALGUDA:** RENAULT Miryalguda Mob: +91 7428439406. **NALGONDA:** RENAULT Nalgonda Mob: +91 7428439437. **NIZAMABAD:** RENAULT Nizamabad Mob: +91 9311700672. **SATHUPALLY:** RENAULT Sathupally Mob: +91 8130499615. **SHADNAGAR:** RENAULT Shadnagar Mob: +91 9311700675. **SIDDIPET:** RENAULT Siddipet Mob: +91 8527235114. **SURYAPET:** RENAULT Suryapet Mob: +91 8130311149. **VIKARABAD:** RENAULT Vikarabad Mob: +91 9311733961. **WARANGAL:** RENAULT Warangal Mob: +91 9311700673. **ZAHIRABAD:** RENAULT Zahirabad Mob: +91 9311733977.

मैं गारंटी देता हूं, 7 दिन में लागू होगा सीएए

केंद्रीय मंत्री शांतनु ठाकुर का दावा : शाह ने दिसंबर में कहा था-इसे कोई नहीं रोक सकता

कोलकाता, 29 जनवरी (एजेंसियां)। केंद्रीय मंत्री शांतनु ठाकुर ने रविवार को कहा कि मैं गांरटी देता हूं कि देशभर में 7 दिनों के अंदर नागरिक संशोधन अधिनियम लागू हो जाएगा। ठाकुर दक्षिण 24 परगना के काकद्वीप में एक रैली को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल ही नहीं देशभर में अगले 7 दिनों के अंदर सीएए लागू हो जाएगा। ठाकुर बनगांव से भाजपा के सांसद हैं। ठाकुर के दावे पर राज्य में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस ने फिर दोहराया कि राज्य में सीएए किसी हाल में लागू नहीं होगा। तृणमूल के प्रदेश प्रवक्ता कुणाल घोष ने भाजपा व केंद्र सरकार पर आरोप लगाया कि लोकसभा चुनाव से पहले लोगों को गुमराह करने के लिए ऐसी खबरें फैलाई जा रही हैं।

इससे पहले कोलकाता में पिछले साल दिसंबर में एक रैली के दौरान गृह मंत्री अमित शाह ने भी कहा था कि सीएए को लागू होने से कोई नहीं रोक सकता है। शाह ने घुसपैठ, भ्रष्टाचार, राजनीतिक हिंसा और तुष्टीकरण के मुद्दों पर ममता बनर्जी को घेरा था। उन्होंने लोगों से ममता सरकार को बंगाल से हटाने और 2026 विधानसभा चुनाव में भाजपा को चुनने का आग्रह किया था।

शाह के बयान पर ममता ने कहा था- वे लोगों को विभाजित करना चाहते हैं। पहले, नागरिकता कार्ड जिला मजिस्ट्रेट की जिम्मेदारी थी, लेकिन अब केवल राजनीति के लिए छीन लिया गया है। वे लोगों को विभाजित करना चाहते हैं। वे इसे किसी को देना चाहते हैं और दूसरों को इससे वंचित करना चाहते हैं। यदि किसी समुदाय को नागरिकता मिल रही है तो दूसरे को भी मिलनी चाहिए। 11 दिसंबर 2019 को राज्यसभा में नागरिकता संशोधन विधेयक 2019 (सीएबी) के पक्ष में 125 और खिलाफ में 99 वोट पड़े थे। अगले दिन 12 दिसंबर 2019 को इसे राष्ट्रपति की मंजूरी मिल गई। देशभर में भारी विरोध के बीच बिल दोनों सदनों से पास होने के बाद कानून की शक्ल ले चुका था। इसे गृहमंत्री अमित शाह ने 9 दिसंबर को लोकसभा में पेश किया था।

1955 के कानून में किए गए बदलाव

2016 में नागरिकता संशोधन विधेयक 2016 (सीएए) पेश किया गया था। इसमें 1955 के कानून में कुछ बदलाव किया जाना था। ये बदलाव थे, भारत के तीन मुस्लिम पड़ोसी देश बांग्लादेश, पाकिस्तान और अफगानिस्तान से आए गैर मुस्लिम शरणार्थियों को नागरिकता देना। 12 अगस्त 2016 को इसे संयुक्त संसदीय कमेटी के पास भेजा गया। कमेटी ने 7 जनवरी 2019 को रिपोर्ट सौंपी थी।

विरोध में भड़के दंगों में 50 से ज्यादा जानें गईं

लोकसभा में आने से पहले ही ये बिल विवाद में था, लेकिन जब ये कानून बन गया तो उसके बाद इसका विरोध और तेज हो गया। दिल्ली के कई इलाकों में प्रदर्शन हुए। 23 फरवरी 2020 की रात जाफराबाद मेट्रो स्टेशन पर भीड़ के इकट्ठा होने के बाद भड़की हिंसा, दंगों में तब्दील हो गई।

चार राज्यों में सीएए के विरोध में प्रस्ताव पारित हो चुका है

सीएए बिल संसद के दोनों सदनों से पास होने के बाद 4 राज्य इसके विरोध में विधानसभा में प्रस्ताव पारित कर चुके हैं। सबसे पहले केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने दिसंबर 2019 में सीएए के खिलाफ प्रस्ताव पेश करते हुए कहा कि यह धर्मनिरपेक्ष नजरिए और देश के ताने बाने के खिलाफ है। इसमें नागरिकता देने से धर्म के आधार पर भेदभाव होगा। इसके बाद पंजाब और राजस्थान सरकार ने विधानसभा में सीएए के खिलाफ प्रस्ताव पारित किया। चौथा राज्य पश्चिम बंगाल था, जहां इस बिल के विरोध में प्रस्ताव पारित किया गया। पश्चिम बंगाल की सीएम ने कहा था-बंगाल में हम सीएए, एनपीआर और एनआरसी की अनुमति नहीं देंगे।

सात दिन के भीतर सीएए लागू करने के बीजेपी के दावों पर टीएमसी का पलटवार

कोलकाता, 29 जनवरी (एजेंसियां)। केंद्रीय मंत्री शांतनु ठाकुर ने देश में सात दिनों के भीतर नागरिक संशोधन अधिनियम (सीएए) लागू करने का दावा किया है। उन्होंने दक्षिण 24 परगना के काकद्वीप में एक सार्वजनिक बैठक में भाषण के दौरान इसकी घोषणा की। उन्होंने लिखित में भी सीएए को लागू करने की गारंटी दी है। शांतनु ठाकुर के इस दावे के बाद बंगाल में सत्तारूढ़ पार्टी तृणमूल कांग्रेस ने प्रतिक्रिया दी है।

भाजपा के दावों पर टीएमसी का पलटवार

पश्चिम बंगाल की मंत्री और टीएमसी प्रवक्ता डॉ. शशि पांजा ने सीएए को लेकर भाजपा के दावों पर पलटवार किया है। उन्होंने कहा, 'हमेशा की तरह भाजपा अपनी पुरानी हरकतों पर लौट रही है। उन्होंने कहा है कि सीएए बंगाल में लागू होगा। वो खुद यह कहते हुए आत्मविश्वास की कमी से जूझ रहे हैं। हमारी मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने साफ कहा है कि लोगों की नागरिकता भाजपा के लिए चुनाव का मुद्दा है। बंगाल के लोग पहले ही देश के नागरिक हैं और उन्हें दोबारा नागरिकता नहीं दी जा सकती।' टीएमसी नेता ने आगे कहा, 'वे लोग जो बंगाल में हैं, उन्हें आश्वस्त रहना चाहिए कि उन्हें बंगाल में अलग-अलग योजनाओं का लाभ मिलता रहेगा, राशन मिलता रहेगा और वे चुनावी प्रक्रिया का हिस्सा बने रहेंगे। भाजपा इस मुद्दे को उठा रही है, चुनावी मुद्दे के तौर पर। उनके पास बंगाल के लोगों के लिए कोई नजरिया नहीं है, न तो लोगों से जुड़े मुद्दों के लिए, न ही सुरक्षा के मुद्दे पर। यह (सीएए) सिर्फ उनका नजरिया है, जिसे वे आगे रख रहे हैं।' देश में सात दिनों के भीतर सीएए लागू करने के भाजपा के दावों पर कांग्रेस नेता प्रमोद तिवारी ने कहा, 'जब कोई मंत्री कोई घोषणा करता है, तो उसे तब तक मंत्रिमंडल का बयान माना जाता है, जब तक उसका खंडन न किया जाए। भाजपा को इस बयान का खंडन करना चाहिए। संसद सत्र के शुरू होने में ज्यादा समय नहीं बचा है।'

सीएम मनोहर लाल की बड़ी घोषणा

पैतृक घर को अधिकारियों को सौंपा, बच्चों के लिए बनाई जाएगी ई-लाइब्रेरी

रोहतक, 29 जनवरी (एजेंसियां)। मुख्यमंत्री मनोहर लाल सोमवार सुबह रोहतक से भिवानी जाते समय पैतृक गांव बनियानी पहुंचे और अपने व चचेरे भाई के पैतृक मकान को गांव की पंचायत को सुपुर्द कर दिया। उन्होंने इस दौरान कहा कि मकान में ई-लाइब्रेरी बनाई जाए, जो गांव की अगली पीढ़ी के काम आ सकेगी। इसके बाद मुख्यमंत्री भिवानी के लिए रवाना हो गए।

जहां वह सांसद धर्मबीर सिंह के घर जाएंगे। मुख्यमंत्री ने बनियानी में कहा कि उनके लिए गर्व की बात है कि वह अपने पैतृक गांव में आए हैं, जो उनके लिए दर्शनीय है। उन्होंने कहा कि उनका बचपन यहां बीता और पढ़ाई भी यहीं पर की है। कहा कि यह मकान माता-पिता की निशानी है, जो उन्होंने मेरे नाम किया था। उनको महसूस हुआ कि यह मकान गांव के काम आना चाहिए। सीएम ने कहा कि वह अपना व चचेरे भाई का मकान मिलाकर गांव को सुपुर्द कर रहे हैं। ताकि गांव में यहां ई-लाइब्रेरी बनाई जा सके। इसके साथ मुख्यमंत्री ने गांव के विकास कार्यों का जायजा भी लिया।

कर्नाटक में स्कूल बस-ट्रैक्टर की टक्कर में 4 बच्चों की मौत

बागलकोट, 29 जनवरी (एजेंसियां)। कर्नाटक के बागलकोट जिले में सोमवार को एक स्कूल बस और ट्रैक्टर के बीच टक्कर में एक लड़की सहित चार बच्चों की मौत हो गई और आठ अन्य घायल हो गए। यह घटना जिले के जामखंडी शहर के करीब स्थित अलागुर गांव के पास तड़के हुई। स्कूल की वार्षिक सभा के बाद बच्चे गांव अपने घर लौट रहे थे। मृतकों की पहचान 17 वर्षीय सागर कडकोल और बसवराज, 13 वर्षीय श्वेता और गोविंद के रूप में हुई है, जो सभी कवातागी गांव के रहने वाले थे। बच्चे अलागुर में वर्धमान शिक्षा संस्थान में पढ़ रहे थे। सागर और बसवराज पीयूसी के छात्र थे, जबकि श्वेता और गोविंद कक्षा 9 में पढ़ रहे थे। पुलिस अभी तक यह पता नहीं लगा पाई है कि हादसा कैसे हुआ। उत्पाद शुल्क मंत्री आर.बी. थिम्मापुर, जो बागलकोट के जिला प्रभारी मंत्री भी हैं, शोक संतप्त परिवारों को सांत्वना देने के लिए गांव का दौरा करेंगे और अस्पताल में घायल बच्चों से भी मिलेंगे।

संसद के बजट सत्र से पहले सरकार ने मंगलवार को बुलाई सर्वदलीय बैठक

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)। संसद का बजट सत्र शुरू होने से एक दिन पहले मंगलवार को केंद्र सरकार ने सर्वदलीय बैठक बुलाई है। इस सर्वदलीय बैठक में सरकार सभी राजनीतिक दलों से आगामी बजट सत्र के सुचारू संचालन के लिए सहयोग की अपील करेगी। सरकार की तरफ से केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री प्रल्हाद जोशी ने मंगलवार यानि 30 जनवरी को सुबह 11:30 बजे संसद भवन परिसर के पार्लियामेंट लाइब्रेरी बिल्डिंग में बजट सत्र के एजेंडे को लेकर यह सर्वदलीय बैठक बुलाई है।

इस बैठक के लिए संसद के दोनों सदनों लोक सभा और राज्य सभा में सभी राजनीतिक दलों के फ्लोर लीडर्स को आमंत्रित किया गया है। आपको बता दें कि संसद का आगामी बजट सत्र 31 जनवरी से शुरू होगा और इसके 9 फरवरी तक चलने की संभावना है। यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल का आखिरी बजट सत्र होगा। बजट सत्र की शुरुआत 31 जनवरी को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के अभिभाषण से होगी। राष्ट्रपति दोनों सदनों-लोक सभा और राज्य सभा की संयुक्त बैठक को संबोधित करेंगी।

108 फीट ऊंचा हनुमान ध्वज हटाने पर विवाद बीजेपी कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया

सीएम बोले-मंदिर में ध्वज लगाएं, हम सपोर्ट करेंगे

बेंगलुरु, 29 जनवरी (एजेंसियां)। कर्नाटक के मांड्या के केरागोडु गांव में पुलिस अधिकारियों ने 108 फीट ऊंचे हनुमान ध्वज को हटा दिया। इसके बाद यहां विवाद हो गया। गांववालों के लगाए ध्वज को उतारने जब पुलिस वाले पहुंचे तो भीड़ ने उन्हें रोका।

प्रदर्शनकारियों में भाजपा और बजरंग दल के कार्यकर्ता भी शामिल थे। दरअसल, पिछले हफ्ते ग्रामीणों ने ग्राम पंचायत से परमिशन लेकर यह हनुमान ध्वज फहराया था। बाद में इसके खिलाफ शिकायतें दर्ज की गई और प्रशासन ने पुलिस को ध्वज निकालने का आदेश दिया। प्रशासन के इस आदेश से नाराज ग्रामीणों ने शनिवार (27 जनवरी) को अपनी दुकानें बंद रखीं।

जब पुलिस ध्वज हटाने पहुंची तो मामला गर्मा गया। गुस्साए लोगों ने स्थानीय कांग्रेस विधायक रवि कुमार के बैनर तोड़ दिए और उनके खिलाफ नारे लगाए। इसके चलते प्रशासन ने गांव में पुलिस बल तैनात किया, जिसने भीड़ को रोकने के लिए लाठीचार्ज का सहारा लिया। फिर पुलिस ने पोल से हनुमान ध्वज हटाकर वहां तिरंगा लगा दिया। वहीं, गांव में धारा 144 लगा दी गई। इसे लेकर मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने कहा कि जहां तिरंगा फहराया जाता हो, वहां भगवा झंडा फहराना नियमों के खिलाफ है। परमिशन राष्ट्रीय ध्वज लगाने के लिए ली गई थी, लेकिन वहां दूसरा झंडा फहराया गया। हम मंदिर के पास हनुमान ध्वज स्थापित करने के लिए तैयार हैं। हम भी राम भक्त हैं। सीएम सिध्दारमैया ने इस मामले पर चिंता जाहिर करते हुए कहा की कि राष्ट्रीय ध्वज के बजाय भगवा ध्वज फहराया गया। उन्होंने कहा कि इसके पीछे राजनीति हो सकती है। मुझे नहीं पता कि इसके पीछे कौन है? यह देश लोकतंत्र और संविधान के तहत काम करता है। उन्होंने ये भी कहा अगर एक स्थान पर इसकी अनुमति दी जाती है, तो यह अन्य स्थानों पर भी लागू होगा। कल वे ये भी कह सकते है कि कलेक्टर कार्यालय के सामने भगवा झंडा लगाया जाए, क्या इसकी परमिशन दी जा सकती है? सीएम ने कहा कि हम यहां अपने युवाओं को चोट पहुंचाने के लिए नहीं आए हैं। मैंने अधिकारियों, पुलिस और युवाओं से बात की है। हम एक निजी स्थान पर या एक मंदिर के पास हनुमान ध्वज स्थापित करने के लिए तैयार हैं। हम उनका समर्थन करेंगे। हम भी राम भक्त हैं।

इस मामले पर पूर्व ग्राम पंचायत उपाध्यक्ष ने कहा कि जब परमीशन लेटर लिखा गया था तो, उल्लेख किया गया था कि पोल का उपयोग धार्मिक उदेश्य के लिए भी किया जाएगा। मुख्यमंत्री को इस विवाद की हकीकत पता नहीं है। जिला स्तर के अधिकारी ने मुख्यमंत्री को गलत जानकारी दी है। अब इसे लेकर भाजपा नेताओं ने कर्नाटक के सभी जिलों में विरोध प्रदर्शन की चेतावनी दी हैं। उन्होंने ने कहा कि हम राज्य की सभी इमारतों और घरों की छतों पर भगवा झंडे फहराकर राज्यव्यापी विरोध करेंगे। वहीं आज बेंगलुरु के मैसरु बैंक सर्कल में प्रदर्शन किया जाएगा।

रोचक खबरें

मोरनी ने सिखाया चोरनी को सबक!

अंडे लूटने आई लड़की, पक्षी ने जो किया वो सुन हैरान हो जाएंगे!

यूं तो पक्षी पेड़ों पर अपना घोंसला बनाते हैं और उसी में अंडे देते हैं जिससे वो अपने अंडों और उससे निकलने वाले बच्चों को सुरक्षित रख लें. पर कई ऐसे भी पक्षी हैं जो पेड़ों पर अंडे नहीं देते, वो जमीन पर अंडे देते हैं, उसे सेते हैं और बच्चे पैदा होने के बाद वो वहां से चले जाते हैं. पर कुछ इंसान इन पंछियों को परेशान करने से बाज नहीं आते. ऐसा ही एक लड़की वायरल वीडियो में करती नजर आई. उसने एक मोरनी के अंडों को चुराने की कोशिश की पर फिर मोरनी ने जो किया, वो देखकर आप हैरान हो जाएंगे. ये वीडियो स्क्रिप्टेड लग रहा है, मगर पक्षी का रिएक्शन पूरी तरह सच्चा नजर आ रहा है. हाल ही में इस अकाउंट पर एक वीडियो शेयर किया गया है जिसमें एक लड़की, खेत किनारे अंडा से रही मोरनी को परेशान करती दिख रही है. उसके बाद मोरनी भी उस चोरनी को सबक सिखाती है. मोरनियां जमीन पर ही अंडे देती हैं और वहां उन्हें सेती हैं. इस वडियो में भी ऐसा ही नजर आ रहा है.

मोरनी ने सिखाया चोरनी को सबक

तभी वहां एक लड़की आ जाती है. वो वहां आकर मोरनी को पकड़ती है और उसे उठाकर एक बगल फेंक देती है और उसके अंडों पर झपट पड़ती है. जब वो अंडे उठा रही होती है, तभी मोरनी उसकी ओर उड़ते हुए आती है और झपट पड़ती है. ऐसे में वो लड़की जमीन पर बुरी तरह गिर पड़ती है. वीडियो फेक मालूम हो रहा है, क्योंकि लड़की के अंडा उठाने के बाद जब मोरनी उसके ऊपर हमला करती है, तो वीडियो में कट है, जिससे लग रहा है कि मुमकिन है किसी ने मोरनी को लड़की की ओर फेंका होगा, या फिर काफी देर इंतजार करने के बाद वो मोरनी उस लड़की के ऊपर झपटती होगी. इस वीडियो को 19 लाख व्यूज मिल चुके हैं जबकि कई लोगों ने कमेंट कर अपनी प्रतिक्रिया दी है. एक ने कहा कि मोरनी ने सही सबक सिखाया है! वहीं एक ने कहा कि ये कहीं से भी मजाकिया हरकत नहीं लग रही है. एक ने कहा कि मोरनी ने बहुत ज्यादा हिम्मत दिखाई है. एक ने कहा कि किसी मां के बच्चों के साथ ऐसी हरकत नहीं करनी चाहिए.

2 साल के बच्चे का कमाल, वो कर दिखाया-जो आज तक कोई नहीं कर पाया

2 साल की उम्र में बच्चे चलना-भागना सीखते हैं, लेकिन स्कॉटलैंड के एक बच्चे ने इसी उम्र में ऐसा रिकॉर्ड बना डाला कि जो इतिहास में आज तक कोई नहीं कर पाया. जानकर आपके लिए भी यकीन करना मुश्किल होगा. इस छोटी सी उम्र में ही वह दुनिया की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट के बेस कैंप तक पहुंचने वाला बच्चा बन गया. अब तक कोई भी इस उम्र में यहां तक नहीं पहुंचा. मिरर डॉट यूके की रिपोर्ट के मुताबिक, 2 साल का कार्टर डलास अपनी मां जेड और पिता रॉस की पीठ पर बैठकर यह सफर पूरा किया. ग्वासगो के रहने वाले रॉस और 31 वर्षीय जेड एक साल के लिए एशिया की यात्रा पर निकले हुए हैं. बच्चे को भी साथ लेकर ट्रैवल कर रहे हैं. तीनों ने 25 अक्टूबर को नेपाल में समुद्र तल से 17,598 फीट की ऊंचाई पर स्थित दक्षिणी स्थल पर चढ़ाई की और बेस कैंप तक पहुंच गए. इससे पहले यह रिकॉर्ड चेक गणराज्य के एक चार वर्षीय बच्चे के नाम था.

कार्टर हमसे ज्यादा उत्साहित

चढ़ाई के बाद रॉस ने कहा, कार्टर हमसे ज्यादा उत्साहित लग रहा था. मुझे और जेड को थोड़ी ऊंचाई सांस लेने में तकलीफ हुई लेकिन वह बिल्कुल ठीक था. बेस कैंप से पहले गांवों में दो डॉक्टर तैनात थे. उन्होंने हमारा ब्लड टेस्ट किया. उसका भी ब्लड टेस्ट किया, लेकिन वह हमारे मुकाबले ज्यादा स्वस्थ था. यह देखकर हम तो आश्चर्यचकित थे ही, डॉक्टर भी काफी खुश नजर आ रहे थे. हमने ट्रैकिंग के लिए फूड जैकेट और दो स्लीपिंग बैग खरीदे थे. मेरे लिए यह भावुक कर देने वाला पल है. 35 वर्षीय रॉस ने कहा, काठमांडू पहुंचने के 24 घंटों के भीतर हमने चढ़ाई शुरू कर दी थी. हम पहले से अच्छी तरह से तैयार थे. नियमित रूप से लंबी सांस लेने की तकनीक का अभ्यास कर रहे थे. हम खुद बर्फ के पानी से तो नहाते ही थे, कार्टर को भी इसी पानी स्नान कराते थे, ताकि बेस कैंप पर कोई दिक्कत न आए. रॉस और जेड के साथ एक ट्रेनर भी था. रॉस ने कार्टर को पीठ पर बांधकर ट्रैकिंग पूरी की.

होटल में ठहरी महिला ने ऑनलाइन मंगाया खाना लेकिन पैकेट मिलते ही चिल्ला उठी

आजकल हर कोई ऑनलाइन खाना मंगाता है, लेकिन चीन की इस महिला टूरिस्ट के साथ जो हुआ, वह हैरान करने वाला है. महलिा ने ऑनलाइन खाने का ऑर्डर किया. लेकिन जब पहुंचा तो देखकर चिल्ला उठी. डिलीवरी मैन को खूब खरी खोटी सुनाई. कंपनी तक को फोन कर नसीहत दी. वजह हर किसी के लिए जानना जरूरी है. साउथ चाइना मार्निंग पोस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक, महिला हेबेई के उत्तरी प्रांत में एक गेस्ट हाउस में ठहरी थी. होटल में खाने की कोई व्यवस्था नहीं थी, इसलिए ऑनलाइन ऑर्डर किया. जैसे ही महिला को अपने मोबाइल पर डिलीवरी का नोटिफिकेशन मिला, उसने खाना लेने के लिए दरवाजा खोला. लेकिन उससे अजीब गंध आ रही थी. महिला ने को पता चला कि उसका खाना दरअसल पेशाब से सना हुआ था. वह गुस्से में चिल्ला उठी. तुरंत उसने डिलीवरी मैन को फोन किया ओर खूब सुनाया. महिला ने डिलीवरी मैन को फोटो भेजते हुए लिखा, मेरा खाना पेशाब में सना हुआ है. यह बहुत असभ्य है. इस पर ड्राइवर ने भी गुस्से में जवाब दिया. मैं क्यों असभ्य हूं, इसमें आपकी गलती होगी. आप खुद इसकी जांच करा लीजिए. मैंने जो फूड रखा था, वह साफ था. इसके बाद महिला ने होटल के सीसीटीवी फुटेज की जांच कराई.

'किसी भगवान की पूजा के लिए बीजेपी का आदेश मानने को मजबूर नहीं...'

पश्चिम बंगाल सीएम ममता बनर्जी की दो टूक

कोलकाता, 29 जनवरी (एजेंसियां)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सोमवार (29 जनवरी) को कहा कि वह किसी खास भगवान की पूजा करने के लिए बीजेपी के आदेश का पालन करने के लिए मजबूर नहीं हैं. ममता ने बीजेपी पर बड़ा आरोप लगाते हुए कहा है कि बीजेपी लोगों को धमकी दे रही है कि अगर उसे वोट नहीं दिया जाएगा, तो वह लोगों के घरों के पर सीबीआई और ईडी की भेज देगी. बंगाल सीएम एक सरकारी प्रोग्राम में हिस्सा लेने कूचबिहार पहुंची हुई हैं।

ममता बनर्जी ने कूचबिहार में लोगों को संबोधित करते हुए कहा, 'बीजेपी लोगों को फोन पर धमकी दे रही है कि अगर उन्होंने उसे वोट नहीं दिया तो उनके घर ईडी, सीबीआई भेज दी जाएगी.' ममता ने आगे कहा, 'वह किसी विशेष भगवान की पूजा करने के बीजेपी के आदेश का पालन करने के लिए बाध्य नहीं हैं.' उत्तर बंगाल का उनका दौरा लोकसभा चुनाव के लिए तैयारी के तौर पर भी देखा जा रहा है. ममता ने पश्चिम बंगाल में अकेले चुनाव लड़ने का ऐलान भी किया है।

न्याय यात्रा गुजरने के बाद ममता पहुंचीं उत्तर बंगाल

दरअसल, ममता बनर्जी ने रविवार (28 जनवरी) से अपने पांच दिनों के उत्तर बंगाल के जिलों के दौरे की शुरुआत की है. उनका ये दौरा ऐसे समय पर हो रहा है, जब उत्तर बंगाल से ही कांग्रेस नेता राहुल गांधी की 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' गुजरी है. ममता ने न्याय यात्रा में शामिल होने का निमंत्रण नहीं मिलने पर दुख जताया था. तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) प्रमुख दोपहर में अलीपुरद्वार जिले के हासीमारा में विमान से लैंड हुईं और कार से कूचबिहार जिले पहुंचे.

ममता ने कूचबिहार में कुछ सरकारी प्रोजेक्ट्स का उद्घाटन किया है. ममता के इस दौरे को लोकसभा चुनाव के लिए शंखनाद के तौर पर देखा जा रहा है. पश्चिम बंगाल में लोकसभा की 42 सीटें हैं. ममता की नजर कम से कम 30 सीटों पर जीत हासिल करने पर है. कूचबिहार के बाद ममता दार्जिलिंग के सिलिगुड़ी में एक अन्य कार्यक्रम में जाने वाली हैं. मंगलवार को वह उत्तर दिनाजपुर के रायगंज और दक्षिण दिनाजपुर के बालुरघाट में दो बैठकें करेंगी।

पुजारी और सेवादार की हत्या, 3 गिरफ्तार

देहरादून, 29 जनवरी (एजेंसियां)। उत्तराखंड में एक पुजारी और सेवादार की हत्या के आरोप में पुलिस ने 3 लोगों को गिरफ्तार किया है। इनमें मंदिर का ही एक पूर्व सेवादार, एक अघोरी और आपराधिक रिकॉर्ड वाला शख्स शामिल है। घटना उधम सिंह नगर जिले की है। एसएसपी मंजूनाथ टीसी ने बताया कि 4-5 जनवरी की रात के खटीमा में बाबा भारमल मंदिर के पुजारी बाबा हरिगिरि महाराज और सेवादार रूपा की रात को लाठियों से पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। घटनास्थल से कुछ नकदी और अन्य सामान भी गायब था।

एसएसपी ने बताया कि 3 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। इनमें मंदिर का पूर्व सेवादार कालीचरण, अघोरी रामपाल और उत्तर प्रदेश के पीलीभीत जिले का रहने वाला पवन शामिल है। पवन का आपराधिक रिकॉर्ड भी रहा है। पुलिस के मुताबिक, आरेपियों से पूछताछ में पता चला कि कालीचरण और रामपाल मंदिर में आयोजित भंडारे में आए थे।

'भाजपा विरोधी ताकतों को नीतीश ने ही इकट्ठा किया...'

जदयू के पाला बदलने पर भड़की शिवसेना

मुंबई, 29 जनवरी (एजेंसियां)। नीतीश कुमार के पाला बदलने और एनडीए में शामिल होने पर विपक्षी गठबंधन की पार्टियां खासी नाराज हैं। उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवेसना ने अपने मुखपत्र 'सामना' के एक लेख में नीतीश कुमार की तीखी आलोचना की है। सामना के लेख में लिखा गया है कि नीतीश कुमार ने ही भाजपा विरोधी ताकतों को इकट्ठा किया था और उन्होंने ही विपक्षी गठबंधन की पटना में पहली बैठक बुलाई थी।

सामना के लेख में शिवसेना ने नीतीश पर बोला हमला

सामना के लेख के अनुसार, 'इंडिया ब्लॉक के गठन के बाद, ऐसा लगता था कि नीतीश कुमार राष्ट्रीय नेतृत्व को लीड करेंगे। विपक्षी पार्टियों को भाजपा की तानाशाही के खिलाफ एकजुट होकर लड़ना चाहिए। इसके लिए नीतीश कुमार ने बीड़ा उठाया और सभी को साथ लेकर आए। पटना में भाजपा विरोधी ताकतों की पहली बैठक करायी। उस बैठक में नीतीश ने भाषण देते हुए कहा था कि देश खतरे में है, संविधान खतरे में है। केंद्रीय जांच एजेंसियों का गलत इस्तेमाल हो रहा है और देशहित में हमें अपने मतभेदों को भुलाकर लोकतंत्र की रक्षा के लिए एकजुट होना चाहिए। नीतीश ने पटना में बड़ी-बड़ी बातें कही थी। बाद में वे बेंगलुरु, मुंबई और दिल्ली की बैठकों में भी शामिल हुए। वह भाजपा के खिलाफ लड़ाई के लिए आखिरी वक्त तक समर्पित थे, लेकिन अब उनका समर्पण सबके सामने आ गया है। नीतीश कुमार ने पाला बदल लिया।'

नीतीश कुमार ने रविवार को बिहार सीएम पद से इस्तीफा देकर भाजपा के साथ गठबंधन कर फिर से सरकार बना ली। नीतीश के नेतृत्व में रविवार शाम पांच बजे ही नई सरकार ने शपथ भी ले ली। नई सरकार की कमान भी नीतीश कुमार संभालेंगे। वहीं भाजपा के खेमे से प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी और नेता प्रतिपक्ष रहे विजय सिन्हा को डिप्टी सीएम बनाया गया है।

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com

वर्ष-28 अंक : 312 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) माघ कृ.4 2080 मंगलवार, 30 जनवरी-2024

प्रधान संपादक - डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर पृष्ठ : 16 मूल्य : 8 रुपये

रोज लिखने की प्रैक्टिस करें

मोबाइल को रील्स नहीं पढ़ाई के लिए यूज करें

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज सोमवार यानी 29 जनवरी को 10वीं और 12वीं के स्टूडेंट्स से लाइव बातचीत की। नई दिल्ली के भारत मंडपम में परीक्षा पे चर्चा के 7वें संस्करण में 3 हजार स्टूडेंट्स शामिल हुए। ये सभी अगले कुछ महीनों में बोर्ड एग्जाम देंगे।

बोर्ड एग्जाम को लेकर हुई इस चर्चा में सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों से 2-2 स्टूडेंट्स और एक टीचर ऑनलाइन भी शामिल हुए। पीएम मोदी ने करीब 2 घंटे 10 मिनट तक स्टूडेंट्स के सवालों के जवाब दिए। इस दौरान पीएम ने बोर्ड एग्जाम के स्ट्रेस से निपटने, एग्जाम हॉल में परफॉर्म करने और एग्जाम्स की तैयारी करने के टिप्स दिए। इनमें से 10 सबसे जरूरी बातों को हम आपके लिए ला रहे हैं।

जीवन में कॉम्पीटीशन होना जरूरी :

परीक्षा पे चर्चा 2024

जीवन में कॉम्पीटीशन होना जरूरी है। हमें खुद को किसी भी प्रकार का प्रेशर को झेलने लायक बनाना चाहिए। एक प्रेशर होता है जो खुद ने ही अपने लिए तैयार किया होता है। हमें खुद को इतना स्ट्रैच नहीं करना चाहिए कि स्टेबिलिटी टूट जाए। माता-पिता को ज्यादा समझाने से बचना चाहिए। कभी पिता बच्चों को बोलते रहते हैं, पिता चुप होते हैं तो मां बोलने लगती हैं। फिर बड़ा भाई बोलने लगता है। कई बच्चे इसे सकारात्मक लेते हैं लेकिन इससे भी दबाव पड़ता है। कॉम्पटीशन का जहर पारिवारिक वातावरण में ही बो दिया जाता है। इसलिए सभी पैरेंट्स से आग्रह है कि बच्चों के बीच कम्पेरिजन मत कीजिए। बच्चों के अंदर द्वेष का भाव पैदा हो जाता है। 100 नंबर का पेपर है। अगर आपका दोस्त 90 नंबर ले आया तो आपको उससे स्पर्धा नहीं करनी, अपने आप से करनी है कि आपको कितने नंबर लाने हैं। अपने अंदर ईर्ष्या का भाव न आने दें। दोस्ती निर्व्याज प्यार होती है, तभी ये जिंदगीभर होती है।

मां-बाप हर बार अपने बच्चों को कोसते रहते हैं कि देखो तुम खेलते हो, वो पढ़ता है। मां-बाप इससे बचे। जो माता-पिता जीवन में ज्यादा सफल नहीं हुए, जिनके पास दुनिया को ज्यादा बताने को नहीं है, वे बच्चे के रिपोर्टिंग कार्ड को अपना विजिटिंग कार्ड बना लेते हैं। शिक्षक संगीत के जरिए क्लास का माहौल खुशहाल कर सकते हैं। टीचर को स्टूडेंट्स से रिलेशन ठीक करना चाहिए। इससे परीक्षा के दिनों में तनाव की नौबत ही नहीं आएगी। स्टूडेंट को कभी लगता ही नहीं कि शिक्षक का उसकी जिंदगी में विशेष स्थान है। जिस दिन टीचर सिलेबस से निकलकर स्टूडेंट्स से रिलेशन डेवलप करेंगे, तो बच्चे उनसे हर प्रेशर का डिस्कस करेंगे।

परीक्षा के दौरान होने वाले तनाव का सामना करने के लिए हमें छोटी-छोटी गलतियों से बचना चाहिए। ड्रेसिंग सेंस, खाने-पीने का तनाव ना लें। परीक्षा शुरू होने तक किताब से ना चिपके रहें। एग्जाम शुरू होने कुछ देर पहले मन को शांति दें। एग्जाम हॉल में सुकून से बैठिए, दोस्तों से हंसी-मजाक कीजिए। डीप ब्रीथिंग कीजिए। 8-10 मिनट खुद के लिए जिए, खुद में खो जाएं। फिर जब आपके हाथ में पेपर आएगा, तो आपको तनाव नहीं होगा। खुद पर विश्वास करें, दूसरों की सलाह से करियर का सिलेक्शन नहीं करें। दरअसल, सोचने के संबंध में दुविधा है, इसलिए आप 50 लोगों से राय लेते हैं। आप किसी की एडवाइज पर डिपेंड रहते हैं। सरल एडवाइज को अडेप्ट कर लेते हो। सबसे बुरी स्थिति कंफ्यूजन है।

> पहलवानों जैसी एक्सरसाइज जरूरी नहीं

अच्छी सेहत के लिए न्यूट्रिशन पर ध्यान देना चाहिए। आहार संतुलन और फिटनेस के लिए एक्सरसाइज बेहद जरूरी है। बिना कॉम्प्रोमाइज के एक्सरसाइज करना चाहिए।

पहलवानी जैसी एक्सरसाइज न भी करते हों तो भी हर दिन 2 बेसिक फिजिकल एक्सरसाइज के लिए समय निकालें। सनलाइट से बॉडी को रिचार्ज करने की कोशिश करें। साथ ही हमें पर्याप्त नींद लेनी चाहिए। एग्जाम की वजह से ओवरनाइट पढ़ाई नहीं करनी चाहिए, इससे तनाव बढ़ता है। मैं बिस्तर पर लेटते ही 30 सेकेंड में डीप स्लीप में पहुंच जाता हूं। मेरा जागृत अवस्था के समय पूरी तरह जागृत हूं, और जब सोया हूं तो पूरी तरह सोया हूं।

> एग्जाम लिखने की प्रैक्टिस करें

क्रेश्चन पेपर किसे पहले मिला, मुझे बाद में मिला जैसी फिजूल की बातों में अपनी एनर्जी खर्च न करें। एग्जाम में बड़ा चैलेंज लिखना होती है, इसलिए लिखने की प्रैक्टिस करें। इन चीजों पर आप ध्यान केंद्रित करेंगे, तो एग्जाम हॉल में बैठने के बाद प्रेशर लगेगा ही नहीं। सबसे पहले पूरा पेपर पढ़ लें, फिर हर सवाल का एनालिस्ट करें कि किस सवाल में कितना मिनट लगेगा।

दिल्ली में हेमंत सोरेन के घर पहुंची ईडी

सीएम ने जांच एजेंसी को मेल किया, लिखा-31 जनवरी को पूछताछ करें

रांची, 29 जनवरी (एजेंसियां)। जमीन घोटाले में घिरे झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से पूछताछ करने ईडी सोमवार को उनके दिल्ली स्थित आवास पर पहुंची। वे यहां नहीं मिले। एजेंसी यहां जरूरी कागजात खंगाल रही है।

झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य ने बताया कि हेमंत सोरेन ईडी को ईमेल पर पूछताछ के लिए समय दिया है। इसमें लिखा- 31 जनवरी को दोपहर 1 बजे पूछताछ के लिए सीएम तैयार हैं। ईडी की कार्रवाई अलोकतांत्रिक है। वहीं, ईडी की कार्रवाई के विरोध में जेएमएम कार्यकर्ता रांची के मोरहाबादी इलाके से सीएम हाउस होते हुए राजभवन के लिए निकले। ईडी और केंद्र सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।

इससे पहले सुबह खबर आई थी कि झारखंड के मुख्यमंत्री का कहीं पता नहीं चल रहा। वे 27 जनवरी की रात 11:30 बजे दिल्ली स्थित आवास पहुंचे थे। देर रात उन्होंने पार्टी नेताओं और करीबियों के साथ बैठक भी की थी। वे अपने पिता और राज्यसभा सांसद शिबू सोरेन के आवास पर भी नहीं है।

इस पर राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने कहा था कि अगर मुख्यमंत्री आज जवाब नहीं दे रहे हैं तो उन्हें कल जवाब देना होगा। एक सच्चे नागरिक के रूप में हमें आज्ञा माननी चाहिए। कानून व्यवस्था की स्थिति बहुत संतोषजनक नहीं है। मैं ये बात कई बार व्यक्त कर चुका हूं। कार्रवाई तो करनी ही पड़ेगी।

इधर, इस बात की भी चर्चा है कि सोरेन की गिरफ्तारी हो सकती है। इसे देखते हुए झारखंड में पुलिस को अलर्ट कर दिया गया है। रांची स्थित सीएम हाउस के अलावा भाजपा ऑफिस और बड़े नेताओं के घर की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। पुलिसकर्मियों की छुट्टियां भी रद्द कर दी गई हैं।

लालू यादव से ईडी की 10 घंटे तक चली पूछताछ आज बेटे तेजस्वी की बारी

पटना, 29 जनवरी (एजेंसियां)। नौकरी के बदले जमीन घोटाला मामले में लालू यादव से पूछताछ खत्म हो गई है। ईडी ने लालू यादव से नौ घंटे तक पूछताछ की। लालू यादव को नौकरी के बदले जमीन मामले में ईडी ने पूछताछ के लिए दफ्तर बुलाया था। दस घंटे में 50 सवाल पूछे गए। कहा जा रहा है कि सभी सवालों को ईडी ने वीडियो रिकॉर्ड किया है। इस दौरान लालू यादव को बिठा कर रखा गया। परिवार का आरोप है कि लालू यादव को डॉक्टरों ने लगातार बैठने से मना किया है। उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया जा रहा है। लालू यादव के समर्थन में वहां समर्थक भी खड़े रहे। आखिरकार, 10 घंटे पूछताछ के बाद लालू यादव को ईडी ने छोड़ा है। जानकारी के मुताबिक आज तेजस्वी यादव से भी पूछताछ की जाएगी।

लालू यादव की बेटी मीसा भारती ने आरोप लगाया किआज हमारे पिता(लालू प्रसाद यादव) को बुलाया गया है और कल भाई(तेजस्वी यादव) को बुलाया गया है, हमें दिल्ली भी बुलाया गया है।

>14

ज्ञानवापी केस : हिंदू पक्ष की सुप्रीम कोर्ट में याचिका

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)। वाराणसी की ज्ञानवापी मस्जिद मामले में हिंदू पक्ष ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल की है। इस याचिका में आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (एएसआई) के डायरेक्टर जनरल से अपील की गई है कि वे परिसर में मिले शिवलिंग का सर्वे करें, ताकि उसकी वास्तविकता का पता लगाया जा सके।

याचिका में कहा गया है कि सर्वे करने के लिए शिवलिंग के आसपास की आर्टिफिशियल या मॉडर्न दीवार और फ्लोर को हटाया जाए। बिना शिवलिंग को नुकसान पहुंचाए सील किए गए पूरे इलाके का वैज्ञानिक सर्वे किया जाए। इससे पहले, 19 मई 2023 को सुप्रीम कोर्ट ने ज्ञानवापी के सर्वे पर रोक लगा दी थी। हिंदू पक्ष के वकील विष्णु शंकर जैन ने याचिका में ज्ञानवापी परिसर में सीलबंद वजूखाना (स्नान जल टैंक) का सर्वे कराने की मांग करने की बात कही थी। उन्होंने दावा किया है कि 10 सीलबंद तहखानों में हिंदू मंदिर के सबूत और कलाकृतियां हैं। ज्ञानवापी की एएसआई सर्वे की रिपोर्ट 25 जनवरी को देर रात सार्वजनिक हुई थी। इस रिपोर्ट के मुताबिक, परिसर के अंदर भगवान विष्णु, गणेश और शिवलिंग की मूर्ति मिली हैं। पूरे परिसर को मंदिर के स्ट्रक्चर पर खड़ा बताते हुए 34 साक्ष्य का जिक्र किया गया है। मस्जिद परिसर के अंदर 'महामुक्ति मंडप' नाम का एक शिलापट भी मिला है। एएसआई ने रिपोर्ट में लिखा कि ज्ञानवापी में एक बड़ा हिंदू मंदिर मौजूद था। 17वीं शताब्दी में जब औरंगजेब का शासन था। उस वक्त ज्ञानवापी स्ट्रक्चर को तोड़ा गया। कुछ हिस्सों को मॉडिफाई किया गया। मूलरूप को प्लास्टर और चूने से छिपाया गया। 839 पेज की रिपोर्ट में एएसआई ने परिसर के प्रमुख स्थानों का जिक्र किया।

राहुल गांधी ने नीतीश पर एक शब्द नहीं कहा

न्याय यात्रा के दौरान बिहार में सरकार पलटने पर चुप रहे, सिर्फ आरएसएस-भाजपा पर टारगेट

किशनगंज (बिहार), 29 जनवरी (एजेंसियां)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा बिहार में प्रवेश कर चुकी है। राहुल आज बंगाल के उत्तरी दिनाजपुर से किशनगंज पहुंचे। यहां स्टेडियम में जनसभा को संबोधित करते हुए कहा देश में आरएसएस और भाजपा की विचारधारा ने हिंसा और नफरत फैला रखी है। हालांकि, 4 मिनट के भाषण में राहुल गांधी एक शब्द भी बिहार की नई सरकार और नीतीश कुमार पर नहीं बोले।

लोगों को उम्मीद थी कि राहुल गांधी नीतीश कुमार और वर्तमान एनडीए सरकार पर जमकर हमला करेंगे, लेकिन वे सिर्फ आरएसएस और भाजपा पर हमला किया।

राहुल ने कहा कि आज इस विचारधारा के चलते भाई-भाई से लड़ रहा है। एक धर्म का व्यक्ति दूसरे धर्म के व्यक्ति से लड़ रहा है। भाषाओं के बीच लड़ाई हो रही है। हम जानते थे कि ये मोहब्बत का देश है। नफरत के बाजार में मोहब्बत की दुकान खुलनी चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि हिंदुस्तान की राजनीति पर यात्रा का बहुत बड़ा असर पड़ा है। एक विचारधारा जो भाजपा देश के सामने रोज रखती है, वह नफरत और हिंसा की है। उसके खिलाफ मोहब्बत की एक नई विचारधारा खड़ी हुई है। जितनी भी कोशिश कर लो नफरत को नफरत नहीं काट सकती, नफरत को सिर्फ प्यार काट सकता है।

मतदान का आखिरी मौका : इसके बाद वोटिंग नहीं होगी, खड़गे का सरकार पर तंज

भुवनेश्वर, 29 जनवरी (एजेंसियां)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने आडिशा में ईडी के समन के मामलों और नीतीश कुमार के विपक्षी गठबंधन से अलग होने के घटनाक्रम के बीच बड़ा बयान दिया। उन्होंने कहा कि इस बार के बाद देश में वोटिंग नहीं होगी। इस बार आप सभी के पास मतदान करने का आखिरी मौका है। भुवनेश्वर में कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते हुए मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि हर किसी को ईडी नोटिस दे रही है। वे लोगों को डरा रहे हैं। डर के कारण कुछ लोग दोस्ती छोड़ रहे हैं। कुछ लोग पार्टी छोड़ रहे हैं। कुछ लोग गठबंधन छोड़ रहे हैं। ऐसे क्या लोकतंत्र बचेगा। यह आपके लिए मतदान करने का आखिरी मौका है। इसके बाद कोई मतदान नहीं होगा।

15 राज्यों की 56 राज्यसभा सीटों पर चुनाव का एलान-27 फरवरी को होगा मतदान

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)। चुनाव आयोग ने एलान किया है कि राज्यसभा की 56 सीटों के लिए मतदान 27 फरवरी को होगा। 15 राज्यों की 56 सीट के लिए द्विवार्षिक चुनाव होना है। निर्वाचन आयोग ने सोमवार को यह जानकारी दी। आयोग ने बताया कि 50 सदस्य दो अप्रैल को सेवानिवृत्त होंगे, जबकि छह सदस्य तीन अप्रैल को सेवानिवृत्त होंगे। जिन राज्यों से सदस्य सेवानिवृत्त हो रहे हैं, उनमें आंध्र प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा और राजस्थान शामिल हैं।

15 राज्यों की 56 सीटों पर होगा चुनाव :

चुनाव आयोग की वेबसाइट के अनुसार, आंध्र प्रदेश की तीन राज्यसभा सीटों, बिहार में छह सीटों, छत्तीसगढ़ में एक सीट पर, गुजरात में चार सीटों, हरियाणा में एक सीट पर, हिमाचल प्रदेश में एक सीट पर, कर्नाटक में चार सीटों, मध्य प्रदेश में पांच सीटों, महाराष्ट्र में छह सीटों, तेलंगाना में तीन सीटों, उत्तर प्रदेश में 10 सीटों, उत्तराखंड में एक सीट पर, पश्चिम बंगाल में पांच सीटों, ओडिशा में तीन सीटों और राजस्थान में तीन सीटों पर चुनाव होने हैं।

जिन राज्यसभा सांसदों का कार्यकाल इस साल समाप्त हो रहा है, उनमें अश्विनी वैष्णव, शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव, स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया और पूर्व पीएम मनमोहन सिंह आदि का नाम शामिल है।

भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा का कार्यकाल भी इसी साल खत्म हो रहा है। जेपी नड्डा अपने गृह राज्य हिमाचल प्रदेश से राज्यसभा सांसद हैं। अब जेपी नड्डा को हिमाचल प्रदेश से अलग किसी अन्य राज्य से चुनाव लड़ना होगा क्योंकि वहां भाजपा आंकड़ों में कांग्रेस से पिछड़ गई है।

सोमालिया के लुटेरों ने अरब सागर में हाईजैक किया ईरानी जहाज, भारत ने युद्धपोत भेजकर छुड़ाया

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)। अरब सागर में एक बार फिर समुद्री लुटेरों ने एक जहाज को निशाना बनाया। भारतीय अधिकारियों के मुताबिक, कोच्चि से पश्चिम में करीब 700 नॉटिकल मील की दूरी पर ईरान के एक मछली पकड़ने वाले जहाज को सोमालियाई लुटेरों ने हाईजैक कर लिया। हालांकि, इस घटना के बाद भारतीय नौसेना ने अपने युद्धपोत को जहाज के रेस्क्यू में लगाया और इसे लुटेरों के कब्जे से छुड़ा लिया। अफसरों ने बताया कि ईरान के इस जहाज का नाम एमवी इमान है और इसमें 17 क्रू सदस्य सवार थे। भारतीय युद्धपोत आईएनएस सुमित्रा ने इसमें सवार लोगों को बचाने का अभियान शुरू किया। देखते ही देखते युद्धपोत में मौजूद ध्रुव चॉपर्स ने ईरानी जहाज को घेर लिया और इसे चेतावनी जारी कीं। इसके बाद सोमालियाई लुटेरों को हथियार फेंकने और सोमालिया की तरफ जाने को कहा गया। इसके बाद नौसेना ने जहाज में सवार सभी लोगों को सुरक्षित निकाल लिया।

सीजेआई ने वकील को सुप्रीम कोर्ट के तौर-तरीके समझाए

कहा-अदालत कोई रेलवे प्लेटफॉर्म नहीं कि किसी भी ट्रेन में चढ़ जाएं

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस (सीजेआई) डीवाई चंद्रचूड़ ने सोमवार को कोर्टरूम में गलत व्यवहार करने पर एक वकील की जमकर क्लास ली। सीजेआई ने कहा, ये कोई रेलवे प्लेटफॉर्म नहीं कि आप आएं और किसी भी ट्रेन में चढ़ जाएं। पहले किसी सीनियर से सीखें कि कोर्टरूम में किस तरह से व्यवहार किया जाता है।

दरअसल, अपनी बारी आने के पहले एक वकील अचानक से कोर्टरूम में खड़ा हो गया और बहस करने लगा। वकील ने कहा कि उसने न्यायिक सुधारों के लिए एक जनहित याचिका दायर की है। वह इस पर तत्काल सुनवाई चाहता है। मामला आज की सुनवाई वाली लिस्ट में नहीं है।

इस बात पर सीजेआई चंद्रचूड़ नाराज हो गए। उन्होंने वकील को फटकार लगाते हुए कहा, कोर्टरूम कोई रेलवे प्लेटफॉर्म नहीं है कि आप आएं और किसी भी ट्रेन में चढ़ जाएं। फटकार के बाद भी वकील अपनी बात पर अड़ा रहा। उसने कहा कि न्यायिक व्यवस्था के खिलाफ नहीं हैं, लेकिन इसमें सुधार चाहता है। सीजेआई ने वकील से पूछा कि वह कहां प्रैक्टिस करता है। वकील ने कहा कि वह हाईकोर्ट और लोअर कोर्ट में प्रैक्टिस करता है। इस पर सीजेआई ने कहा कि आप (वकील) किसी सीनियर एडवोकेट के साथ काम क्यों नहीं करते जो आपको कोर्टरूम के शिष्टाचार और तौर-तरीकों में बारे में सिखाए। 16 अक्टूबर 2023 को एक वकील के फोन पर बात करने से सीजेआई नाराज हो गए थे। उन्होंने वकील को टोकते हुए कहा, इधर आओ, यह कोई बाजार है? सीजेआई ने अपने स्टाफ को वकील का मोबाइल लेने को भी कह दिया। बाद में वकील ने माफी मांगी। चीफ जस्टिस चंद्रचूड़ ने वकील को चेतावनी देते हुए कहा कि अगली बार ध्यान रखना, दोबारा ऐसी गलती मत करना। मार्च 2023 में भी जस्टिस चंद्रचूड़ कथित तौर पर एक वरिष्ठ वकील विकास सिंह पर जोर से चिल्लाए थे। विकास सिंह सुप्रीम कोर्ट के वकीलों के लिए भूमि से संबंधित एक मामले को आगे बढ़ाने की बात कर रहे थे। तब सीजेआई ने नाराज होकर सिंह से बोला- चुप रहो, नहीं तो कोर्ट से बाहर हो जाओ। तुम हमें डरा नहीं सकते।

'गुजराती ठग वाला बयान वापस लेते हुए उचित बयान दाखिल करें'

तेजस्वी को सुप्रीम कोर्ट का निर्देश

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को राजद नेता तेजस्वी यादव को गुजराती ठग वाली टिप्पणी को वापस लेते हुए उचित बयान दाखिल को कहा है। दरअसल, तेजस्वी ने कहा था कि केवल गुजराती ही ठग हो सकते हैं। अब कोर्ट ने उन्हें इस टिप्पणी को वापस लेते हुए उचित बयान दाखिल करने का निर्देश दिया है।

न्यायमूर्ति एएस ओका और जस्टिस उज्ज्वल भुइयां की पीठ ने तेजस्वी यादव को नया बयान दाखिल करने के लिए एक सप्ताह का समय दिया। पहले हलफनामे पर शिकायतकर्ता ने आपत्ति दर्ज कराई थी। पीठ ने मामले की अगली सुनवाई पांच फरवरी के लिए तय की। इसके बाद तेजस्वी यादव ने 19 जनवरी को शीर्ष अदालत में एक हलफनामा दायर कर अपनी कथित गुजराती ठग वाली टिप्पणी वापस ले ली थी।

अजित पवार गुट के बागी विधायकों की अयोग्यता का मामला

सुप्रीम कोर्ट ने विधानसभा स्पीकर को फैसले के लिए 15 फरवरी तक का समय दिया

नई दिल्ली/मुंबई, 29 जनवरी (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर को एनसीपी के बागी विधायकों की अयोग्यता पर फैसला लेने के लिए 15 फरवरी तक समय बढ़ा दिया है। डिप्टी सीएम अजीत पवार के गुट से जुड़े एनसीपी विधायकों को अयोग्य ठहराने की मांग वाली शरद पवार गुट की तरफ से दाखिल की गई है।

राहुल नार्वेकर की तरफ से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कोर्ट में दलील दी कि अयोग्यता की याचिकाओं पर आदेश देने के लिए कुछ और समय लगेगा। चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ और जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की बेंच ने इन दलीलों को मान लिया। इससे पहले, कोर्ट ने इस फैसला करने के लिए स्पीकर को 31 जनवरी तक का समय दिया था।

एनसीपी विधायक जयंत पाटिल ने याचिका दायर की थी :

महाराष्ट्र विधानसभा में स्पीकर की ओर से विधायकों की अयोग्यता के मामले में एनसीपी विधायक जयंत पाटिल ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। याचिका में कहा गया था कि अब तक विधानसभा स्पीकर राहुल नार्वेकर ने संबंधित विधायकों को नोटिस देकर पूछताछ के लिए तलब भी नहीं किया है। उन्होंने कहा कि पिछले साल 2 जुलाई को विधायकों की अयोग्यता की अर्जी दी गई थी, जबकि रिमाइंडर और रिप्रेजेंटेशन पांच सितंबर और सात सितंबर को दिया गया था। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट से अपील की कि अजित पवार और उनके गुट के विधायकों के खिलाफ अयोग्यता याचिकाओं पर जल्द निर्णय लेने के लिए स्पीकर नार्वेकर को आदेश दें।

नारायण साईं को तगड़ा झटका, हाईकोर्ट ने जमानत देने से किया इनकार

अहमदाबाद, 29 जनवरी (एजेंसियां)। स्वयंभू संत आसाराम बापू के बेटे नारायण साईं की जमानत अर्जी खारिज करने का रुख अपनाते हुए उसे वापस ले लिया गया। हाईकोर्ट ने पर्याप्त दस्तावेज न होने के कारण जमानत देने से इनकार कर दिया है। नारायण ने अपने बीमार पिता की सेवा के लिए अंतरिम जमानत याचिका दायर की थी। हाईकोर्ट का कहना है कि इससे पहले उन्होंने झूठे दस्तावेज पेश किए थे। इस वजह से वो अपनी विश्वसनीयता खो चुके हैं, उनके द्वारा कोर्ट में पेश किए गए सभी दस्तावेजों का सत्यापन जरूरी है। नारायण साईं ने अपनी याचिका में कोर्ट से कहा है कि उसके माता और पिता बुजुर्ग हैं। वो उनकी इकलौती संतान है, उसके पिता आसाराम बहुत बीमार हैं और अस्पताल में भर्ती हैं। ऐसे में उसे जमानत दी जाए, ताकि वो अपने माता-पिता की देखभाल और सेवा कर सके।

मायावती को आरपीआई अध्यक्ष बनाने का ऑफर लेकर आए अठावले ने लखनऊ आकर कहा

आरपीआई और बीएसपी का एक होना जरूरी; यूपी में 20% दलित वोट बैंक

लखनऊ, 29 जनवरी (एजेंसियां)। बसपा प्रमुख मायावती को आरपीआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामदास अठावले ने पार्टी में शामिल होने का ऑफर दिया है। उन्होंने कहा, मायावती अगर आरपीआई में शामिल हो जाएं तो उनको पार्टी का अध्यक्ष बना देंगे। जिससे कि हम बाबा साहब की विचारधाराओं को लोगों तक पहुंचा सके। इसलिए आरपीआई और बसपा का एक साथ होना बहुत जरूरी है।

वहीं, नीतीश कुमार के एनडीए में शामिल होने पर कहा-उनको तो जाने-आने की आदत है। अठावले 1 दिन के दौरे पर लखनऊ पहुंचे हैं। सोमवार को उन्होंने वीवीआईपी गेस्ट हाउस में प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान उन्होंने कहा- 4 मार्च को आरपीआई यानी रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया रमाबाई अंबडेकर मैदान में विशाल जनसभा करेगी। मोदी सरकार में मंत्री अठावले ने कहा, "बसपा की जगह अब आरपीआई ले रही है। बाबा साहेब अंबेडकर के सिद्धांतों को आगे बढ़ाने के लिए आरपीआई और बसपा का एक साथ होना बहुत जरूरी है। इससे उनके सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाया जा सकता है। हमारी पार्टी केवल दलितों को ही नहीं सभी को साथ लाने की कोशिश कर रही है। इसमें हम सफल भी हो रहे हैं। सिर्फ मायावती नहीं, बल्कि बसपा के तमाम नेताओं से भी कहूंगा कि वह भी हमारी पार्टी में आएं।"

मुस्लिम नेता भी आरपीआई में आ सकते है

उन्होंने कहा, "हम चाहते हैं कि बहुत सारे मुस्लिम नेता जो बीजेपी में नहीं जाना चाहे वो आरपीआई में आ सकते हैं। इससे आरपीआई मजबूत होगी और बीजेपी को फायदा मिलेगा। देशभर में दलित पॉपुलेशन बहुत है। कांग्रेस और विपक्ष के लोग कहते हैं कि मोदी सरकार संविधान बदलेगी। लेकिन ऐसा नहीं है।"

इंडिया गठबंधन अब टूट रहा है

उन्होंने कहा, इंडिया गठबंधन मोदी जी को हराने आया है। मगर अब वह टूट रहा है। नीतीश कुमार एनडीए में आ गए। इससे इंडिया को बड़ा झटका पहुंचा है। ममता दीदी, पंजाब में भगवंत मान भी अकेले लड़ रहे हैं। ममता दीदी को हमारा निमंत्रण है। वो भी नीतीश की तरह हमारे साथ आएं।

20% दलित वोटर पर अठावले की निगाहें

यूपी में लोकसभा की 17 सीटें आरक्षित हैं। हालांकि, करीब 20% दलित वोट बैंक है। चुनावी विश्लेषक बताते हैं कि अठावले के जरिए भाजपा दलित वोट बैंक को अपने पाले में लाने की कोशिश कर रही है। अठावले खुद महाराष्ट्र के दलित नेता है। इसलिए, लोकसभा चुनाव से पहले वह यूपी दौरे में पहुंचे हैं। 2022 के विधानसभा चुनाव में बसपा को 11% वोट शेयर मिला था। जबकि 2017 के चुनाव में यह वोट प्रतिशत 22% था।

बेटी को लड़के के साथ देखा तो मार डाला

मैनपुरी, 29 जनवरी (एजेंसियां)। मैनपुरी में एक पिता ने पत्नी और बहन के साथ मिलकर 14 साल की बेटी की हत्या कर दी। पिता को बेटी पर शक रहता था। उसे बेटी के चाल-चलन सही नहीं लगते थे। इसके बाद उसने प्लान बनाकर बेटी की घर में ही हत्या कर दी। फिर उसके शव को एक सुनसान जगह पर फेंक आया।

इसमें उसका एक दोस्त और बेटी का मौसा भी शामिल था। इसके बाद उसने बेटी की हत्या का आरोप अपने ही दो रिश्तेदारों पर लगाया। लेकिन पुलिस जांच में वह पकड़ा गया। पुलिस ने 3 महीने बाद इस घटना का खुलासा करते हुए 5 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस को इन सब ने बहुत गुमराह किया, लेकिन फोन कॉल डिटेल ने सारे राज खोल दिए।

इजराइल में नौकरियों के लिए यूपी से 3,080 का चयन, अब देनी होगी कौशल परीक्षा

लखनऊ, 29 जनवरी (एजेंसियां)। इजराइल में नौकरियों के लिए लगभग 3,080 श्रमिकों का चयन किया गया है। भारत से इजराइल भेजे जाने वाले श्रमिकों का वॉक-इन रजिस्ट्रेशन लखनऊ के सरकारी आईटीआई में समाप्त हो गया है और अब 30 जनवरी तक कौशल परीक्षण आयोजित किया जाएगा।

एक अधिकारी ने रविवार देर रात कहा,"अब तक 3,080 श्रमिकों को इज़राइल में नौकरियों के लिए चुना गया है। निर्माण श्रमिकों की 10,000 रिक्तियां हैं और इसके लिए हजारों लोग आईटीआई कार्यालय में कतार में हैं।" सरकारी आईटीआई के प्रिंसिपल राज कुमार यादव ने कहा, केवल संस्थान द्वारा जारी हस्ताक्षर और मुहर के साथ आवेदन पत्र वाले और श्रम विभाग के साथ पंजीकृत उम्मीदवार ही कौशल परीक्षा में भाग ले सकेंगे, जो अब 30 जनवरी तक आयोजित की जाएगी। यादव ने कहा कि जो अभ्यर्थी श्रम विभाग में पंजीकृत नहीं हैं और उन्होंने आवेदन पत्र पर हस्ताक्षर कराने के लिए 28 जनवरी तक राजकीय आईटीआई अलीगंज, लखनऊ से संपर्क नहीं किया है, वे कौशल परीक्षा में शामिल नहीं हो सकेंगे, जहां अभ्यर्थियों की शटरिंग कार्य करने की क्षमता, टाइल्स और मार्बल फिटिंग व दीवार प्लास्टरिंग सहित अन्य का परीक्षण किया जा रहा है। उन्होंने कहा, लगभग 2,400 फॉर्म वितरित किए गए थे और केवल इतने ही उम्मीदवारों को 30 जनवरी तक कौशल परीक्षा में बैठने की अनुमति दी जाएगी। लगभग 4,200 उम्मीदवारों ने परीक्षा दी और अन्य 2,400 पिछले दो दिनों में उपस्थित होंगे।

उन्होंने कहा कि रविवार को हजारों अभ्यर्थी आईटीआई अलीगंज के गेट पर एकत्र हुए और हंगामा किया, क्योंकि यूपी और यहां तक कि बाहर से भी हजारों नौकरी चाहने वाले इज़राइल में निर्माण श्रमिकों की 10,000 रिक्तियों के लिए अपनी किस्मत आजमाने के लिए कौशल परीक्षण के लिए कतार में खड़े थे।इज़राइल की नौकरी की पेशकश के साथ 1,37,250 रुपये प्रति माह के वेतन के अलावा 15,000 रुपये का फंड बोनस जैसे आकर्षक लाभ भी शामिल हैं।

मछली मारने को लेकर दो पक्षों में मारपीट, 6 जख्मी

अरवल, 29 जनवरी (एजेंसियां)। अरवल के परासी थाना क्षेत्र अंतर्गत कमता आहार में मछली मारने को लेकर दो पक्षों में विवाद के बाद जमकर मारपीट की गई। इस घटना में आधा दर्जन से अधिक लोग घायल हो गए हैं। बताया जाता है कि कमता जलचर मत्स्य विभाग के अधीन है। जिसे विभाग के द्वारा प्रतिवर्ष संवैधानिक प्रक्रियाओं के तहत नीलामी की जाती है। इस दौरान भूषण चौधरी, सियाराम चौधरी एवं लवकुश चौधरी ने मत्स्य विभाग से इस जलचर को नीलामी प्रक्रिया के तहत लिया था और जलचर से मछली मार रहे थे। तभी कामता गांव का रहने वाला उमेश चंद्रवंशी, भगलू चौधरी, तथा सूरज नाथ महतो ने मछली मारने का विरोध किया। जिसके बाद दोनों पक्षों में तू-तू-मय हुआ और उसके बाद जमकर लाठियां चलने लगी। घटना के जानकारी दोनों पक्ष के लोगों को हुई जिसके बाद बड़ी संख्या में लोग लाठी डंडे लेकर कामता आहार पर पहुंच गए और मारपीट की घटना को अंजाम दिया। आसपास मौके पर मौजूद लोगों ने घटना की तस्वीर मोबाइल फोन में कैद कर लिया।

यूपी के धान किसानों को 10145 करोड़ से अधिक का भुगतान, प्रदेश सरकार ने किया दावा

लखनऊ, 29 जनवरी (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश में किसानों से धान खरीद जारी है। सीएम योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर निरंतर यह खरीद जारी है। विगत दिनों सीएम ने निर्देश दिया था कि जब तक एक भी किसान का धान शेष रहेगा, क्रय प्रक्रिया जारी रहेगी। क्रय केंद्रों पर उन्हें परेशानी न हो, मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप इस पर भी विशेष नजर है साथ ही किसानों को समय से भुगतान भी किया जा रहा है। अब तक सात लाख 37 हजार से अधिक किसानों से धान की खरीद हो चुकी है और इन्हें 10145 करोड़ से अधिक का भुगतान किया जा चुका है। सामान्य धान का समर्थन मूल्य 2183 रुपये व ग्रेड ए का समर्थन मूल्य 2203 रुपये प्रति कुंतल निर्धारित किया गया है।

सात लाख से अधिक किसान हुए लाभान्वित

योगी सरकार के निर्देश पर धान खरीद निरंतर जारी है। अब तक 5160 से अधिक क्रय केंद्रों से धान की खरीद की गई है। सोमवार तक 4962313.13 मीट्रिक टन से अधिक की धान खरीद हो चुकी है। इसमें 690480.74 मीट्रिक टन हाइब्रिड धान और कॉमन धान 4271832.38 मीट्रिक टन की खरीद हुई। यूपी के 7,37,629 किसान लाभान्वित हो चुके हैं। लक्ष्य के सापेक्ष 70.89 से अधिक धान क्रय किया जा चुका है। इस मद में किसानों को 10145.76 करोड़ रुपये का भुगतान हो गया है।

सीएम योगी ने रामलला के दर्शन किए

राम मंदिर में वीआईपी दर्शन को लेकर मीटिंग की; 31 दिन में 11 राज्य के आएंगे मुख्यमंत्री

अयोध्या, 29 जनवरी (एजेंसियां)। मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ ने राम मंदिर और हनुमानगढ़ी में सोमवार सुबह दर्शन किया। योगी राम मंदिर परिसर में वीआईपी दर्शन और लोगों की सुरक्षा पर नए सिरे से तैयार ब्लू प्रिंट पर चर्चा की। दरअसल, त्रिपुरा, असम, राजस्थान, गोवा समेत 11 राज्यों के मुख्यमंत्री और उनके साथ वहां की कैबिनेट रामलला के दर्शन करने के लिए अलग-अलग तारीखों में आ रहे हैं।

4 मार्च तक अयोध्या में वीआईपी मूवमेंट बढ़ गया है। ऐसे में ट्रैफिक और सुरक्षा समीक्षा को लेकर योगी खुद अयोध्या पहुंचे हैं। योगी 3 घंटे तक अयोध्या में रहने के बाद लखनऊ आ गए। उनके साथ स्पेशल डीजी प्रशांत कुमार, कमिश्नर गौरव दयाल, आईजी प्रवीण कुमार, डीएम नीतीश कुमार, एसपी राजकरण नायर, एसपी सुरक्षा पंकज पांडे मौजूद रहे। साथ में, मंदिर ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय, सदस्य डॉक्टर अनिल मिश्रा और ट्रस्ट से जुड़े पदाधिकारी मौजूद थे। राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के बाद ये दूसरा मौका है, जब सीएम योगी अयोध्या पहुंचे हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का विमान करीब 11.30 बजे महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरा। सभी अयोध्या दौरे की तरह इस बार भी सीएम ने सबसे पहले हनुमानगढ़ी में दर्शन पूजन किया। इसके बाद राम जन्मभूमि में रामलाल के दर्शन किए। उन्होंने राम मंदिर की परिक्रमा की। मुख्यमंत्री की ओर से तीर्थ यात्री सुविधा केंद्र का भी निरीक्षण किया गया। मुख्यमंत्री के ही निर्देश पर जिला प्रशासन के अधिकारियों ने ट्रस्ट से बातचीत कर इसे शुरू कराया है।

अब योगी आदित्यनाथ अफसरों के साथ राम मंदिर परिसर में एलएंडटी के सभाकक्ष बैठक की। जिसमें राम मंदिर, अयोध्या और राम लला के दर्शन को पहुंच रहे श्रद्धालुओं की सुरक्षा पर चर्चा हुई। आंकड़ों के मुताबिक, हर रोज करीब 2 लाख श्रद्धालु अयोध्या पहुंच रहे हैं। उनकी सुरक्षा और ट्रैफिक व्यवस्थाओं को लेकर नए सिरे से ब्लू प्रिंट तैयार किया जा रहा है। साथ ही, अयोध्या में 4 मार्च तक 11 राज्यों के मुख्यमंत्री अपनी कैबिनेट के साथ दर्शन करने पहुंच रहे हैं। योगी आदित्यनाथ खुद 1 फरवरी को अपनी कैबिनेट के साथ रामलला के दर्शन करने जा रहे हैं। उससे पहले 31 जनवरी को त्रिपुरा के मुख्यमंत्री फिर 2 फरवरी को उत्तराखंड के मुख्यमंत्री अपनी कैबिनेट के साथ पहुंच रहे हैं।

प्राण प्रतिष्ठा के बाद 18.75 लाख श्रद्धालुओं ने किए श्रीरामलला के दर्शन

अयोध्या, 29 जनवरी (एजेंसियां)। श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद अयोध्या में श्रद्धालुओं ने दर्शन की कतार टूटने नहीं दी है। प्राण प्रतिष्ठा से लेकर अब तक 18.75 लाख से अधिक रामभक्तों ने नव्य-भव्य मंदिर में दर्शन-पूजन कर किया है। वहीं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के दिशानिर्देश पर गठित उच्चस्तरीय कमेटी की देखरेख में श्रद्धालुओं को सुगमता के साथ दर्शन-पूजन की व्यवस्था उपलब्ध कराई जा रही है। प्राण प्रतिष्ठा के बाद पहले दिन यानी 23 जनवरी को मंदिर के पट भक्तों के लिए खुले तो लाखों की संख्या में श्रद्धालु उमड़ पड़े। रोजाना दो लाख से अधिक रामभक्त श्रीरामलला के दरबार में सुगमता पूर्वक पहुंचकर दर्शन-पूजन कर रहे हैं। प्रशासन की तरफ से मिली जानकारी के अनुसार अयोध्या नगर से लेकर मंदिर परिसर में दिनभर जय श्रीराम का जयघोष गूंज रहा है। देश-विदेश, विभिन्न राज्यों और उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों से रोजाना बड़ी संख्या में श्रद्धालु श्रीरामलला के दर्शन को पहुंच रहे हैं। रविवार को भी करीब 3.25 लाख श्रद्धालुओं ने श्रीरामलला के दर्शन किए। प्रशासन की तरफ जारी आंकड़ों के अनुसार राम-लला प्राण प्रतिष्ठा के बाद 23 जनवरी को- 5 लाख, 24 जनवरी को - 2.5 लाख, 25 जनवरी को - 2 लाख, 26 जनवरी को - 3.5 लाख, 27 जनवरी को - 2.5 लाख व 28 जनवरी - 3.25 लाख श्रद्धालुओं ने दर्शन किए।

नकाब हटाने बोली टीचर, तो छात्रा ने किया हमला

भागलपुर, 29 जनवरी (एजेंसियां)। भागलपुर के सबौर कॉलेज में सोमवार को पहचान के लिए नकाब हटाने की बात कहने पर छात्रा ने शिक्षिका पर हमला कर दिया। घटना के बाद कॉलेज परिसर में हंगामा मच गया। अर्थशास्त्र विभाग की शिक्षिका डॉ. श्वेता कुमारी छात्रा को लेकर सबौर थाने पहुंची। थाने में छात्रा ने डॉ. श्वेता से माफी मांगी और भविष्य में ऐसी गलती न करने को लेकर थाने में ही बॉन्ड पेपर भरा। घटना की जानकारी मिलते ही छात्रा के पिता भी थाने पहुंचे और उन्होंने ने भी शिक्षिका से मांफी मांगी। इसके बाद मामला शांत हो गया।

क्या है पूरा मामला : अर्थशास्त्र की शिक्षिका डॉ. श्वेता कुमारी ने बताया कि मैं स्टाफ रूम में बैठी हुई थी। एक बच्ची आई और उसने पूछा कि मैम, अर्थशास्त्र क्लास कहां हो रही है ? जब मैंने उससे पूछा कि किस फैकल्टी से हो ? वह नकाब में थी, तो मैंने पहचान के लिए नकाब हटाने को कहा। ताकि पता चल सके कि वह किस कॉलेज की छात्रा है। इसके बाद छात्तरा ने नकाब हटाने से यह कहते हुए मना कर दिया कि, नकाब हटाना मेरे धर्म के खिलाफ है। यहां कई लड़के भी हैं। ऐसे में मैंने कहा कि यहां धर्म की कोई बात नहीं है। यह कॉलेज है। यहां धर्म नहीं होता है। मैंने उसे स्टाफ रूम से बाहर जाने को कहा। वह मना करने लगी। इस दौरान उसने हमला कर। मेरे चेहरे पर उसके नाखुन से चोट भी लगी।

काशी विश्वनाथ में परिक्रमा करने से स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद को पुलिस ने रोका, भारी फोर्स तैनात

वाराणसी, 29 जनवरी (एजेंसियां)। शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती द्वारा काशी विश्वनाथ मंदिर (ज्ञानवापी) की परिक्रमा को लेकर विद्या मठ से मंदिर के गेट नंबर चार सहित सभी स्थानों पर पुलिस की भारी फोर्स तैनात है।परिक्रमा से पहले पुलिस व प्रशासन पूरी तरह अलर्ट मोड में है।

आश्रम के बाहर ही स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती को रोका गया है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि धारा 144 लागू है ऐसे में परिक्रमा की अनुमति नहीं है। इससे पहले परिक्रमा की सूचना पर एक्टिव हुई पुलिस ने एहतियातन केदार घाट स्थित विद्या मठ के बाहर भी फोर्स की तैनाती की। इस दौरान शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती के शिष्यों ने पुलिस अफसरों को बताया कि वह अभी अनुष्ठान में हैं। इसलिए मुलाकात नहीं हो पाएगी। ऐसे में पुलिस अफसरों और स्वामी की कोई बात नहीं हो पाई। इसके बाद पुलिस अविमुक्तेश्वरानंद को उनके आश्रम के पास ही रोकने की तैयारी में है। इस बीच सोनारपुरा, मदनपुरा, जंगमबाड़ी, गोदौलिया, बांसफटक होते हुए के वीएम के गेट नंबर 4 तक फोर्स की तैनाती बढ़ा दी गई है। बता दें कि शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद की ओर से सुबह ही घोषणा की गई कि सोमवार यानी आज दोपहर तीन बजे वह विश्वनाथ मंदिर (ज्ञानवापी) की परिक्रमा करेंगे। सुबह 7 बजे हुई बातचीत में पुलिस और प्रशासन की ओर से उन्हें कहा गया कि धारा 144 लागू है। इसके साथ ही पुलिस व प्रशासन परिक्रमा को लेकर सतर्क हो गई।

प्रेमिका के मां-भाई को बेदर्दी से मारा

बरेली, 29 जनवरी (एजेंसियां)। बरेली के इज्जतनगर थाना क्षेत्र में मां-बेटे की हत्या करने वाले टाइल्स मिस्त्री राशिद को जेल भेज दिया गया।

उसके पास से मिला हथौड़ा भी सील कर दिया गया। इसी हथौड़े से उसने मां-बेटे की हत्या की थी। आरोपी शादीशुदा है। उसका महिला की बेटी से प्रेम प्रसंग चल रहा था। उससे शादी करना चाहता था। पुलिस को पूछताछ में पता चला कि आरोपी ने वारदात से कुछ दिन पहले प्रेमिका से कहा था कि तेरे भाई को निपटा दूंगा। बारादरी इलाके के एक गांव की 44 वर्षीय महिला और उसका 20 साल का बेटा इज्जतनगर थाना क्षेत्र में बड़ा बाईपास के किनारे नर्सरी का संचालन करते थे।

सास की शिकयत लेकर थाने पहुंची बहू

झगड़े की अजीब वजह सुन पुलिस ने पकड़ लिया माथा

आगरा, 29 जनवरी (एजेंसियां)। आगरा के परिवार परामर्श केंद्र में अजीबो-गरीब का मामला सामने आया है. परिवार टूटने की वजह अनोखी है. सास-बहू में विवाद की वजह मेकअप बन गया. बहू ने आरोप लगाया है कि सास उसका मेकअप का सामान इस्तेमाल करती है, जिस वजह से विवाद होता है. मामला पुलिस तक पहुंचा तो पुलिस ने माथा पकड़ने को मजबूर हो गई.

दरअसल, मलपुरा क्षेत्र की रहने वाली दो बहनों की शादी फतेहाबाद के रहने वाले दो सगे भाइयों के साथ हुई थी. छोटा भाई जूता कारीगर है और बड़ा भाई टाइल्स लगाने का काम करता है. पहले छोटी बहन ने आरोप लगाया था उसका पति नशे का आदी है और रोज मारपीट करता है. अब बड़ी बहन ने सास पर मेकअप किट इस्तेमाल करने का आरोप लगा दिया. बहू ने आरोप लगाया है कि सास घर पर रहने पर भी उसके मेकअप का इस्तेमाल करती है. बड़ी बहू ने आरोप लगाया है कि उसकी सास उसका मेकअप का सामान, लिपिस्टिक, क्रीम, पाउडर का इस्तेमाल करती है. जब बहू को बाहर जाना होता है, उसका मेकअप नहीं होता. कई बार सास को बोला मेकअप का इस्तेमाल नहीं करे, लेकिन नहीं मानती.

गौड़ ने कहा, 'परिवार परामर्श केंद्र में अजीब तरह के मामले आते ही रहते हैं. बहुत से मामले सोच से परे होते हैं. यह केस बहुत ही अजीब था. दो सगे भाइयों की शादी दो सगी बहनों से हुई है. शादी को लेकर बहुत ज्यादा समय नहीं हुआ. 6-8 माह ही हुए हैं. बड़ी बहू का आरोप यह था कि जो भी मेकअप का सामान वह लाती है, उसकी सास उसे लगा लेती है. जब उसको किसी फंक्शन में जाना होता है तो सामान मिलता नहीं है. इस बात को लेकर सास-बहू में काफी झगड़ा हुआ. झगड़ा इतना बढ़ गया कि परिवार परामर्श केंद्र तक आ गया. हमने अपने स्तर पर दोनों को समझाने का प्रयास किया है और अगली तारीख दे दी है. अब देखते हैं कि क्या होता है.'

'ईवीएम से नहीं बैलेट पेपर से हो आगामी लोकसभा चुनाव'

मऊ, 29 जनवरी (एजेंसियां)। लोकसभा चुनाव को लेकर भले ही मतदान की तारिख का घोषणा नहीं हुआ है, लेकिन इसकी तैयारियों में हर राजनैतिक दल अपने अपने स्तर से रणनीति बनाने में जुटा हुआ है। इसी क्रम में सोमवार को सपा पदाधिकारियों का एक दल पार्टी के राष्ट्रीय सचिव तथा प्रवक्ता राजीव राय के नेतृत्व में कलेक्ट्रेट पहुंचा। जहां उन्होंने आगामी लोकसभा चुनाव में ईवीएम के जगह बैलेट पेपर से चुनाव कराने की मांग को लेकर पत्रक सौंपा। सपा प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व कर रहे राष्ट्रीय सचिव राजीव राय ने कहा कि हम आज आगामी लोकसभा चुनाव के मतदान को लेकर जिला प्रशासन से मिलकर पत्रक सौंपे है।

जिसमें आगामी चुनाव में ईवीएम का प्रयोग न कर उसके जगह बैलेट पेपर का प्रयोग कर मतदान कराने की मांग की है। बताया कि बैलेट पेपर से निष्पक्ष मतदान की प्रबल संभावना रहती है। इसलिए प्रशासन के माध्यम से यह बात रखने की कोशिश की गई है, ईवीएम को प्राथमिकता न देते हुए पूर्व की भांति बैलेट पेपर से मतदान कराया जाए। ज्ञापन सौंपने वालों में जिलाअध्यक्ष दूधनाथ यादव, मुहम्मदाबाद गोहना विधायक राजेंद्र कुमार, हाजी इरफान, पूर्व एमएलसी राम रतन राजभर, महिला जिलाध्यक्ष सितारा यादव, नीलम यादव सहित अन्य पदाधिकारी शामिल रहे।

'मेरी पत्नी से शिक्षक का था अफेयर, इसलिए मार डाला'

वकील के कबूलनामे से कहानी में आया नया ट्विस्ट

कानपुर, 29 जनवरी (एजेंसियां)। कानपुर के पनकी के पतरसा में शिक्षक दयाराम सोनकर की हत्या के आरोप में गिरफ्तार वकील संजीव कुमार के बयान ने पेंच फंसा दिया है। वकील ने जो बयान दिया, उसके मुताबिक शिक्षक के उसकी पत्नी से अवैध संबंध थे। चूंकि शिक्षक वर्तमान में कानपुर देहात में ही रह रहा था। इसके चलते पत्नी भी कानपुर देहात स्थित मायके में ही थी।

इसलिए उसने रविवार को दयाराम को बुलाकर अकेले ही बंद कमरे में जिंदा जलाकर मार डाला। वहीं, मृतक के भाई का कहना है कि भाभी के संबंध ढाबा संचालक से थे। विरोध करने पर भाभी ने प्रेमी और वकील के साथ मिलकर भाई की हत्या कर दी।

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

मेरा हैदराबाद

मंगलवार, 30 जनवरी, 2024 5

युविचार

दुनिया में कोई भी चीज कितनी भी कीमती क्यों ना हो
लेकिन नींद, आनंद और शांति से किमती कुछ भी नहीं।

मेडिकल कॉलेज के साथ नर्सिंग और पैरामेडिकल कॉलेज भी होना जरूरी : मुख्यमंत्री

हैदराबाद,29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। राज्य के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने कहा कि तेलंगाना में जहां भी मेडिकल कॉलेज है, वहां नर्सिंग और पैरामेडिकल कॉलेज भी होने चाहिए। अधिकारियों को कोडंगल में मेडिकल और नर्सिंग कॉलेजों की स्थापना की जांच करने का आदेश दिया गया । सीएम ने सचिवालय में स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा की। बीबीनगर एम्स में चिकित्सा सेवाएं पूर्ण रूप से उपलब्ध कराने के लिए कदम उठाने का सुझाव दिया गया है। यदि ऐसा किया जाता है, तो यह खम्मम, नलगोंडा और वारंगल जिलों के लोगों के लिए फायदेमंद होगा। उन्होंने कहा कि उस्मानिया और निम्स अस्पतालों पर भी बोझ कम हो जाएगा। इस संबंध में अधिकारियों को एम्स का दौरा कर रिपोर्ट सौंपने का निर्देश दिया गया है। उन्होंने खुलासा किया कि जरूरत पड़ने पर वह खुद भी केंद्रीय मंत्री को अपने साथ लेकर जानकारी देंगे।

अधिकारियों ने सीएम का ध्यान इस ओर दिलाया कि मंगलवार को हाईकोर्ट में उस्मानिया अस्पताल की जांच होनी है। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए उन्होंने साफ कर दिया कि वह हाईकोर्ट के आदेश का पालन करेंगे। सीएम ने संबंधित अधिकारियों को फार्मा कंपनियों को शिक्षण अस्पतालों में हाउसकीपिंग देने के मुद्दे पर गौर करने की सलाह दी।

मुख्यमंत्री अगले महीने खम्मम में मेगा फूड पार्क का शुभारंभ करेंगे

खम्मम, 29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। कृषि मंत्री तुम्मला नागेश्वर राव ने बताया है कि मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी अगले महीने खम्मम जिले के सत्थुपल्ली मंडल के बुग्गापाडु गांव में एक मेगा फूड पार्क का उद्घाटन करेंगे। मंत्री तुम्मला नागेश्वर राव, जिन्होंने सोमवार को बुग्गापाडु गांव में मेगा फूड पार्क का निरीक्षण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि फूड पार्क की स्थापना क्षेत्र में उगाई जाने वाली सभी फसलों को संग्रहीत करने के लिए की गई है और भविष्य में, प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना से फसलों की मांग बढ़ेगी। जिससे अंततः किसानों को लाभ होता है। उन्होंने कहा कि अन्य देशों से ताड़ के तेल के बीज लाने के बजाय, खम्मम जिले और तेलंगाना के अन्य स्थानों में प्रसंस्करण शुरू किया जाएगा। इस अवसर पर, उन्होंने अधिकारियों से कहा है। किसानों को समझाएं कि फूड पार्क स्थापित करने से कृषि क्षेत्र का क्या भला होगा। "तेल पाम किसानों के लिए एक उज्ज्वल भविष्य है। खम्मम जिले में किसानों द्वारा उगाई जाने वाली प्रत्येक फसल को बुग्गापाडु फूड पार्क के माध्यम से संसाधित किया जाना चाहिए। आने वाले दिनों में इस तरह की सुविधाएं पूरे राज्य में विस्तारित की जानी चाहिए।

कांग्रेस से कोई गठबंधन को तैयार नहीं : मुरलीधर राव

हैदराबाद,29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। बीजेपी नेता मुरलीधर राव ने राहुल की भारत जोड़ो न्याय यात्रा की आलोचना की। आज मीडिया से बात करते हुए उन्होंने कहा कि राहुल गांधी की फिल्म सिनेमाघरों में रिलीज के लिए तैयार नहीं है और होटल और वर्चुअल मीटिंग तक ही सीमित है। मुरलीधर राव ने कहा कि गठबंधन ने अब तक एक भी सार्वजनिक बैठक नहीं की है। इसके अलावा, वे किसी भी मुद्दे पर एकमत नहीं हो पाए हैं और ममता बनर्जी ने स्पष्ट कर दिया है कि कांग्रेस से कोई गठबंधन नहीं होगा। उन्होंने कहा कि वह कांग्रेस नेताओं को जवाब तक नहीं दे रही हैं।

मुरलीधर राव ने कहा कि दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में गठबंधन फेल हो गया। राहुल गांधी के नेतृत्व में कोई गठबंधन संभव नहीं है। उन्होंने कहा था कि सीटों के बंटवारे का ऐलान 1 जनवरी तक कर दिया जाएगा, जबकि अभी इस पर फैसला नहीं हुआ है। उन्होंने टिप्पणी की कि तेलंगाना के लोगों ने बीआरएस को खारिज कर दिया।

उन्होंने कहा कि बीजेपी ने तेलंगाना की जनता द्वारा दिए गए फैसले को स्वीकार किया है और सत्ता में आई कांग्रेस ने बीआरएस के भ्रष्टाचार की जांच में एक कदम भी आगे नहीं बढ़ाया है। उन्होंने कहा, कालेश्वरम, ओआरआर, धरणी घोटालों की जांच में कांग्रेस सरकार अब तक कोई कदम नहीं बढाया है। उन्होंने आरोप लगाया कि इस सरकार ने बीआरएस प्रमुख के साथ मिलीभगत की है। उन्होंने कहा कि अपमान और आलोचना तो नाटक है और बीआरएस के साथ जरूर कोई समझौता है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस बीआरएस को इस्तेमाल कर रही है। गुरुवार को सरपंचों की कार्यकाल सीमा खत्म हो जाएगी और इस सरकार ने चुनाव कराने के लिए कोई कदम नहीं उठाया है। उन्होंने कहा कि सरपंचों के बिल अभी भी बकाया हैं। उन्होंने बताया कि यदि ग्राम पंचायतें विशेष अधिकारियों द्वारा चलाई जाएंगी तो यह लोकतंत्र की हत्या के समान है। उन्होंने कहा कि चुनाव होने तक मौजूदा सरपंचों को पद पर बनाये रखना चाहिए।

सरकारी शिक्षकों के लिए सीएसए पर तीन दिवसीय टीओटी कार्यक्रम शुरू

हैदराबाद , 29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद सिटी पुलिस के तहत काम करने वाली भरोसा सोसाइटी फॉर प्रोटेक्शन ऑफ विमेन एंड चिल्ड्रन द्वारा सरकारी शिक्षकों के लिए सीएसए पर 3 दिवसीय टीओटी कार्यक्रम 29 जनवरी से सेंट्रल क्राइम स्टेशन, बशीरबाग में शुरू हुआ है। सीपी के. श्रीनिवास रेड्डी, हैदराबाद के नेतृत्व में, संयुक्त सी.पी. ए. वी. रंगनाथ और डीसीपी डब्ल्यूएसडब्ल्यू दारा कविता के कुशल मार्गदर्शन के साथ एक तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की जा रही है जिसमें प्रत्येक दिन सौ शिक्षक पास्को अधिनियम के बारे में जागरूकता और समझ हासिल करने के लिए प्रशिक्षण में भाग ले रहे हैं, साथ ही बच्चों को दुर्व्यवहार, सुरक्षित और असुरक्षित स्पर्श के बारे में समझने के लिए सशक्त बनाने के तरीकों से अवगत करा रहे हैं। , दुर्व्यवहार की रिपोर्ट कैसे और किसे करें। कार्यशाला का उद्देश्य शिक्षकों को जिम्मेदार नागरिक के रूप में बच्चे के प्रति सहानुभूति रखने और ऐसे मामलों की रिपोर्ट करने में सक्रिय पहल करने और कलंक को दूर करके बच्चों को न्याय दिलाने में मदद करने के लिए संवेदनशील बनाना है। शिक्षकों को साइबर ग्रूमिंग और ऑनलाइन सीएसए के बारे में जागरूक करने के लिए कक्षाएं भरोसा के मनोवैज्ञानिक परामर्शदाताओं, यूनिसेफ के डेविड राज जैसी प्रतिष्ठित हस्तियों सुश्री सीमा सिखरी,द्वारा संचालित की जा रही हैं ।एचसीएससी द्वारा सोशल मीडिया साइबर-अपराधों पर एक अलग सत्र भी आयोजित किया जा रहा है। सत्र के पहले दिन का उद्घाटन सीपी, हैदराबाद, कोत्ता कोटा श्रीनिवास रेड्डी के साथ संयुक्त सीपी, अपराध और एसआईटी, एवी रंगनाथ, आईपीएस ने किया। शिक्षकों ने इंटरैक्टिव सत्रों में सक्रिय रूप से भाग लिया है और पास्को अधिनियम से संबंधित सभी संदेहों को भरोसा टीम के सदस्यों द्वारा स्पष्ट किया गया है। उन्होंने इस तरह के इंटरैक्टिव सत्रआयोजित करने के लिए अपना आभार व्यक्त किया है और वे अपने संबंधित स्कूलों में भी ऐसे ही सत्र आयोजित करने के इच्छुक हैं। टीओटी कार्यक्रम के दौरान, अधिकारियों द्वारा "स्कूल में बाल यौन शोषण की सूचना/पता चलने पर अनुशंसित कार्रवाई" पर एक नया ट्राई-फ़ोल्डर जारी किया गया। इसके साथ ही, सीपी, हैदराबाद द्वारा "भरोसे तक कैसे पहुंचें" पर एक नया फ़्लायर भी जारी किया गया। शिक्षकों के साथ नियमित रूप से संवाद करने और संबंधित सामग्री साझा करने के लिए एक विशेष व्हाट्सएप ग्रुप बनाया गया था। सभी शिक्षकों ने हर तरह से बच्चों को सुरक्षित माहौल देने का संकल्प लिया।

सीईआईआर पोर्टल ने उल्लेखनीय सफलता हासिल की, तेलंगाना देश में अग्रणी

19 हजार खोए मोबाइल फोन को पता लगाने में दिया योगदान

हैदराबाद, 29 जनवरी(स्वतंत्र वार्ता)। मोबाइल चोरी और नकली उपकरणों से निपटने के उद्देश्य से दूरसंचार विभाग (डीओटी) की

एक महत्वपूर्ण पहल, सीईआईआर पोर्टल ने तेलंगाना में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। 1% मई, 2023 को राष्ट्रीय स्तर पर लॉन्च किया गया, पायलट राज्य के रूप में तेलंगाना के साथ, पोर्टल ने 19 अप्रैल, 2023 को अपना परिचालन शुरू किया। सुश्री शिखा गोयल, अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (अतिरिक्त डीजीपी), सीआईडी, तेलंगाना में सीईआईआर पोर्टल के लिए नोडल अधिकारी के रूप में कार्य कर रही हैं। आंतरिक सीआईडी टीम लावण्या, एनजेपी एसपी एडीजीपी, सीआईडी के अनुकरणीय नेतृत्व में सीआईडी प्रभावी निगरानी सुनिश्चित कर रही है। लॉन्च के बाद से कम समय के भीतर 19 हजार से अधिक खोए या लापता मोबाइल फोन का सफलतापूर्वक पता लगाने में योगदान दिया है। सीईआईआर एप्लिकेशन को लागू करने में तेलंगाना राज्य देश में शीर्ष प्रदर्शनकर्ता के रूप में उभरा है। पर्याप्त प्रयासों की स्वीकृति में। इस विशिष्टता को प्राप्त करने के लिए तेलंगाना पुलिस द्वारा प्रयास किया गया। दूरसंचार विभाग (डीओटी) के अधिकारियों ने लावण्या एनजेपी. एसपी. सीआईडी, टी.एस. हैदराबाद, चौ. सुरेश बाबू, पुलिस निरीक्षक, पी. संजीव राव, एएसआई, जी अनुराधा, टी.एस. सीईआईआर के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए "प्रशंसा प्रमाणपत्र" प्रस्तुत दिया है। इह उपलब्धियों के आलोक में वाई. श्रीनिवास राव सहित दूरसंचार विभाग (डीओटी) के अधिकारी उप महानिदेशक (सुरक्षा) योगेन्द्र कुमार बनसोडे आईटीसी महानिदेशक (सुरक्षा), के. लक्ष्मण कुमार सहायक निदेशक (सुरक्षा लेखापरीक्षा) की आज अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (एडीजीपी), सीआईडी (नोडल अधिकारी) के साथ बैठक हुई। बैठक के दौरान, उन्होंने राज्य में केंद्रीय उपकरण पहचान रजिस्टर (सीईआईआर) के कार्यान्वयन पद्धति पर चर्चा की। उन्होंने फीडबैक और सुझावों का आदान-प्रदान किया। जिसमें शिखा गोयल एडीजीपी, सीआईडी ने बैकएंड डेटा विश्लेषण के माध्यम से तेलंगाना राज्य में सेल फोन चोरी में संगठित अपराध का पता लगाने की आवश्यकता पर जोर दिया है, जिसके लिए उन्होंने डीडीजी (सुरक्षा) डीओटी का समर्थन मांगा है।

सभी प्रकार के प्रशिक्षणों को दो सप्ताह के अंदर पूरा करने का निर्देश

सीईओ ने डीएलएमटी के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित किया

हैदराबाद, 29, जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी विकास राज ने सभी मास्टर ट्रेनरों को आगामी संसदीय चुनाव के संबंध में पीओ एवं एपीओ को छोड़कर सभी प्रकार का प्रशिक्षण दो सप्ताह के अंदर पूरा करने का निर्देश दिया। सीईओ ने आज अपने कार्यालय में डीएलएमटी के लिए आयोजित एक प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सलाह दी कि विधानसभा चुनावों के संचालन में अर्जित हाल के अनुभव का उपयोग अपनी सर्वोत्तम क्षमताओं के साथ संसद चुनाव कराने के लिए करें और यह सुनिश्चित करें कि इसे त्रुटि मुक्त आयोजित किया जाना चाहिए। उन्होंने विशेष कोचिंग को शामिल करने के लिए डेटा प्रविष्टि, स्ट्रांग रूम से ईवीएम और वीवीपैट की आवाजाही और बाद में मतदान के बाद उन्हें फिर से उचित स्थान पर सुरक्षित रूप से रखना, एमसीसी रिपोर्टिंग, वेबकास्टिंग आदि जैसे कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर जोर दिया। उन्होंने उन्हें अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को उनके सभी कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के लिए

निचले स्तर पर तैयार करने के लिए आगाह किया क्योंकि जमीनी स्तर के कर्मचारी ही चुनाव कराने की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सत्र को सूचित करते हुए कि सभी आवश्यक सूचना सामग्री और दिशानिर्देश प्रिंट प्रारूप में प्रसारित किए गए हैं और उन्होंने चुनाव के अंत तक सभी स्तरों पर सभी व्यक्तियों को आवश्यकता पड़ने पर अपनी ओर से अधिक मार्गदर्शन का आश्वासन दिया। उन्होंने मतदान को सुचारु एवं सही ढंग से संपन्न कराने के लिए हर कार्य को तय समय-सीमा में पूरा करने का आदेश दिया. आज के सत्र में अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी और संयुक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने भी भाग लिया और मास्टर प्रशिक्षकों को अपने दिशानिर्देश दिये। प्रारंभ में अब्दुल हमीद, उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी और हरि सिंह, उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने प्रशिक्षकों को स्वतंत्र और निष्पक्ष तरीके से राज्यव्यापी चुनावों जैसे बड़े आयोजन से पहले शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार होने के महत्व और भूमिका के बारे में बताया। ऐसे विशाल कार्य को पूरा करने में प्रशिक्षु। एचएम कृष्ण कुमार ने मतदान दल की भूमिका, मतदान दिवस की व्यवस्था और मतदान केंद्र के रख-रखाव के बारे में बताया। जबकि साई राम, आरडीओ ने एमसीसी, एमसीएमसी, पेड न्यूज, ई-रोल आदि पर सत्र को विस्तार से बताया, वेंकट रेड्डी आरडीओ ने जिला चुनाव प्रबंधन योजना और भेद्यता मानचित्रण पर व्याख्यान प्रस्तुत किया, एन वेंकट ने व्यय निगरानी पर, राजेश्वर आरडीओ ने व्याख्यान दिया। प्रशिक्षु ईवीएम, वीवीपीएटी, गिनती, परिणाम की घोषणा, डाक मतपत्र/ईटीपीबी आदि को समझते हैं। विनय कुमार, एनटी ने सत्र को चुनाव के संचालन से संबंधित कानूनी प्रावधानों को समझाया।

दक्षिण मध्य रेलवे

हमें @GSCRailwayIndia पर फॉलो करें. द.म. रेलवे की विविध सूचनाओं के विवरणों को हमारी वेबसाइट : www.scr.indianrailways.gov.in पर देखा जा सकता है

ई-निविदा आमंत्रण सूचना (http://ireps.gov.in के माध्यम से) PUB/0086

भारत के राष्ट्रपति की ओर से, मुख्य बिजली अभियंता(निर्माण), दक्षिण मध्य रेलवे, सिकंदराबाद द्वारा निम्न कार्यों हेतु निविदा की एकल पैकेट प्रणाली (सिंगल पैकेट सिस्टम आफ टेन्डरिन्ग) में ई-निविदा आमंत्रित है।

क्रम सं.:1. निविदा आमंत्रण सूचना सं.: इ(जीएस) /सीएन/2023-2024, दि.29-01-2024, कार्य विवरण: निविदा सं. : 15-2023-24-इ-सीएन-जीएस, केजेडजे-बीपीक्यू 3री लाइन के निर्माण के लिए, मन्दमरी-बल्हारशाह सेक्शन के बीच मौजूदा पावर लाइन क्रासिन्ग्स(11केवी एंड 33केवी) का स्थानान्तरण/संशोधन कार्य।
विवरण: अनुमानित मूल्य: रू.3,52,99,526.00/-, पूर्व धरोहर राशि: रू.3,26,500.00/-, दस्तावेज मूल्य: शून्य, पूरा करने की अवधि: 06(महिने), बंद करने की तिथि: 19-02-2024 के 15.00 बजे

बोली दस्तावेज तथा अन्य विवरण हेतु कृपया वेबसाइट:http://ireps.gov.in
पूर्व धरोहर राशि तथा निविदा दस्तावेज मूल्य का भुगतान केवल नेट बैन्किन्ग/आयआरइपीएस में आनलाईन पर उपलब्ध पेमेन्ट गेटवे सुविधाओं के माध्यम से ही करना चाहिए।
निविदादातागण, अपने आफर्स को, आनलाईन रूप में, निविदा प्रस्तुति अवधि के दौरान, अर्थात निविदा बंद करने की तिथि से पंद्रह दिन पहले, प्रस्तुत कर सकते हैं।
निविदादातागण, किसी भी शुध्दिपत्रों(केवल आनलाईन पर जारी) को, निविदा प्रस्तुति अवधि के प्रारंभ की तिथि तक, अवलोकन कर सकते हैं।
उप मुख्य बिजली अभियंता,(निर्माण), सिकन्दराबाद

ई-निविदा सूचना सं. : जीएनटी/इ.02/टीआरडी/2023-24 दि.:24-01-2024 PUB/0087

अधोहस्ताक्षरी द्वारा निम्न कार्यो हेतु ठेकेदारों से दि.19-02-2024 के 15.30 बजे तक ई-निविदाएं आमंत्रित हैं।

क्रम सं.-01. निविदा शीर्षक: 3 डिग्री से 2 डिग्री तक बंडारुपल्ले-सीरीपुरम के बीच किमी 14/6-15/1 पर मोड सं.(कर्व नं.):6 के प्रति समतल करने का कार्य तथा पीएसआर 90केएमपीएच के रध्दीकरण(कैन्सलेशन) के लिए, 3 डिग्री से 1.8 डिग्री तक, पेरेचेर्ला-फिरन्गीपुरम डाउन लाइन के बीच, किमी 11/40/-12/18 पर नं.5 डीएन का तत्संबंधित कार्य-ओएचइ का संशोधन व्यवस्थाएं-- ओएचइ का संशोधन
निविदा संदर्भ सं. :जीएनटी/इ.02/टीआरडी/2023-24, दि.24-01-2024, अनुमानित मूल्य: रू.%5,49,612.63/-, पूधरा: रू.1,51,000/-,निविदा प्रपत्र मूल्य(अप्रतिदेय):रू.शून्य

.ई-बोलियों की आनलाइन प्रस्तुति की अंतिम तिथि व समय: 19-02-2024 के 15.30 बजे तक

वरिष्ठ मंडल बिजली अभियन्ता, ट्रैक्शन, गुन्टूर A0103

निविदा शर्तों/ तत्संबंधित अधिक जानकारी तथा निविदा दस्तावेजों की डाउनलोडिंग हेतु कृपया वेबसाइट्स: https://www.ireps.gov.in या www.scr.indianrailways.gov.in देखें।

श्री खेतेश्वर भगवान का वार्षिकोत्सव 11 को

हैदराबाद,29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)।श्री राजपुरोहित समाज बन्धुओं के सानिध्य में भाग्यनगर की पावन धन्य धरा पर श्री खेतेश्वर भगवान की मूर्ति स्थापना का आंठवां दो दिवसीय वार्षिकोत्सव 10 व 11 फरवरी पूजा-अर्चना, शोभा-यात्रा व भव्य जागरण कार्यक्रम किया जाएगा।

बीबीसी बाबुसिंह मायलावास ने बताया कि हर वर्ष की भांति समाज बन्धुओं के सानिध्य में आंठवां वार्षिकोत्सव मंदिर को विशेष फुलों व लाईटिंग से सजाकर, श्री खेतेश्वर भगवान की मूर्ति पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलितकर कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। शनिवार 10 फरवरी रात्रि 8 बजे से जागरण आयोजित किया जाएगा। जिसमें सुरेन्द्र पंवार व संजु राव जोधपुर वी.वी.फक्शन हॉल जामबाग में श्री खेतेश्वर भगवान के चरणों में भजनों के पुष्प अर्पित करेंगे। रविवार 11 फरवरी प्रात: 8 बजे भव्य शोभा यात्रा विठ्ठोभा मंदिर उस्मानशाही से श्री खेतेश्वर भवन तक निकाली जायेगी। कार्यक्रम में वार्षिकोत्सव लाभार्थी परिवारों का विशेष सम्मान किया जाएगा।

मुशीराबाद में घरों में तोड़फोड़, तनावपूर्ण माहौल

हैदराबाद,29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद के मुशीराबाद में जीएचएमसी अधिकारियों द्वारा मकान गिराए जाने के बाद इलाके में तनावपूर्ण माहौल हो गया। गांधीनगर मंडल के स्वामी विवेकानन्द नगर में कुछ दलित लगभग 70 वर्षों से छोटे-छोटे मकान बनाकर रह रहे हैं। सोमवार सुबह एमएमएआरओ और अधिकारी अपने अमले के साथ मकान तोड़ने पहुंचे तो उन्होंने कड़ी आपत्ति जताई। हालांकि मामला कोर्ट में लंबित है, लेकिन राजस्व अधिकारियों पर पुलिस की मौजूदगी के बीच जबरन मकान तोड़ने का आरोप है।

धरणी जांच समिति के अध्यक्ष कोदंडा रेड्डी ने पीड़ितों का समर्थन किया। मौके पर पहुंचे विधायक मुथा गोपाल को पुलिस ने रोका। पार्षद सुप्रिया के पति नवीन और बीजेपी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। न्याय की मांग करते हुए कुछ पीड़ितों ने अपने ऊपर पेट्रोल डालकर आत्महत्या करने की कोशिश की तो उन्हें हिरासत में लिया गया। भारी पुलिस मौजूदगी के बीच मकानों को ढहाने की कार्रवाई जारी रहने से इलाके में तनावपूर्ण माहौल हो गया।

चाकू लेकर घूमने वाले को दो दिन की कैद

हैदराबाद, 29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। संदिग्ध रूप से चाकू लेकर घूम रहे व्यक्ति को अदालत ने दो दिन की कैद की सज़ा सुनाई। मीर चौक इंस्पेक्टर आर. रविंदर के विवरण के अनुसार 29 जनवरी को एएसआई शिव रामुलु अपने कर्मचारियों के साथ नूरखान बाजार में गश्त कर रहे थे तभी एक व्यक्ति पुलिस को देखकर संदिग्ध रूप से भाग रहा था। कोई जवाब नहीं देने पर मामला दर्ज कर अदालत में पेश किया गया, नामपल्ली 6वें विशेष मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट ने मामले की जांच के बाद आरोपी को दो दिन की कैद की सजा सुनाई।

लेफ्टिनेंट जनरल ने अत्याधुनिक शवगृह का उद्घाटन किया

हैदराबाद, 29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। स्वर्ग वाटिका को एक दशक पहले हरित पहल के साथ अंतिम विश्राम स्थलों को फिर से परिभाषित किया था। अपरिहार्य परिस्थितियों के दौरान विस्तारित शव भंडारण के लिए समुदाय की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए चार शवों को संग्रहित करने में सक्षम एक शवगृह समर्पित किया। आज स्वर्ग वाटिका में इस सुविधा का औपचारिक उद्घाटन लेफ्टिनेंट जनरल जेएस सिदाना, कमांडेंट, एमसीईएमई द्वारा किया गया। स्वर्ग वाटिका, तेलंगाना सरकार और स्वर्ग वाटिका ट्रस्ट के बीच एक अग्रणी सहयोग, ने दिवंगत आत्माओं के प्रति प्रेम, करुणा और श्रद्धा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के साथ अंतिम विश्राम स्थलों की अवधारणा को बदल दिया है।

आरटीसी कॉलोनी, तिरुमलगिरी में रणनीतिक रूप से स्थित पर्यावरण-अनुकूल श्मशान घाट, पर्यावरण के प्रति जागरूक प्रथाओं को अपनाते हुए शोक संतप्त परिवारों को सांत्वना प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। स्वर्ग वाटिका के संस्थापक ट्रस्टी और अध्यक्ष सुरेंद्र पाल सिंह ने आगामी पहलों का खुलासा किया, जिसमें तीन और मैनुअल चिताओं का निर्माण शामिल है, जिनमें से एक महा-प्रस्थानम में मौजूदा चिता के समान बड़ी होगी। इसके अतिरिक्त, ईसीजी, रक्त परीक्षण, मूत्र परीक्षण, सीबीसी, एचबीए1सी और चेस्ट एक्स-रे जैसे लागत प्रभावी स्वास्थ्य परीक्षण की पेशकश करने वाले एनी-टाइम क्लिनिक (एटीसी) को लॉन्च करने की योजना पर काम चल रहा है, जो बाजार मूल्य का केवल 10-20 प्रतिशत चार्ज करेगा। शवगृह स्थापित करने की कुल लागत, लगभग 20 लाख, उपकरण और सिविल निर्माण के लिए ट्रस्टी राम गोयल, जनरेटर बैकअप के लिए ट्रस्टी जे सी जोधानी और सीसीटीवी के लिए ट्रस्टी जयंत जैन के उदार दान से कवर की गई है। हरित होने और पर्यावरण-अनुकूल होने के प्राथमिक लक्ष्य के साथ कल्पना की गई, स्वर्ग वाटिका, हरित स्वर्ग में पर्यावरण-अनुकूल प्रक्रियाओं, प्रथाओं, स्वच्छता, पर्याप्त पार्किंग स्थान और आध्यात्मिक वैदिक प्रथाओं के पालन ने स्वर्ग वाटिका की प्रतिष्ठा को पर्यावरण के प्रति जागरूक प्रबंधक के रूप में मजबूत किया है।

स्वर्ग वाटिका ने दाह संस्कार के लिए गोकाष्ठ (गोमय से बनी लकड़ी- देसी नस्ल की गाय/बैल का गोबर) को अपनाकर एक पर्यावरणीय उपलब्धि हासिल की। यह पर्यावरण-अनुकूल विधि पारंपरिक लकड़ी की तुलना में बेहतर जलने की क्षमता वाले गोबर लॉग का उपयोग करती है, जो एक लागत प्रभावी समाधान पेश करती है जो मवेशियों के चारे का समर्थन करती है। स्वर्ग वाटिका में हाल के कुछ नवाचारों में आधुनिक एलपीजी और गैसीफाइड भट्टियां और प्राकृतिक खंभों के लिए कच्चा लोहा इस्पात संरचना शामिल है, जिसके परिणामस्वरूप लकड़ी के उपयोग में 25 प्रतिशत की कमी आई है और इसकी पर्यावरण-अनुकूल प्रतिबद्धता मजबूत हुई है। सुविधा ने दो नए एसी शव वाहन का संचालन किया है और एक महीने तक राख को संरक्षित करने के लिए लॉकर के साथ बॉडी फ्रीजर बक्से की पेशकश की है। विशेष रूप से, यह दाह संस्कार के लिए गोकाष्ठ को अपनाकर सौ प्रतिशत हरित प्रथाओं में परिवर्तित हो गया है। स्वर्ग वाटिका ने नेत्र दान के लिए एलवी प्रसाद नेत्र अस्पताल के साथ सहयोग किया है, जो दाताओं के लिए मुफ्त दाह संस्कार की पेशकश करता है। यह सुविधा लावारिस शवों का मुफ्त दाह संस्कार भी प्रदान करती है और बीपीएल परिवारों को 50 फीसदी की छूट भी देती है। अंतिम संस्कार समारोहों के लिए पूजा हॉल उपलब्ध हैं।

स्वतंत्र वार्ता

मंगलवार, 30 जनवरी - 2024

बिहार में सियासी उलटफेर

कभी बसपा के संस्थापक कांसीराम ने कहा था कि उन्हें मजबूत नहीं मजबूर यानी गठबंधन की सरकार चाहिए ताकि उससे मनमर्जी का काम कराया जा सके। आज बिहार की राजनीतिक दशा और दिशा देख कर कहा जा सकता है कि गठबंधन की सरकार चलाना तनी हुई रस्सी पर चलने जैसा ही है। गठबंधन की सरकार चलाने में कई बार सिद्धांतों से समझौता करना ही पड़ता है। लेकिन बिहार की तो बात ही निराली है। वहां जिस तरह का सियासी उलट-फेर हुआ है, वह विचित्र किन्तु सत्य है। नीतीश कुमार ने एक बार फिर राष्ट्रीय जनता दल को गरियाते हुए उससे नाता तोड़ कर भाजपा को गले लगाया है। वे फिर उसी भाजपा के साथ सरकार चलाने लगे हैं जिसे सत्रह महीने पहले झटक कर राजद व कांग्रेस के साथ हाथ मिला कर सरकार बनाया था। फिर से लौट कर भाजपा के साथ आए नीतीश कुमार ने कहा है कि राजद गठबंधन काम में रोडा अटका रहा था, इसलिए उससे नाता तोड कर फिर से घर वापसी की है। यह वही नीतीश कुमार हैं जिन्होंने राजद के साथ सरकार बनाते समय कहा था कि भाजपा के साथ जाना उनके जीवन की सबसे बड़ी भूल थी। तब उन्होंने यह संकल्प भी दोहराया था कि चाहे उनकी जान चली जाए, पर वे भाजपा के साथ नहीं जाएंगे। मगर सत्रह महीने बाद फिर लौट के नीतीश भाजपा में आ गए हैं। अब उनके साथ भाजपा के दो दिग्गज नेता सम्राट चौधरी एवं विजय चौधरी डिप्टी सीएम के रूप में उन्हें सहयोग करेंगे। देखा जाए तो राजनीतिक गठबंधन में मतभेद कोई नई बात नहीं, लेकिन राजद के साथ उनके क्या ऐसे मतभेद थे, जिसकी वजह से उन्होंने उससे अलग होने का फैसला किया, यह अब भी रहस्य बना हुआ है। देखने में तो यही आ रहा था कि राजद के साथ उनकी पार्टी के संबंध बिल्कुल सहज और सामान्य हैं। लेकिन अचानक नीतीश कुमार के पाला बदलने से भाजपा को जबर्दस्त फायदा हुआ है। आम चुनाव के लिए बिहार में भाजपा के लिए जो कठिन चुनौती मानी जा रही थी, अब वह आसान दिखाई देने लगी है। इसके साथ ही गठबंधन 'इंडिया' से भाजपा को मिल रही चुनौती भी लगभग समाप्त हो गई लगती है। जाहिर है यह गठबंधन नीतीश कुमार की अगुवाई में ही बना था, जो आगामी लोकसभा चुनाव में भाजपा को कडी टक्कर दे सकता है। नीतीश कुमार के भाजपा से हाथ मिला लेने के बाद वह गठबंधन काफी हद तक कमजोर माना जाने लगा है। ममता बनर्जी और आम आदमी पार्टी सीट बंटवारे को लेकर पहले से तलवार भांजते दिख रहे हैं। ऐसे में नीतीश का भाजपा से हाथ मिला लेना उसकी बडी कामयाबी मानी जा रही है। नीतीश कुमार के पाला बदलने की अटकलें कई दिनों से लगाई जा रही थीं, मगर राजद के साथ उनके मनमुटाव की वजहें स्पष्ट नहीं थीं। नीतीश कुमार ने इतना भर कहा है कि उनके लोग दिन-रात मेहनत करके काम कर रहे थे और श्रेय दूसरे लोग ले जा रहे थे, इसलिए उनकी पार्टी में इसे लेकर नाराजगी थी। मगर भाजपा के साथ उन्हें अब कोई मुश्किल नहीं आएगी, इसका दावा वे शायद ही कर पाएं, क्योंकि उससे अलग होते समय भी नीतीश कुमार ने यही तर्क दिया था। राजद के साथ मिल कर सरकार बनाने के बाद नीतीश कुमार ने निस्संदेह कई महत्त्वपूर्ण काम किए, जिसकी पूरे देश में सराहना हुई। उन्होंने जाति जनगणना कराया, खाली पदों पर त्वरित ढंग से लाखों लोगों की भर्तियां कराईं। इस तरह नीतीश कुमार सरकार पर वहां के लोगों में भरोसा मजबूत हुआ था। मगर अब उनके ताजा फैसले ने युवाओं को निराश किया है। भाजपा के साथ मिल कर वे सरकार तो चला लेंगे, मगर प्रदेश के लोगों का भरोसा कितना जीत पाएंगे, यह देखने की बात होगी। पिछले विधानसभा चुनाव में जब वे भाजपा के साथ मिल कर लडे थे तो उनकी पार्टी को खासा नुकसान उठाना पड़ा था। अब जब आम चुनाव नजदीक है, भाजपा के साथ जाकर वे उस नुकसान की कितनी भरपाई कर पाएंगे, कहना मुश्किल है। भाजपा से अलग होकर उन्होंने राजद का हाथ पकड़ा था, तो उनकी काफी सराहना हुई थी। अब उनकी साख इस बात पर निर्भर करेगी कि नई गठबंधन सरकार में वे कितने जन कल्याणकारी फैसले कर लोगों का दिल जीत पाने में सफल होते हैं।

स्वतंत्रता संग्राम के आदर्श नायक महात्मा गांधी

योगेश कुमार गोयल

2 अक्तूबर 1869 को पोरबंदर में जन्मे महात्मा गांधी जीवन पर्यन्त देशवासियों के लिए आदर्श नायक बने रहे। देश के स्वतंत्रता संग्राम में उनके अविस्मरणीय योगदान से पूरी दुनिया सुपरिचित है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नायकों में से एक महात्मा गांधी की आज 76वीं पुण्यतिथि है, जिनकी 30 जनवरी 1948 को गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। अहिंसा की राह पर चलते हुए भारत को ब्रिटिश गुलामी से मुक्ति दिलाने वाले गांधी जी ने पूरी दुनिया को अपने विचारों से प्रभावित किया था। अपने अनुभवों के आधार पर उन्होंने कई किताबें लिखी, जो हमें आज भी जीवन की नई राह दिखाती हैं क्योंकि उनके ये अनुभव, उनके विचार आज भी उतने ही सार्थक हैं, जितने उस दौर में थे। सही मायनों में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी देश के करोड़ों युवाओं के पथ प्रदर्शक हैं। उनके जीवन के तीन महत्वपूर्ण सूत्र थे, जिनमें पहला था सामाजिक गंदगी दूर करने के लिए झाड़ू का सहारा। दूसरा, जाति-पाति और धर्म के बंधन से ऊपर उठकर सामूहिक प्रार्थना को बल देना। तीसरा, चरखा, जो आगे चलकर आत्मनिर्भरता और एकता का प्रतीक माना गया। गांधी जी प्रायः कहा करते थे कि प्रसन्नता ही एकमात्र ऐसा इत्र है, जिसे आप दूसरों पर डालते हैं तो उसकी कुछ बूंदें आप पर भी गिरती हैं। वे कहते थे कि किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कपड़ों से नहीं, उसके चरित्र से होती है। दूसरों की तरक्की में बाधा बनने वालों और नकारात्मक सोच वालों में सकारात्मकता का बीजारोपण करने के उद्देश्य से ही उन्होंने कहा था कि आंख के बदले आंख पूरी दुनिया को ही अंधा बना देगी। लोगों को समय की महत्ता और समय के सही सदुपयोग के लिए प्रेरित करते हुए उन्होंने कहा था कि जो व्यक्ति समय को बचाते हैं, वे धन को भी बचाते हैं और इस प्रकार बचाया गया धन भी कमाए गए धन के समान ही महत्वपूर्ण है। वह कहते थे कि आप जो कुछ भी कार्य करते हैं, वह भले ही कम महत्वपूर्ण हो सकता है किन्तु सबसे महत्वपूर्ण यही है कि आप कुछ करें। लोगों को जीवन में हर दिन, हर पल कुछ न कुछ नया सीखने के लिए प्रेरित करते हुए गांधी जी कहा करते थे कि आप ऐसे जिएं, जैसे आपको कल मरना है लेकिन सीखें ऐसे कि आपको हमेशा जीवित रहना है। उनकी बातों का देशवासियों के दिलोदिमाग पर गहरा असर होता था। महात्मा गांधी के विचारों में ऐसी शक्ति थी कि विरोधी भी उनकी तारीफ किए बगैर नहीं रह सकते थे। ऐसे कई किस्से भी सामने आते हैं, जिससे उनकी ईमानदारी, स्पष्टवादिता, सत्यनिष्ठा और शिष्टता की स्पष्ट झलक मिलती है।

एक बार महात्मा गांधी सरोजिनी नायडू के साथ बैडमिंटन खेल रहे थे। सरोजिनी नायडू के दाएं हाथ में चोट लगी थी। यह देखकर गांधी जी ने भी अपने बाएं हाथ में ही रैकेट पकड़ लिया। सरोजिनी नायडू का ध्यान जब इस ओर गया तो वह खिलखिलाकर हंस पड़ी और कहने लगी, 'आपको तो यह भी नहीं पता कि रैकेट कौनसे हाथ में पकड़ा जाता है?'

बजट से जागी सीनियर सिटीजन की उम्मीदें

अशोक भाटिया

2020 कोरोना काल मानव इतिहास में एक अहम पड़ाव के रूप में देखा जाएगा। हममें से कई लोगों ने इस दौरान स्वास्थ्य संबंधी परेशानी, इनकम में अड़चन, आर्थिक अनिश्चितता, लोन के डिफॉल्ट की चिंता आदि का सामना किया है। इसके अलावा इस अवधि में ब्याज दरों में कमी आई है। इसकी वजह यह है कि सरकार कारोबार के लिए कर्ज लेना आसान बनाना चाहती है लेकिन इसका नुकसान भी हुआ है। अपने निवेश से ब्याज पर निर्भर रहने वाले लोगों पर इसका असर देखने को मिला है। उन्हें लगता है कि अब वे अपने निवेश से बहुत कम कमा पा रहे हैं। दोबारा निवेश के जोखिम के खतरों की भी उन्हें समझ हो गई है। उस पर महंगाई ने स्थिति और बिगाड़ दी है। यह आरबीआई के सहज स्तर 6 फीसदी से ऊपर निकल गई हैं। 1 फरवरी 2024 को सरकार अपना यूनियन बजट पेश करने वाली है। सारा देश, ख़ासतौर पर सीनियर सिटिज़न्स बड़ी बेसब्री से इस बजट घोषणा का इंतजार कर रहे हैं ताकि उन्हें पता चल सके कि उनके बटुए में और ज्यादा पैसे आएंगे या नहीं। बीते सालों में, जॉइंट इंडियन फैमिली ने न्यूक्लियर फैमिली का रास्ता खोल दिया है। इसका मतलब है कि आज अधिक से अधिक सीनियर सिटिज़न्स आत्मनिर्भर तरीके से अपनी सेविंग्स और इनकम के भरोसे अपनी जिंदगी गुजार रहे हैं। पिछले साल किए गए इकनॉमिक सर्वे के अनुसार, भारत में बड़े-बुजुर्गों की हिस्सेदारी यानी 60 साल और उससे ज्यादा उम्र के लोगों की संख्या 2011 में 8.6% से लगातार बढ़ते हुए 2041 तक 16% यानी लगभग दोगुनी हो जाएगी। ऐसी परिस्थिति में, उपयोगी बजट सम्बन्धी घोषणाओं के माध्यम से इस वर्ग के लोगों की जरूरतों पर ध्यान देना बहुत जरूरी है।सीनियर सिटिज़न्स के साथ बजट सम्बन्धी उम्मीदों के बारे में चर्चा करते समय, एक मुद्दा बाकी सभी मुद्दों से ज्यादा महत्वपूर्ण था और वह हैं – टैक्स ब्रेक का मुद्दा। वे सब यही चाहते हैं कि उनका टैक्स ब्रेक, नॉन-रिटायर्ड कामकाजी लोगों से अलग हो। टैक्स ब्रेक की इस बढ़ती मांग का कारण, उनके और दूसरों की इनकम में मौजूदा अंतर है। एक सीनियर सिटिज़न जिसे पेंशन नहीं मिलती, वह बैंक सेविंग्स और डेट इन्वेस्टमेंट्स जैसे फिक्स्ड डिपॉजिट्स से होने वाले इंटरेस्ट इनकम पर निर्भर रहता है। इस मामले में उनकी चिंता का विषय इंटरेस्ट रेट में होने वाला उतार-चढ़ाव है जिससे उनकी इनकम कम हो सकती है। दूसरी तरफ, पेंशन इनकम पर निर्भर रहने वाले सीनियर सिटिज़न्स को सेहत और सामाजिक सुरक्षा जैसी अन्य असुरक्षा की भी चिंता सताती रहती है। इनकम टैक्स क़ानून के अनुसार, सीनियर सिटिज़न्स को दो समूहों में बांटा गया है – सीनियर सिटिज़न्स और सुपर सीनियर सिटिज़न्स। इनमें से प्रत्येक समूह के लिए टैक्स सम्बन्धी क़ानून भी अलग-अलग हैं। सीनियर सिटिज़न्स यानी 60 से 80 साल की उम्र के लोगों के लिए 3 लाख रुपये की इनकम तक टैक्स माफ़ है। सुपर सीनियर सिटिज़न्स यानी 80 साल से ज्यादा उम्र के लोगों के लिए 5 लाख रुपये की इनकम तक टैक्स माफ़ है। रिटायर्ड लोग चाहते हैं कि यह अंतर ख़त्म हो जाए क्योंकि कई लोगों के पास, पेंशन और इन्वेस्टमेंट को छोड़कर इनकम का कोई अन्य साधन नहीं है। उनका मानना है कि सबके लिए 5 लाख रुपये की छूट सीमा तय की जानी चाहिए ताकि सभी सीनियर सिटिज़न्स पर टैक्स का बोझ कम हो सके। मौजूदा टैक्स स्लैब के अनुसार, सीनियर सिटिज़न्स को अलग-अलग रेट के हिसाब से टैक्स देना पड़ता है। सरकार को इन टैक्स स्लैब पर फिर से काम करना चाहिए ताकि सीनियर सिटिज़न्स के हाथ में ज्यादा पैसे बच सके। वर्तमान में, टैक्स पर अलग से 4% का हेल्थ और एजुकेशन सेस भी लिया जाता है। सरकार को सीनियर सिटिज़न्स के लिए इस सेस और अन्य सरचार्ज को कम या ख़त्म करने के बारे में सोचना चाहिए ताकि उनके हाथ में अपनी सेहत और अन्य जरूरतों के लिए ज्यादा पैसे बच सके। सीनियर सिटिज़न्स पर महंगाई का ज्यादा असर पड़ता है। उनके इनकम के साधन सीमित और अक्सर निश्चित होने के कारण, बढ़ती महंगाई के कारण सीधे तौर पर उनकी खरीदने की ताकत कम हो सकती है। उनके पास महंगाई से लड़ने के लिए अपने इनकम को बढ़ाने का कोई तरीका नहीं भी हो सकता है, इसलिए सरकार उन्हें अधिक से अधिक, महंगाई को मात देने वाले सेविंग्स और इन्वेस्टमेंट ऑप्शंस देने के बारे में सोच सकती है। वर्तमान में, सीनियर सिटिज़न्स सेविंग्स स्कीम में 30 लाख रुपये तक इन्वेस्ट किया जा सकता है जिस पर 8.2 % प्रति वर्ष की दर से सुनिश्चित रिटर्न मिलता है। सरकार इस सीमा को बढ़ाने, ज्यादा रेट ऑफ़ रिटर्न देने और कम लॉक-इन फिक्स करने के बारे में सोच सकती है। इससे सीनियर सिटिज़न्स की खरीदने की ताकत बढ़ जाएगी और उन्हें बेहतर लिक्विडिटी मिल पाएगी। कई सीनियर सिटीजन की मांग है कि उन्हें चालू ब्याज से 2 प्रतिशन अतिरिक्त ब्याज मिलना चाहिए । वैसे इस समय एँफ़डी ब्याज दरों की बात करें तो डीसीबी बैंक में सीनियर सिटीजन को एफडी पर 8.6% का ब्याज मिल रहा है। पंजाब एंड सिंध बैंक सीनियर सिटीजन को एफडी पर 7.9% का ब्याज दे रहा है। ज्यादातर बैंक सीनियर सिटीजन को अधिकतम 7.75 फीसदी का ब्याज दे रहे हैं। इसमें एसबीआई, एचडीएफसी, आईसीआईसीआई बैंक आदि शामिल हैं। अगर सरकार 2 फीसदी तक ब्याज बढाती है तो सीनियर सिटीजन को मिलने वाला ब्याज 10 फीसदी तक जा सकता है जिससे उनके बुढ़ापे की गाड़ी आसानी से चल सकती है । वसई पूर्व सीनियर सिटीजन एसोसिएशन के पूर्व जॉइंट सेक्रेटरी आनंद बोंगिरवार के अनुसार सरकार आयुष्यमान योजना मे बिना किसीं भेदभाव के सभी वरिष्ठ नागरिक को मेडिकल सुविधा प्रदान करें । सभी वरिष्ठ नागरिको की बैंक में जमा पूँजी की पूरी राशि की सुरक्षा की गारंटी करें. इसे 5 लाख की सीमा में लॉक अप न किया जाय ।देश में चल रही सभी विमान सेवा द्वारा वरिष्ठ नागरिकों को 50% डिस्काउंट प्रदान किया जाये , विमान सरकारी हो यां गैर सरकारी । इस समय पारिवारिक पेंशन के लिये 65 लाख लोग पेन्शन के लिये लगातार संघर्ष कर रहे है. सभी वरिष्ठ नागरिक को पेन्शन प्रदान किया जाय क्योकि उन्होंने अपने जीवन काल मे बहुत ही कम पैसे मे गुजर किया था और महंगाई बढ़ने पर उनकी जमा पुंजी मे कमी हो गई हैं । इसी प्रकार इंदौर से वरिष्ट नागरिक दौलत भाटिया बताते है कि सीनियर सिटीजन को दांतो की बीमारी के लिए इनकम टैक्स में कोई छूट नहीं मिलती। नकली दाँत बनवाने, और दांतों का इलाज करने की इनकम टैक्स में छूट दी जावे। दांतो के इलाज़ में एक बड़ी धनराशि ख़र्च होती है । कोविड से पहले तक सीनियर सिटीजन को ट्रेन टिकट पर 40 से 50 फीसदी तक की छूट दी जाती थी लेकिन ये छूट कोविड के समय खत्म कर दी गई। कोविड का डर देश और दूनिया में खत्म होने के बाद भी सरकार ने इस छूट को फिर से शुरू नहीं किया है। अब सीनियर सिटीजन बजट में ट्रेन टिकट पर 50 फीसदी तक की छूट दिये जाने की डिमांड कर रहे हैं। वह उम्मीद कर रहे हैं कि सरकार उन्हें ये छूट फिर से देना शुरू करेंगे।गौरतलब है कि आईआरसीटीसी सीनियर सिटीजन के लिए स्पेशल एक्सप्रेस ट्रेनों की सभी केटेगरी में रियायती किराए ऑफर करता था। आईआरसीटीसी साल 2019 के अंत तक 60 साल से अधिक उम्र के सीनियर सिटीजन और 58 साल या उससे अधिक उम्र की महिला बुजुर्ग यात्रियों को दुरंतो, शताब्दी, जन शताब्दी, राजधानी, मेल और एक्सप्रेस ट्रेनों के ट्रेन टिकटों पर किराए में छूट देता था। जहां पुरुष वरिष्ठ नागरिक 40 प्रतिशत की रियायत के पात्र थे, वहीं महिला वरिष्ठ नागरिक ट्रेन टिकट पर 50 प्रतिशत की छूट का लाभ उठा सकती थी।

शिक्षा को व्यापार समझने वालों पर नकेल कसनी जरूरी?

डॉ. रमेश ठाकुर

'कोचिंग संस्कृति' पर लगाम के लिए बीते एकाध दशकों में केंद्र सरकार की ओर से कई मर्तबा आदेश पारित हुए जिनमें बंदिशों के एक नहीं बल्कि कई तरह के दिशा-निर्देश शामिल रहे पर पूर्व के किसी भी सरकारी फरमानों को कोचिंग माफियाओं ने ज्यादा दिनों तक नहीं माना? आदेशों का कुछेक महीनों तक तो थोड़ा-बहुत बहुत अमल किया लेकिन जैसे ही शोर कम हुआ, फिर से शुरू कर दी अपनी मनमानी। अब फिर से कोचिंगों पर नया सरकारी फरमान जारी हुआ है जिसमें 16 वर्ष से कम आयु के छात्रों को कोचिंग की मनाही बताई है। केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ये कदम निश्चित रूप से सराहनीय है लेकिन, बात वहीं आकर अटक जाती है, ये आदेश कब तक? और क्या गारंटी है कि ये आदेश कोचिंग वाले तत्काल प्रभाव से मानेंगे। आदेश अगर मुकम्मल हो जाए तो राजस्थान कोटा में आए दिन छात्र आत्महत्या नहीं करेंगे। कोचिंगों का दबाव और पढ़ाई का प्रेसर उन्हें इस ओर धकेलता है। खैर, पुरानी बातों को छोड़कर अब कोचिंग संस्कृति पर लगाम की इस नई पहल पर व्यापक रूप से बहस और विचार-विमर्श करने की दरकार है। आमजन से लेकर हुकूमतें भी अब जान चुकी हैं कि कोचिंग सेंटर किस तरह से शिक्षा के नाम पर गोरखधंधा करने लगे हैं। वह सीधे-सीधे शिक्षा और छात्रों के जीवन से खिलवाड़ कर रहे हैं। शिक्षा मंत्रालय ने अपने आदेश में 16 साल से कम उम्र के छात्रों का जिक्र किया है लेकिन सच्चाई इससे भी कहीं इतर है। यहां आर्मी स्कूलों में दाखिला का जिक्र करना जरूरी हो जाता है जहां छात्रों को तो 10 उम्र से ही कोचिंग लेने पर विवश किया जाता हैं। शायद सरकार का इस ओर ध्यान नहीं गया। देश में 33 अधिकृत सैनिक स्कूलों के अलावा 5 राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल और एक राष्ट्रीय इंडियन मिलिट्री कॉलेज है जिनमें दाखिले की परीक्षा यूपीएससी के बराबर मानी है, वहां बिना कोचिंग के छात्र परीक्षा किसी भी सूरत में पास नहीं कर सकता। सामान्य स्कूलो के छात्र सैनिक स्कूलों की एंट्रस परीक्षा नहीं निकाल सकते। इसलिए उन्हें मजबूरी में कोचिंग लेनी पड़ती है। ऐसी परीक्षाओं का पैटर्न हल्का किया जाए, इस ओर शिक्षा मंत्रालय को ध्यान देने की जरूरत है। आर्मी स्कूलों की परीक्षाओं का सिलेबस बहुत कठिन रखा जाता है। तभी, इन परीक्षा को पास करवाने के लिए देश भर में सैकड़ों डिफेंस एकेडमियां संचलित हो चुकी हैं। वो अभिभावकों से मुंह मांगा पैसा वसूलती हैं। वहां न कोई नियम होता है और न ही कोई सरकारी सख्ती? इसलिए इन पर सबसे पहले नकेल कसने की आवश्यकता है। ये कोचिंग संस्थाएं ऐसी हैं जो खुलेआम नौनिहालों का बचपन रौंदती हैं। बच्चों को अच्छा खाना, सारीरिक कीड़ाओं में प्रतिभाग कराना, खेलखूद व मौज-मस्ती से दूर रखती हैं। कोचिंग के चक्रव्यूह में फंसना अब छात्रों-अभिभावकों की मजबूरी भी बन गई है। जिस छात्र को अगर गला-काट जैसी चोटी की प्रतियोगी परीक्षा पास करनी है, तो उसके जेहन में अव्वल ख्याल कोचिंग संस्थाओं की ओर ही दौड़ता है क्योंकि इन्होंने छात्रों और के दिमाग में ऐसी बात बिठा दी है कि कोचिंग के बिना उनका कल्याण नहीं होगा? यूपीएससी के लिए दिल्ली का मुखर्जी नगर हो या जेई-इंजीनियरिंग के लिए राजस्थान का कोटा? कागजों में ये उच्च शिक्षा के लिए 'महाकुंभ' बन गए हैं पर, दुर्भाग्य ये है, दोनों स्थान अब 'आत्महत्या' के लिए भी मशहूर हो गए हैं। वहां, चारों तरफ फैले अदृश्य मौत के खौफ से बच्चे अब भयभीत भी होने लगे हैं। शिक्षा का प्रेशर छात्रों को डिप्रेशन के समुद्र में धकेल रहा है। कोटा में बीते दस माह के भीतर करीब तीन दर्जन छात्रों ने आत्महत्या की हैं। ये घटनाएं तत्कालिक नहीं है, सिलसिला पिछले कई वर्षों से बदस्तूर जारी है। प्रत्येक सुसाइट की घटना सिर्फ यही बताती है कि बच्चे पढ़ाई का प्रेसर नहीं झेल पाने के कारण ऐसा कदम उठाते हैं?कहने में कोई गुरेज नहीं है कि छात्रों की आत्महत्याओं का मूल कारण सीधे-सीधे शिक्षण संस्थाएं ही हैं क्योंकि कोचिंग संस्थान अब छात्रों के बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखकर शिक्षा ग्रहण नहीं करवाती। बल्कि उन पर इतना प्रेशर डालती हैं कि अच्छे से अच्छा छात्र भी डिप्रेशन में चला जाए। वैसे, इस कृत्य में कोचिंग संस्थानों के साथ-साथ छात्रों के परिजन भी बराबर के भागीदार होते हैं। छात्रों पर दोनों का संयुक्त रूप से एक जैसा प्रेशर होता है।

ऐसी अनहोनी घटनाओं के पीछे मनोचिकित्सकों का तर्क होता है कि बदलते दौर में जब बच्चों की उम्र खेलकूद की होती है, तब, उनके सामने गला-काट प्रतियोगी परीक्षाओं की चुनौती खड़ी कर दी जाती है। ये भी सच है कि नार्मल स्कूलों की जगह कोचिंग संस्थानों के टफ स्टडी पैटर्न को झेलना, सामने वाले से बेहतर करने का घनघोर दबाव और उसके बाद शिक्षक-पेरेंट्स का बच्चों पर उम्मीद से ज्यादा उम्मीद करना भी सही नहीं होता? सही मायनों में देखें तो सुसाइड केसों के मूल और तात्कालिक कारण 'बेवजह शिक्षा का प्रेसर' ही कहे जाएंगे। ऐसा भी नहीं है कि इन कारणों को शिक्षक-अभिभावक न जानते हों, अच्छे से जानते हैं लेकिन इग्नोर कर देते हैं। कोचिंग संस्थानों पर केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने चाबुक चलाने का मन अचानक क्यों बनाया है, इस थ्योरी को भी समझने की जरूरत है। दरअसल, बीते कुछ महीनों में कोचिंग संस्थानों में बहुत सी अप्रिय घटनाएं घटी, जिनकी खुद केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान द्वारा समीक्षा करने के बाद ये निर्णय लिया गया। शिक्षा की आड़ में धंधा कैसे पनपता है, उसका सजीव उदाहरण समूचे हिंदुस्तान में कुकुरमुत्तों की भांति फैले कोचिंग इंस्टटीयूट हैं। सरकारी आंकड़ों की माने तो इस समय करीब पांच लाख छात्र मेडिकल,जेईई, इंजीनियरिंग व अन्य विभिनन प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारियां कोटा शहर में प्रति वर्ष करने पहुंचते हैं। इससे कहीं ज्यादा दिल्ली के मुखर्जी नगर-राजेंद्र नगर में यूपीएससी की तैयारी करने देशभर से छात्र-छात्राएं आती हैं लेकिन इन सभी जगहों छात्रों की सुरक्षा राम भरोसे रहती है। अभी कुछ महीनों पहले दिल्ली के मुखर्जी नगर में दर्दनाक हादसा हुआ था। जहां, एक कोचिंग सेंटर में भरभराकर आग लग गई। गनीमत ये समझो कि वहां छात्रों ने छतों से कूदकर किसी तरह अपनी जान बचाई। जांच हुई तो पता चला कि वहां संचालित आधे से ज्यादा कोचिंग सेंटर तय मानकों के खिलाफ हैं। तेजी से शासकीय-प्रशासनिक धरपकड़ हुई, तो पता चला कि ये खेल स्थानीय पुलिस और नगर निगम की मेहरबानी से होता है।

सरकारें सीधे कोचिंग माफियाओं पर हाथ क्यों नहीं डालती, इस कड़वी सच्चाई से भी आम लोगों को वाकिफ होना चाहिए। कोचिंग का मक्का कहे जाने वाले 'कोटा' की ही बात करें तो वहां सालाना 5 हजार करोड़ का शिक्षा के नाम पर बाजार होता है जिसमें सरकार को 700 करोड़ से भी कहीं ज्यादा टैक्स प्राप्त मिलता है।

हे राम!

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा

पीके फिल्म का एक दृश्य है। अभिनेता आमिर खान गाजर खरीदने के लिए दुकानदार को गांधी जी के चित्र वाली कई तरह की सामग्री देता है। उस पर दुकानदार कहता है, "ई कबाड़ हमरी दुकान पर काठे लारे हो?" इस पर अभिनेता गांधी जी की छवि वाला पचास रुपये का नोट देता है। बदले में दुकानदार गाजर देता है।

तब अभिनेता कहता है- "ई फोटु का वैल्यु सिरफ एक तरह का कागज पर है। बाकी सब कागज पर ई फोटु का वैल्यु जीरो बटा लूल है।" पीके फिल्म का यह दृश्य हमारे आज के समाज पर एक जोरदार तमाचा है। अब सवाल यह उठता है कि क्या वास्तव में गांधी जी की वैल्यु करेंसी तक ही सीमित है या फिर उससे बढ़कर भी है? महात्मा गांधी करिश्माई फ़कीर बाबा थे। उन्होंने शोषितों, पीडितों, गरीबों, पथभ्रष्टों के दुखों को अपना दुख माना।

दूसरों को सीख देने से पहले स्वयं को भाईचारे, धार्मिक सद्भावना, अहिंसा के अनुयायी के रूप में स्थापित किया। कुछ कर गुजरने के लिए बाहुबल या जनबल की नहीं बल्कि दृढ़ संकल्प की आवश्यकता पड़ती है। महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने महात्मा गाँधी के बारे में कहा था कि आने वाली पीढ़ियों को यक़ीन ही नहीं होगा कि हाड़-माँस का ये व्यक्ति कभी पृथ्वी पर चला भी होगा। यही कारण है कि महात्मा गांधी को जिसने चाहा, जैसे चाहा, अपने हिसाब अपने किताब से उनका भरपूर उपयोग किया। महात्मा गांधी ने जीकर जितना नहीं कमाया उतना तो उनके मरने के बाद मुन्नाभाई एमबीबीएस तो कभी लगे रहो मुन्नाभाई बनकर गांधीगिरी के नाम पर कमा गए। यह गांधीगिरी पुस्तकों तक ही सीमित रह गयी है।

कार्यालयों में उनके फोटो के पीछे या तो छिपकलियाँ और आगे अधिकारी बड़े धड़ल्ले से घूस लेते नजर आते हैं। 30 जनवरी को महात्मा गांधी केवल एक बार मरे थे। अब भी देश में कई नाथूराम गोड़से हैं जो हर दिन हर पल उन्हें मारने से नहीं चूकते। आजकल देश का जो हाल हो रहा है उसे देख कर नहीं लगता कि कभी इस देश में गांधी जी जैसे महापुरुष भी हुए होंगे जिन्होंने देश में राम-राज का सपना देखा था।

गांधी जी देश के राष्ट्र पिता माने जाते हैं लेकिन यह सच है कि जिस गांधी जी को नोट पर बने हुए हम देखते हैं और जिसे हम अपने घर की दीवारों पर टांगते या लटकाते हैं दोनों के मतलब अलग-अलग है। तस्वीर के सामने और तस्वीर के पीछे सबके अपने-अपने गांधी जी अपने-अपने हिसाब से होते हैं। जहाँ गांधीवादी सिद्धांत किताबों में धरे के धरे रह जाएँ और किताबें मुखचित्र देखकर बिकने लगे, वैसे देश का एक गांधी जी तो क्या असंख्य गांधी जी भी उतर आएँ तो कुछ नहीं कर सकते।

जीवन में लक्ष्य प्राप्ति के लिए सटीक योजना और रणनीति आवश्यक

संजीव ठाकुर

किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए सही योजना परिकल्पना तथा रणनीति अत्यंत आवश्यक है। अपने लक्ष्य के अनुसार अपनी क्षमता को दृष्टिगत रखते हुए व्यक्ति को अपनी प्राथमिकताएं सुनियोजित कर लेनी चाहिए, लक्ष्य प्राप्ति के लिए यह बहुत जरूरी है कि आपके पास उपलब्ध समय की गणना आवश्यक रूप से कर ले, अन्यथा अपने टारगेट से इधर उधर भटक सकते हैं, ऐसी स्थिति में मन को एकाग्र रखकर आत्मविश्वास को द्विगुणित कर के एकाग्रता को एक हथियार की तरह इस्तेमाल करना एक महत्वपूर्ण कदम होगा, सर्वप्रथम आप अपनी क्षमता शक्ति एवं ऊर्जा को पहचानिए एवं लक्ष्य की तरफ एक एक सोपान धीरे धीरे बढ़ाते जाएं, लक्ष्य के स्वरूप और छोटा या बड़ा होने की मन में कल्पना न करें, लक्ष हमेशा लक्ष्य होता है छोटा बड़ा नहीं, इसके लिए बहुत ही ठंडे दिमाग से योजना बनाकर लक्ष्य की प्राप्ति के उपायों को मन ही मन तय करें एवं प्राथमिकता के आधार पर उसकी धीरे धीरे तैयारी करना शुरू करें। सफलता के लिए अपने संसाधन सुनिश्चित करने के पश्चात एक सुनियोजित योजना बनाकर समय की प्रतिबद्धता के हिसाब से धीरे-धीरे आगे की ओर अपने कदम न सुनिश्चित करें। लक्ष्य प्राप्ति के लिए जो सबसे बड़ा शस्त्र है वह समय का सदुपयोग, क्योंकि हम सभी को मालूम है कि हमारे पास दिन में सिर्फ 24 घंटे ही उपलब्ध होते हैं, इसमें हमें दैनिक दिनचर्या शारीरिक एवं मानसिक शक्ति प्राप्त करने के लिए समय निकालने की आवश्यकता होगी, ऐसे में समय का समुचित उपयोग एक सफल नियोजन कर्ता की तरह किया जाना चाहिए, उपलब्ध समय में उचित समय पर उठना स्नान, ध्यान, भोजन एवं मानसिकता दृढ़ता के लिए समुचित नींद या निद्रा की अत्यंत आवश्यक होती है । किसी ने सच कहा है, मन के हारे हार है और मन के जीते जीत, यदि आपको जीवन में जीत या सफलता प्राप्त करनी है तो आप मानसिक दृढ़ता के साथ आप आत्मविश्वास से लवरेज यानी ओतप्रोत होने के लिए तैयार हो जाए, लक्ष्य छोटा हो या बड़ा घबराने की आवश्यकता नहीं है , क्योंकि मनुष्य का मस्तिष्क ही सोच के हिसाब से सफलता लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सक्षम होता है। काम करने से पहले ही यदि आप आधे मन से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होंगे तो सफलता प्राप्त होने में संदेह ही नहीं सारी परिस्थितियां संदिग्ध हो जाती है। लक्ष्य की दूरहता या क्लिष्टता का पूर्वानुमान अपनी सफलता की तैयारी के पूर्व ही कर लिया जाना चाहिए और इन सब के लिए सुनियोजित रणनीति या कार्य योजना तैयार कर उस लक्ष्य की तरफ रुख किया जाना चाहिए। अपनी प्राथमिकताओं में सर्व प्रथम स्थान नींद का होना चाहिए, सही वक्त पर पूरी नींद ही शरीर को चुस्त-दुरुस्त और सजग रखती है । अतः दिन में मानसिक तनाव से दूर रहने के लिए संपूर्ण 6 से 8 घंटे नींद ले लेनी चाहिए, जिससे मानसिक चुस्ती आने के साथ कार्य क्षमता में वृद्धि होती है, अन्यथा आपका किसी कार्य में समुचित मन लगना संदिग्ध होगा।, इसी तरह आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दिनचर्या के कार्यों को या तो अच्छे से याद कर ले या उसे कॉपी या डायरी में अच्छी तरह लिख कर रखें और रोज ही अपने लिखे हुए कार्यों को सुचारू रूप से संपादित करें अपने कार्य को प्राप्त करने के लिए होमवर्क किया जाना होगा ।सफलता की प्राप्ति के लिए दिन के लक्ष्य को कागज पर उतार कर उससे जुड़ी हुई विषमताओं एवं चुनौतियां को लिखकर चुनौतियों के समाधान को भी अपने मस्तिष्क में स्थापित कर लेना चाहिए। जिससे यह आपको सुनिश्चित हो जाएगा कि आप लक्ष्य की कठिनाइयों को किस तरह दूर कर पाएंगे और इनका निदान किस तरह किया जा सकेगा।कई बार ऐसे अवसर आएंगे जब आपका आत्मविश्वास आपकी उर्जा एवं शक्ति डगमगाने लगेगी, ऐसे मौके या तो आपकी शारीरिक कमजोरी,मानसिक शिथिलता,सामाजिक,पारिवारिक परिस्थितियों एवं काल के कारण आपके सम्मुख आ सकती है।इन परिस्थितियों में मनुष्य को लगने लगता है कि उनकी मेहनत और लक्ष्य अनायास व्यर्थ हो गई हैं।, बस ऐसे ही समय में आपको अपने मस्तिष्क मे से नकारात्मक विचारों और सोच को दूर रख कर मनन कर आत्मविश्वास के साथ दूर कर आगे की ओर अग्रसर होना है।

यही समय है जब आपको अपने आप को संतुलित कर आगे की ओर ले जाना है, और सबसे अहम एवं महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि लक्ष्य प्राप्ति के दौरान आप नकारात्मक यानी कि नेगेटिव वातावरण एवं इस तरह की मानसिकता वाले व्यक्तियों से दूर रहकर मस्तिष्क में सकारात्मक ऊर्जा भरकर आत्मविश्वास से लबालब होना है।

अर्बुदा देवी का मंदिर और माउंट आबू का इतिहास

51 दिव्य शक्तिपीठों में शामिल अर्बुदा देवी का मंदिर माउंट आबू पर स्थित है। आबू की अधिष्ठात्री देवी माता का चमत्कारी मंदिर बहुत पुराना है। नवरात्रि के दिनों में चमत्कारिक देवी मां के दर्शन मात्र से ही भक्तों के कष्ट दूर हो जाते हैं।

माता के मंदिर में हर दिन भक्तों का आना शुरू रहता है, लेकिन खासकर नवरात्रि के त्योहार के दौरान माता के मंदिर में भक्तों की भारी भीड़ होती है। माता अर्बुदा को कात्यानी माता के नाम से जाना जाता है। नवरात्रि के छठे दिन देवी मां की विशेष पूजा की जाती है। नवरात्री के नौ दिन मेसे यह दिन मां को समर्पित है।

पहले आबू का नाम अर्बुदा था लेकिन बाद में अर्बुदा नाम अपभ्रंश होकर आबू हो गया और पहाड़ियों पर होने के कारण इस दिव्य स्थान को माउंट आबू के नाम से जाना जाने लगा। माता अर्बुदा का मंदिर माउंट आबू से थोड़ी दूर एक पहाड़ी पर चट्टान को काटकर बनाई गई एक संकरी गुफा में स्थित है।

मंदिर में गुफा के संकरे रास्ते से प्रवेश किया जाता है:

माता का मंदिर राजस्थान के सभी तीर्थ स्थलों में लोकप्रिय है। यह मंदिर में प्राकृतिक रूप से बनी एक गुफा में स्थित है। मंदिर में देवी मां के दर्शन करने के लिए भक्तों को एक संकीर्ण गुफा मार्ग से होकर गुजरना पड़ता है। मंदिर की गुफा के पास ही एक शिव मंदिर बना हुआ है।

इस शिव मंदिर में होमाष्टमी के दिन महायज्ञ किया जाता है और नवमी के दिन यज्ञ की पूर्णाहुति होती है। नवरात्रि के दिनों में यहां हजारों भक्तों की भीड़ रहती है।

अर्बुदा माता मंदिर में माता सती के शरीर का कौन सा भाग गिरा था?

धार्मिक ग्रंथों में बताया गया है कि भगवान शिव माता सती के शव को लेकर क्रोधित होकर इधर-उधर घूम रहे थे। उस समय भगवान शिव का माता सती से मोहभंग करने के लिए भगवान विष्णु ने अपने दिव्य चक्र से माता सती के शरीर पर प्रहार कर शरीर को 51 भागों में काट दिया।

देश में जिस स्थान पर माता सती के शरीर के अंग गिरे वह शक्तिपीठ कहलाया। अर्बुदा माता मंदिर में देवी सती के शरीर का अधर (होठ) गिरा था, इसलिए उन्हें अधरदेवी के नाम से जाना जाता है।

माँ अर्बुदा द्वारा राक्षस बासकली के वध से जुडी पौराणिक कथा:

पौराणिक कथा में बताया गया है कि कली नामक एक राक्षस राजा था जिसको बासकली के नाम से जानते थे और वह बहुत ही क्रूर और निर्दयी राक्षस था। उसने कठोर तपस्या करके भगवान शिव को प्रसन्न किया और अजेय होने का वरदान प्राप्त किया।

अजेय होने का वरदान प्राप्त करने के बाद, दानव कली अहंकारी हो गया और इंद्रलोक में देवी-देवताओं और ऋषियों को परेशान करना शुरू कर दिया। इसके अत्याचारों से दुखी होकर देवी-देवताओं और ऋषि-मुनियों ने तपस्या करके अर्बुदा माता को प्रसन्न किया और मां से राक्षस कली को मारकर उसके अत्याचारों से मुक्ति दिलाने की प्रार्थना की।

माता ने ऋषि-मुनियों और देवताओं से तथास्तु कहा और अपनी दिव्य शक्ति से माता ने राक्षस राजा कली को अपने पवित्र चरणों के नीचे दबाकर उसका वध कर दिया, इसीलिए माता के साथ-साथ उनके चरणों की भी विशेष पूजा की जाती है।

त्रिदेव ने अर्बुदा माता को उत्पन्न किया

स्कंद पुराण के अर्बुद खंड में देवी मां के पवित्र चरण पादुका की महिमा का बहुत वर्णन किया गया है। माता के चरण पादुका के दर्शन मात्र से ही लोगों को मोक्ष यानी सद्गति की प्राप्ति हो जाती है।

अर्बुदा माता को त्रिदेवों ने अपना सबसे तेज अंश देकर प्रकट किया था, इससे जुड़ी कहानी यह है कि राजा कली के अत्याचारों से परेशान होकर ऋषि मुनियों और देवी देवताओ ने देवी की तपस्या की, तब राक्षस कली को मारने के लिए त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) ने अपना एक-एक तेज अंश देकर माता अर्बुदा की रचना की गई। मां अर्बुदा की पूजा ऋषि कात्यायन ने की थी, इसीलिए उनका नाम कात्यानी पड़ा।

अर्बुदा माता मंदिर भारत के लोकप्रिय रॉक-कट मंदिरों में से एक है

माता अर्बुदा का मंदिर ठोस चट्टानों से बना है और यह मंदिर भारत के चट्टानों को काटकर बनाए गए मंदिरों की सूची में अपना विशेष स्थान रखता है। माता जी का यह मंदिर सफेद संगमरमर के पत्थरों से बना है। ऊंची पहाड़ी पर होने के कारण यह मंदिर अत्यंत सुंदर और आकर्षक दिखता है और इनका गर्भगृह एक प्राकृतिक गुफा में है। मंदिर तक पहुंचने के लिए पहाड़ियों से गुजरते समय सुंदर दृश्य और शांतिपूर्ण वातावरण मन को मोह लेता है। इस खूबसूरत और भव्य मंदिर के पास नवदुर्गा माता, नीलकंठ महादेव और गणेश जी के मंदिर बने हुए है।

अर्बुदा माता के अन्य नामः स्कंद पुराण के अर्बुद खंड में अर्बुदा माता को अलग-अलग नामों से पुकारा गया है। ये माता अर्बुदा के अन्य नाम हैं

भवतारिणीट, दुखी महिला, मोक्षदाहिनी,सर्वफलदाहिनी,अर्बुदा माता मंदिर से जुड़े कुछ सवाल:

1. अर्बुदा माता को कात्यानी माँ क्यों कहा जाता है?

माता अर्बुदा की रचना त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) ने अपना एक-एक तेज भाग देकर की थी। मां अर्बुदा की पूजा ऋषि कात्यायन ने की थी, इसलिए उनका नाम कात्यानी पड़ा।

2. अर्बुदा माता की पूजा नवरात्रि में कोनसे दिन होती है?

माता अर्बुदा को कात्यानी माता के नाम से जाना जाता है। नवरात्रि के छठे दिन देवी मां की विशेष पूजा की जाती है। नवरात्रि के नौ दिनों में से यह दिन देवी मां को समर्पित है।

3. अर्बुदा माता अर्बुदा माता किसकी कुल देवी हैं?

माता अर्बुदा परमारवंश की कुलदेवी हैं। अर्बुदा माता हिंदू धर्म के कई गोत्रों की कुल देवी हैं, इनमें सबसे प्रमुख परमार वंश है। हमारे हिंदू धर्म में हर गोत्र की अलग-अलग कुलदेवी होती है, हर भक्त अपने कुल के अनुसार अपनी कुलदेवी माता की पूजा करता है, लेकिन हिंदू धर्म मानता है कि सभी कुलदेवी माता चामुंडा का ही रूप हैं।

अर्बुदा माता मंदिर की सीढ़ियों की संख्या अर्बुदा देवी के दर्शन के लिए मंदिर में सीढ़िया चढ़के पंहुचा जाता है अर्बुदा माता मंदिर तक पहुंचने के लिए 365 सीढ़िया चढ़नी पड़ती हैं। सीढ़िया चढ़ते समय सुंदर प्राकृतिक दृश्य देखकर सारी थकान दूर हो जाती है।

अर्बुदा माता के स्थानीय नाम – राजस्थान में स्थित शक्तिशाली शक्तिपीठ में विराजमान जगत जननी मां अर्बुदा को स्थानीय लोग भक्तिभावपूर्ण स्थानीय नाम से पुकारते हैं। स्थानीय लोग देवी माता को अधरदेवी, और आबू रे पहाड़ों वाली माँ के नाम से पुकारते है अर्बुदा माता मंदिर जाने का सबसे अच्छा समय –

अर्बुदा माता मंदिर पहाड़ी पर स्थित होने के कारण यहां जाने का सबसे अच्छा समय बारिश का मौसम है क्योंकि बारिश के मौसम में माता के दर्शन के साथ-साथ बहते झरनों, नदियों और पहाड़ों की प्राकृतिक सुंदरता का भी आनंद लिया जा सकता है। आप अपने बच्चों को गर्मी की छुट्टियों में भी ले जा सकते हैं। इस समय यहां का वातावरण ठंडा रहता है। छुट्टियाँ मनाने के लिए यह राजस्थान की सबसे महत्वपूर्ण जगह है।

जीण माता मंदिर औरंगजेब भी नहीं कर पाया था इस मंदिर को खंडित मधुमक्खियों ने की थी रक्षा

औरंगजेब भी नहीं कर पाया था इस मंदिर को खंडित, मधुमक्खियों ने की थी रक्षा – दुर्गा मां के कई रूप और अवतार हैं। हमारे देश में दुर्गा मां को शक्ति की देवी के रूप में पूजा जाता है। यही वजह है कि पूरे भारत में नवरात्र के अवसर पर माता के मंदिरों में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ती है। नवरात्रि के पावन पर्व पर हम आपको आज एक ऐसे मंदिर के बारे में बताने जा रहे है, जिसे मुगल बादशाह औरंगजेब की सेना तोडने पहुंची तो मधुमक्खियों (भंवरों) ने उन पर हमला कर, उनके नापाक मंसूबों को नाकाम कर दिया था।

हर्ष देव मंदिर और जीण माता मंदिर औरंगजेब ने करी थी तोड़ने की कोशिश

लोक मान्यता के अनुसार एक बार मुगल बादशाह औरंगजेब ने राजस्थान के सीकर में स्थित जीण माता और भैरों के मंदिर को तोडने के लिए अपने सैनिकों को भेजा। जब यह बात स्थानीय लोगों को पता चली तो बहुत दुखी हुए। बादशाह के इस व्यवहार से दुखी होकर लोग जीण माता की प्रार्थना करने लगे। इसके बाद जीण माता ने अपना चमत्कार दिखाया और वहां पर मधुमक्खियों के एक झुंड ने मुगल सेना पर धावा बोल दिया।

मधुमक्खियों के काटे जाने से बेहाल पूरी सेना घोड़े और मैदान छोड़कर भाग खड़ी हुई। कहते है कि स्वयं बादशाह की हालत बहुत गंभीर हो गई तब बादशाह ने अपनी गलती मानकर माता को अखंड ज्योज जलाने का वचन दिया और कहा कि वह हर महीने सवा मन तेल इस ज्योत लिए भेंट करेगा। इसके बाद औरंगजेब की तबीयत में सुधार होने लगा।

जीण माता मंदिर पहले दिल्ली से फिर जयपुर से बादशाह भिजवाता रहा तेल

कहते हैं कि बादशाह ने कई सालों तक तेल दिल्ली से भेजा। फिर जयपुर से भेजा जाने लगा। औरंगजेब के बाद भी यह परंपरा जारी रही और जयपुर के महाराजा ने इस तेल को मासिक के बजाय वर्ष में दो बार नवरात्र के समय भिजवाना आरम्भ कर दिया। महाराजा मान सिंह जी के समय उनके गृह मंत्री राजा हरी सिंह अचरोल ने बाद में तेल के स्थान पर नगद 20 रु. तीन आने प्रतिमाह कर दिए। जो निरंतर प्राप्त होते रहे।

भाई के स्नेह पर लगी थी जीण माता और उनकी भाभी में शर्त

ऐसा माना जाता है कि जीण माता का जन्म चौहान वंश के राजपूत परिवार में हुआ था। वह अपने भाई से बहुत स्नेह करती थीं। माता जीण अपनी भाभी के साथ तालाब से पानी लेने गई। पानी लेते समय भाभी और ननद में इस बात को लेकर झगड़ा शुरू हो गया कि हर्ष किसे ज्यादा स्नेह करता है। इस बात को लेकर दोनों में यह निश्चय हुआ कि हर्ष जिसके सिर से पानी का मटका पहले उतारेगा वही उसका अधिक प्रिय होगा। भाभी और ननद दोनों मटका लेकर घर पहुंची लेकिन हर्ष ने पहले अपनी पत्नी के सिर से पानी का मटका उतारा। यह देखकर जीण माता नाराज हो गई।

जीण माता

बहन को मनाने निकले हर्ष, नहीं मानी तो खुद की भैरों की तपस्या नाराज होकर वह आरावली के काजल शिखर पर पहुंच कर तपस्या करने लगीं। तपस्या के प्रभाव से राजस्थान के चुरु में ही जीण माता का वास हो गया। अभी तक हर्ष इस विवाद से अनभिज्ञ था। इस शर्त के बारे में जब उन्हें पता चला तो वह अपनी बहन की नाराजगी को दूर करने उन्हें मनाने काजल शिखर पर पहुंचे और अपनी बहन को घर चलने के लिए कहा लेकिन जीण माता ने घर जाने से मना कर दिया। बहन को वहां पर देख हर्ष भी पहाड़ी पर भैरों की तपस्या करने लगे और उन्होंने भैरो पद प्राप्त कर लिया।

हर्ष देव मंदिर एक हजार वर्ष से भी अधिक पुराना है जीण माता का मंदिर

जीण माता का वास्तविक नाम जयंती माता है। माना जाता है कि माता दुर्गा की अवतार है। घने जंगल से घिरा हुआ है यह मंदिर तीन छोटी पहाड़ों के संगम पर स्थित है। इस मंदिर में संगमरमर का विशाल शिव लिंग और नंदी प्रतिमा आकर्षक है। इस मंदिर के बारे में कोई पुख्ता जानकारी उपलब्ध नहीं है। फिर भी कहते हैं की माता का मंदिर 1000 साल पुराना है। लेकिन कई इतिहासकार आठवीं सदी में जीण माता मंदिर का निर्माण काल मानते हैं।

युद्ध से पहले युधिष्ठिर भीष्म के पास क्यों गए थे?

श्रीकृष्ण की सीख - जो दिख रहा है, वही सच हो, ऐसा जरूरी नहीं है, सोच-समझ कर लेना चाहिए निर्णय

महाभारत युद्ध से ठीक पहले कौरव और पांडवों की सेनाएं आमने-सामने आ गई थीं। युद्ध शुरू होने से पहले पांडवों के बड़े भाई युधिष्ठिर अपने अस्त्र-शस्त्र रथ पर रखकर पैदल ही कौरव सेना की ओर चल दिए। युधिष्ठिर को कौरव पक्ष की ओर जाते हुए देखकर भीम और अर्जुन ने पूछा कि भैया आप कहां जा रहे हैं? युधिष्ठिर ने भीम और अर्जुन को कोई जवाब नहीं दिया और आगे बढ़ते रहे। उस समय पांडवों को लगा कि युधिष्ठिर कौरवों के सामने समर्पण करने जा रहे हैं।

भीम-अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा कि कृपया कुछ करें, कहीं भैया युद्ध से पहले ही समर्पण न कर दें। दूसरी ओर कौरव सेना में भी यही बातें होने लगीं कि युधिष्ठिर समर्पण करने आ रहे हैं। श्रीकृष्ण ने पांडवों से कहा कि मैं जानता हूं, युधिष्ठिर क्या करने जा रहे हैं, आप धैर्य रखें।

युधिष्ठिर भीष्म पितामह के सामने पहुंचे और हाथ जोड़कर खड़े हो गए। दूर से देखने पर सभी को ऐसा लग रहा था कि युधिष्ठिर ने समर्पण कर दिया है, पराजय स्वीकार कर ली है, लेकिन ये सच नहीं था, सच्चाई ये थी कि युधिष्ठिर ने हाथ जोड़कर भीष्म से कहा था कि पितामह आज्ञा दीजिए कि हम आपके विरुद्ध युद्ध कर सके। भीष्म ने प्रसन्न होकर कहा था कि अगर तुमने आज्ञा न मांगी होती तो मैं क्रोधित हो जाता। जाओ तुम्हें आज्ञा है युद्ध करने की। श्रीकृष्ण ने सभी को समझाया कि शास्त्रों में लिखा है कि जब भी कोई बड़ा काम करो तो सबसे पहले बड़ों का आशीर्वाद और अनुमति लेनी चाहिए। तभी विजय मिलती है।

भीष्म के बाद युधिष्ठिर ने द्रोणाचार्य से भी युद्ध करने की अनुमित मांगी थी। द्रोणाचार्य ने भी कहा था कि मैं बहुत प्रसन्न हूं और मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूं कि तुम्हारी विजय हो।

महाभारत की सीख

इस प्रसंग की सीख ये है कि हमें कभी भी जो बातें दिखाई दे रही हैं, उन्हें पूरी तरह से सच नहीं मानना चाहिए। जब तक बातें पूरी तरह से स्पष्ट नहीं होती हैं, तब तक कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए।

संभोग से समाधि की ओर

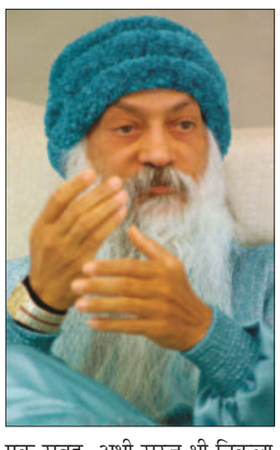

एक सुबह, अभी सूरज भी निकला नहीं था और एक मांझी नदी के किनारे पहुंच गया था। उसका पैर किसी चीज से टकरा गया। झुक कर उसने देखा, पत्थरों से भरा हुआ एक झोला पड़ा था। उसने अपना जाल किनारे पर रख दिया, वह सुबह सूरज के उगने की प्रतीक्षा करने लगा। सूरज उग आए, वह अपना जाल फेंके और मछलियां पकड़े। वह जो झोला उसे पड़ा हुआ मिल गया था, जिसमें पत्थर थे, वह एक-एक पत्थर निकाल कर शांत नदी में फेंकने लगा। सुबह के सन्नाटे में उन पत्थरों के गिरने की छपाक की आवाज सुनता, फिर दूसरा पत्थर फेंकता। धीरे-धीरे सुबह का सूरज निकला, रोशनी हुई। तब तक उसने झोले के सारे पत्थर फेंक दिए थे, सिर्फ एक पत्थर उसके हाथ में रह गया था। सूरज की रोशनी में देखते से ही जैसे उसके हृदय की धड़कन बंद हो गई, सांस रुक गई। उसने जिन्हें पत्थर समझ कर फेंक दिया था, वे हीरे-जवाहरात थे! लेकिन अब तो अंतिम हाथ में बचा था टुकड़ा और वह पूरे झोले को फेंक चुका था। वह रोने लगा, चिल्लाने लगा। इतनी संपदा उसे मिल गई थी कि अनंत जन्मों के लिए काफी थी, लेकिन अंधेरे में, अनजान, अपरिचित, उसने उस सारी संपदा को पत्थर समझ कर फेंक दिया था।लेकिन फिर भी वह मछुआ सौभाग्यशाली था, क्योंकि अंतिम पत्थर फेंकने के पहले सूरज निकल आया था और उसे दिखाई पड़ गया था कि उसके हाथ में हीरा है। साधारणतः सभी लोग इतने सौभाग्यशाली नहीं होते हैं। जिंदगी बीत जाती है, सूरज नहीं निकलता, सुबह नहीं होती, रोशनी नहीं आती और सारे जीवन के हीरे हम पत्थर समझ कर फेंक चुके होते हैं।

जीवन एक बड़ी संपदा है, लेकिन आदमी सिवाय उसे फेंकने और गंवाने के कुछ भी नहीं करता है! जीवन क्या है, यह भी पता नहीं चल पाता और हम उसे फेंक देते हैं! जीवन में क्या छिपा था–कौन से राज, कौन सा रहस्य, कौन सा स्वर्ग, कौन सा आनंद, कौन सी मुक्ति–उस सबका कोई भी अनुभव नहीं हो पाता और जीवन हमारे हाथ से रिक्त हो जाता है! **(क्रमशः)**

बेस्ट एक्टर-एक्ट्रेस बने आलिया भट्ट-रणबीर कपूर, इवेंट में रहा '12वीं फेल' का जलवा

बीती रात गुजरात में फिल्मफेयर अवॉर्ड्स 2024 का आयोजन हुआ, जिसमें कई बड़े स्टार्स पहुंचे थे।इस 69वें फिल्मफेयर अवॉर्ड्स शो से जुड़ी तस्वीरें और फोटोज सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रही है। अब फिल्मफेयर अवॉर्ड्स 2024 के पूरे विनर की लिस्ट भी सामने आ गई है। बॉलीवुड के कई स्टार्स और कई फिल्में फिल्मफेयर अवॉर्ड्स 2024 की विनर लिस्ट में शामिल हैं। कुछ फिल्में वो रही, जिनको लेकर सालभर चर्चा होती रही, तो कुछ हैरान करने वाली फिल्में भी लिस्ट में शामिल रही। तो चलिए जानते हैं बेस्ट एक्टर-एक्ट्रेस से लेकर बेस्ट फिल्म तक में किसका नाम शामिल हैं।

फिल्मफेयर अवॉर्ड्स की विनर लिस्ट

बेस्ट फिल्मः 12वीं फेल
बेस्ट फिल्म (क्रिटिक्स): जोरम
बेस्ट एक्टर इन लीडिंग रोल (मेल): रणबीर कपूर (एनिमल)
बेस्ट एक्टर इन लीडिंग रोल (फीमेल): आलिया भट्ट (रॉकी और रानी की प्रेम कहानी)
बेस्ट एक्टर (क्रिटिक्स): विक्रांत मेस्सी (12वीं फेल)
बेस्ट एक्ट्रेस (क्रिटिक्स): रानी मुखर्जी (मिसेस चॅटर्जी व्हर्सेस नॉर्वे) और शेफाली शाह (थ्री ऑफ अस)
बेस्ट डायरेक्टरः विधु विनोद चोपड़ा (12वीं फेल)
बेस्ट एक्टर इन सपोर्टिंग रोल (मेल): विक्की कौशल (डंकी)
बेस्ट एक्टर इन सपोर्टिंग रोल (फीमेल): शबाना आजमी (रॉकी और रानी की प्रेम कहानी)
बेस्ट डायलॉगः इशिता मोइत्रा (रॉकी और रानी की प्रेम कहानी)
बेस्ट स्क्रीनप्लेः विधु विनोद चोपड़ा (12वीं फेल)
बेस्ट डेब्यू (मेल): आदित्य रावल (फराज)
बेस्ट डेब्यू (फीमेल): अलीजेह अग्निहोत्री (फरें)
बेस्ट डेब्यू डायरेक्टरः तरूण डुडेजा (धक धक)
लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्डः डेविड धवन
बेस्ट लिरिक्सः अमिताभ भट्टाचार्या (जरा हटके जरा बचके)
बेस्ट प्लेबैक सिंगर (मेल): भूपिंदर बब्बल (अर्जन वैली)

बेस्ट एक्टर इन लीडिंग रोल (फीमेल): आलिया भट्ट (रॉकी और रानी की प्रेम कहानी)

बेस्ट प्लेबैक सिंगर (फीमेल): शिल्पा राव (बेशरम रंग)
बेस्ट वीएफएक्सः जवान
सर्वश्रेष्ठ संपादनः जसकुंवर सिंह कोहली और विधु विनोद चोपड़ा (12वीं फेल)
बेस्ट स्टोरीः अमित राय (ओएमजी 2) और देवाशीष मखीजा (जोरम)
बेस्ट सिनेमैटोग्राफी- अविनाश अरुण धावरे (थ्री ऑफ अस)
बेस्ट कॉस्ट्यूम डिजाइनः सचिन लवलेकर, दिव्या गंभीर और निधि गंभीर (सैम बहादुर)
बेस्ट प्रोडक्शन डिजाइनः सुब्रत चक्रवर्ती और अमित रे (सैम बहादुर)
सर्वश्रेष्ठ ध्वनि डिजाइनः कुणाल शर्मा (सैम बहादुर) और सिंक सिनेमा (एनिमल)
बेस्ट एक्शन - जवान के लिए स्पाइरो रजाटोस, एनल अरासु, क्रेग मैक्रे, यानिक बेन, केचा खम्फाकडी और सुनील रोड्रिग्स

बेस्ट एक्टर इन लीडिंग रोल (मेल): रणबीर कपूर (एनिमल)

साल 200023 की सबसे चर्चित फिल्म 12वीं फेल का फिल्मफेयर अवॉर्ड्स में भी दबदबा देखने को मिला। विक्रांत मैसी और मेधा शंकर स्टारर इस फिल्म को 69वें फिल्मफेयर अवॉर्ड्स में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का खिताब मिला। विधु विनोद चोपड़ा द्वारा निर्देशित इस फिल्म को बेस्ट फिल्म के साथ-साथ कई और कैटेगरी में भी अवार्ड मिले हैं।

बेस्ट फिल्म के साथ 12वीं फेल के लिए इसके निर्देशक विधु विनोद चोपड़ा को बेस्ट डायरेक्टर का फिल्मफेयर अवॉर्ड मिला है। वहीं, बेस्ट स्क्रीनप्ले और बेस्ट मूवी एडिटिंग की कैटेगिरी में भी 12वीं फेल ने बाजी मारी है। इसके अलावा विक्रांत मैसी को 12वीं फेल के लिए फिल्म बेस्ट एक्टर (क्रिटिक्स) का अवार्ड मिला। गौरतलब है कि 12वीं फेल साल 2023 की सबसे सफल और चर्चित फिल्मों में से एक रही। अब 69वें फिल्मफेयर अवॉर्ड्स में भी इस फिल्म ने धमाल मचाया है।

कम बजट में बनी इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर भी जमकर कमाई की। फिल्म को दर्शकों के साथ-साथ समीक्षकों ने भी खूब सराहा। वहीं, सिनेमा जगत के दिग्गजों ने इसकी खूब तारीफ की थी। आईएमडीबी पर भी इसे 9.2 की रेटिंग मिली है, इसके साथ ही भारतीय सिनेमा की 250 फिल्मों की सूची में में 12वीं फेल आईएमडीबी पर सबसे ज्यादा रेटिंग वाली फिल्म है।

12वीं फेल मनोज कुमार शर्मा की सच्ची कहानी पर आधारित है, जो अपनी गरीबी और हर संघर्ष का सामना करते हुए आईपीएस अधिकारी बनते हैं। इस फिल्म में उनकी आईआरएस अधिकारी पत्नी श्रद्धा जोशी के साथ उनके सफर को दिखाया गया है, जो उनके कठिन समय में उनके पूरा साथ देती हैं।

इस फिल्म में विक्रांत मैसी के अलावा मेधा शंकर, संजय बिश्नोई, अंशुमान पुष्कर जैसे कलाकारों ने महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई है। गौरतलब है कि '12वीं फेल' फिल्म से पहले इसी नाम से एक उपन्यास भी आ चुका है, जिसे अनुराग पाठक ने लिखा, जिसके बाद इस उपन्यास को बड़े पर्दे पर उतारा गया।

सूर्या के साथ स्क्रीन साझा करेंगी जान्हवी कपूर?

जान्हवी कपूर तेलुगु फिल्म इंडस्ट्री में डेब्यू करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। देवरा में वे जूनियर एनटीआर और सैफ अली खान के साथ नजर आने वाली हैं। इस फिल्म के अलावा उनकी एक और साउथ की फिल्म को लेकर बड़ी जानकारी सामने आई है। एक ताजा अपडेट के अनुसार अभिनेत्री जल्द ही बहुप्रतीक्षित फिल्म 'कर्ण' में सुपरस्टार सूर्या के साथ स्क्रीन साझा करती नजर आएंगी। हालांकि, इससे जुड़ा अन्य कोई भी विवरण सामने नहीं आया है।

इस खबर ने जान्हवी के फैंस का उत्साह बढ़ा दिया है। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार फिल्म में वे मुख्य अभिनेत्री के रूप में नजर आएंगी। वहीं, इसका निर्देशन रंग दे बसंती जैसी फिल्म बना चुके मशहूर डायरेक्टर राकेश ओमप्रकाश मेहरा करने वाले हैं।

हालिया रिपोर्ट्स के अनुसार, ऐसा प्रतीत हो रहा है कि सूर्या के बाद जान्हवी कपूर को फिल्म में मुख्य महिला की भूमिका निभाने के लिए चुना गया है। यह महाभारत पर आधारित है एक अखिल भारतीय (पैन इंडिया) फिल्म होगी, जिसे दो भागों में बनाया जाएगा। इसी वजह से फिल्म का बजट भी काफी ज्यादा होगा।

जान्हवी के साउथ डेब्यू की बात करें तो फिल्म देवरा पहले पांच अप्रैल को रिलीज होने वाली थी, लेकिन अब इसकी तारीख को आगे बढ़ा दिया गया है। एक रिपोर्ट के मुताबिक मेकर्स फिल्म की क्वालिटी को लेकर कोई भी समझौता नहीं करना चाहते हैं। सूत्र से मिली जानकारी के मुताबिक फिल्म के वीएफएक्स की वजह से इसमें ज्यादा समय लग रहा है। बताया जा रहा है कि अब 2024 की दूसरी छमाही में इसे सिनेमाघरों में प्रदर्शित किया जाएगा। रिपोर्ट्स के मुताबिक देवारा को भारी बजट पर बनाया जा रहा है। कथित तौर पर निर्माता इसके वीएफएक्स पर 140 करोड़ रुपये खर्च कर रहे हैं। वर्क फ्रंट की बात करें तो जान्हवी कपूर अगली बार राजकुमार राव के साथ मिस्टर एंड मिसेज माही में नजर आएंगी।

भोजपुरी एक्ट्रेस मोनालिसा ने थाई हाई स्लिट गाउन में दिए किलर पोज, तस्वीरें देख फैंस बोले-'परी लगती हो'

भोजपुरी से लेकर टीवी इंडस्ट्री तक में अपनी अलग पहचान बनाने वाली एक्ट्रेस मोनालिसा अपने सोशल मीडिया पोस्ट्स की वजह से सुर्खियों में छाई रहती हैं। एक्ट्रेस अक्सर अपनी तस्वीरें शेयर कर फैंस को विजुअल ट्रीट देती रहती हैं। इस बीच मोनालिसा की कुछ तस्वीरें आई हैं, जिन्हें देख फैंस के दिलों की धड़कनें तेज हो गई हैं। इस बीच भोजपुरी की क्वीन मोनालिसा की कुछ फोटोज सामने आई हैं, जो कि इंटरनेट वर्ल्ड में ताबड़तोड़ वायरल हो रही हैं। इन फोटोज को देखने के बाद लोग उनकी तुलना स्वर्ग की अप्सरा से कर रहे हैं।

भोजपुरी एक्ट्रेस मोनालिसा ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम अकाउंट पर कुछ तस्वीरें शेयर की हैं, जिसे देखने के बाद लोगों के दिलों की धड़कनें तेज हो गई हैं। भोजपुरी एक्ट्रेस मोनालिसा इन फोटोज में थाई हाई स्लिट गाउन में नजर आ रही हैं। मोनालिसा का ये अवतार देख फैंस को काफी पसंद आ रहा है। सामने आई इन फोटोज में मोनालिसा कैमरे के सामने एक से बढ़कर एक पोज दे रही हैं। उनका हर एक पोज इंटरनेट पर वायरल हो रहा है। मोनालिसा की इन तस्वीरों पर लोग जमकर रिएक्ट कर रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, 'परी जैसी लगती हो'

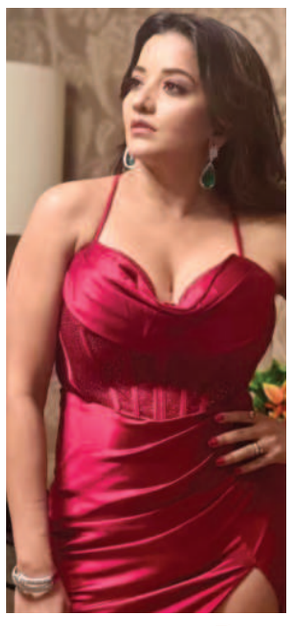

अंकिता लोखंडे की हार पर फूटा विक्की जैन की भाभी का गुस्सा, बोलीं- 'ये बिल्कुल ठीक नहीं हुआ'

सलमान खान के रियलिटी शो बिग बॉस 17 की ट्रॉफी को मुनव्वर फारूकी ने अपने नाम कर लिया है। मुनव्वर की जीत ने फैंस से लेकर सेलेब्स तक को खुश कर दिया, लेकिन अंकिता लोखंडे की रैंकिंग ने हर किसी को हैरान कर दिया। अंकिता लोखंडे ट्रॉफी की रेस से काफी पहले बाहर हो गईं। फैंस इस बात को लेकर काफी ज्यादा कॉन्फिडेंट थे कि अंकिता टॉप 2 में जगह जरूर बना लेंगी, लेकिन वह टॉप 3 से पहले ही बाहर हो गईं। इस वजह से हर कोई हैरान है। वहीं, अब अंकिता लोखंडे की हार पर उनकी जेठानी रेशू जैन ने भी अपना रिएक्शन दिया है।

अंकिता लोखंडे की जेठानी का रिएक्शन

दरअसल, बिग बॉस 17 का ग्रैंड फिनाले के बाद अंकिता लोखंडे ने पैपराजी को

अंकिता लोखंडे

फुल इग्नोर किया। उन्होंने मीडिया के कुछ खास बातचीत नहीं की और वह सीधा अपने घर गईं, लेकिन अंकिता लोखंडे की जेठानी ने अपना रिएक्शन जरूर दिया। उन्होंने घर जाने से पहले पैपराजी से बात करते हुए बताया कि वह काफी ज्यादा हैरान हैं। विक्की जैन की भाभी ने पैपराजी से बात करते हुए कहा, 'मुझे अभी भी लग रहा है कि फर्स्ट और सेकंड अंकिता को ही रहना चाहिए थे। मुझे ये लगा था कि फर्स्ट और सेकंड अंकिता ही आएंगी, लेकिन यह बहुत गलत हुआ है।' अंकिता लोखंडे की जगह टॉप 3 में अभिषेक कुमार और मुनव्वर फारूकी के साथ मन्नारा चोपड़ा ने जगह बनाई थीं, जिसके बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा, 'मन्नारा ने भी बहुत अच्छा काम खेला है।'

पैपराजी से नहीं मिली अंकिता लोखंडे

बता दें कि बिग बॉस 17 के ग्रैंड फिनाले के बाद अंकिता लोखंडे के चेहरे पर हार की मायूसी साफ नजर आईं। एक्ट्रेस सेट से निकलकर सीधा अपनी कार में जाकर बैठ गईं, जिसके बाद वह अपने घर चली गईं। इस मौके पर अंकिता लोखंडे ने एक सेकंड के लिए भी पैपराजी से बातचीत नहीं की, जिस वजह से फैंस ने भी अंदाजा लगा लिया कि वह अपनी चौथी रैंकिंग से खुश नहीं है।

हालांकि, अंकिता लोखंडे को फैंस का फुल सपोर्ट मिल रहा है। एक्ट्रेस का नाम ट्विटर पर लगातार ट्रेंड कर रहा है और फैंस उन्हें असली विनर बता रहे हैं। सलमान खान ने भी अंकिता लोखंडे को ही असली विनर बताया है।

बिग बॉस जीतने के बाद घर बसाने जा रहे मुनव्वर फारुकी? मुनव्वर ने खास अंदाज में सलमान को दिया धन्यवाद

'बिग बॉस 17' का ग्रैंड फिनाले बीती रात संपन्न हुआ। स्टैंड अप कॉमेडियन मुनव्वर फारूकी ने विनर का खिताब अपने नाम किया। साथ ही चमचमाती ट्रॉफी भी हाथ में उठाई। विनर बने मुनव्वर को 50 लाख रुपये बतौर पुरस्कार राशि हासिल हुई, और वह एक ब्रैंड न्यू कार भी अपने साथ ले गए। मुनव्वर ने अभिषेक कुमार को पीछे छोड़कर विनर का ताज पहना। डोंगरी के रहने वाले मुनव्वर फारूकी और उनके फैंस के लिए जश्न का माहौल है। विजेता बनने के बाद मुनव्वर का पहला इंटरव्यू भी सामने आ गया है, जिसमें वह अपने फैंस का शुक्रियाअदा करते और अपनी उतार-चढ़ाव भरी जर्नी पर खुलकर बात करते नजर आए हैं।

मुनव्वर फारूकी ने 'बिग बॉस 17' की ट्रॉफी उठाने के अनुभव को साझा करते हुए कहा, 'यह एहसास अवास्तविक था, जिस तरह से मेरी यात्रा रही है, वह पल ऐसा था कि मैं उस ट्रॉफी का वजन महसूस कर सकता था। इस ट्रॉफी की मुझे बहुत कीमत चुकानी पड़ी, लेकिन यह इसके लायक है। अंत में, जो महत्वपूर्ण था वह सिर्फ ट्रॉफी को घर ले जाना नहीं था, बल्कि बहुत सी चीजें थीं।' मुनव्वर ने ट्रॉफी अपनी मां को समर्पित करते हुए एक खूबसूरत शायरी बोली, 'तू साथ न मां, पर साथ तेरा साया था, कितना मशहूर रुतबा एक कमाया था, वो तोड़ने आए थे मेरा मिट्टी का महल, लेकिन बेटा मुमताज का उनका ताज छीन के आया था।'

'बिग बॉस 17' की जीत के बाद मुनव्वर फारुकी ने हाल ही में आधिकारिक इंस्टाग्राम हैंडल पर एक पोस्ट साझा की है। उन्होंने सलमान खान के साथ एक तस्वीर साझा की, जिसमें वे 'बिग बॉस' 17वें सीजन की ट्रॉफी पकड़े हुए भाईजान के साथ नजर आ रहे हैं। तस्वीर साझा कर मुनव्वर ने कैप्शन में लिखा, 'बहुत बहुत शुक्रिया जनता।' उन्होंने आगे सलमान खान का धन्यवाद देते हुए कहा, आपके प्यार और सपोर्ट के लिए आखिर कर ट्रॉफी डोंगरी आ ही गई। मार्गदर्शन के लिए बड़े भाई सलमान खान को दिल से

शुक्रिया।'

ट्रॉफी के साथ मिली मिला यह इनाम

'बिग बॉस' के 17वें सीजन के विनर मुनव्वर फारूकी को 50 लाख रुपये की इनामी राशि दी गई है। वहीं, इसके साथ ही विनर को एक चमचमाती कार और सीजन 17 की थीम (दिल, दिमाग और दम) पर आधारित एक शानदार ट्रॉफी भी दी गई है। बताया जा रहा है कि पिछली बार के मुकाबले इस बार की इनामी राशि ज्यादा है।

मां को समर्पित की ट्रॉफी

मुनव्वर फारूकी ने 'बिग बॉस 17' की ट्रॉफी उठाने के अनुभव को साझा करते हुए कहा, 'यह एहसास अवास्तविक था, जिस तरह से मेरी यात्रा रही है, वह पल ऐसा था कि मैं उस ट्रॉफी का वजन महसूस कर सकता था। इस ट्रॉफी की मुझे बहुत कीमत चुकानी पड़ी।' मुनव्वर ने ट्रॉफी अपनी मां को समर्पित करते हुए एक खूबसूरत शायरी बोली, 'तू साथ न मां, पर साथ तेरा साया था, कितना मशहूर रुतबा एक कमाया था, वो तोड़ने आए थे मेरा मिट्टी का महल, लेकिन बेटा मुमताज का उनका ताज छीन के आया था।'

बेटे-बहू को फिल्मफेयर अवॉर्ड मिलने पर खुशी से झूमीं नीतू

बॉलीवुड की दिग्गज अभिनेत्री नीतू कपूर सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। अभिनेत्री निजी जिंदगी और प्रोफशनल लाइफ से जुड़ा अपडेट फैंस के साथ साझा करती रहती हैं। रविवार को 69वां फिल्मफेयर अवॉर्ड समारोह हुआ, जिसमें रणबीर कपूर और आलिया भट्ट को बेस्ट एक्टर और बेस्ट एक्ट्रेस का अवॉर्ड मिला। बेटे और बहू को अवॉर्ड मिलने से नीतू कपूर खुशी से झूम उठी हैं। अभिनेत्री ने हाल में सोशल मीडिया पर दोनों की तस्वीर साझा कर बधाई दी। इसके अलावा नीतू ने बताया कि उन्होंने आलिया और रणबीर के लिए गुप्त प्रार्थना की थी।

पोस्ट साझा कर जाहिर की खुशी

नीतू कपूर ने आलिया और रणबीर को अवॉर्ड मिलने पर खुशी व्यक्त की। अभिनेत्री ने हाल ही में आधिकारिक इंस्टाग्राम हैंडल से आलिया और रणबीर की कुछ तस्वीरें साझा की हैं। अभिनेत्री ने कैप्शन में लिखा, मैंने वर्ष 2019 में गुप्त रूप से प्रार्थना की थी, जब रणबीर कपूर और आलिया भट्ट को फिल्म 'संजू' और 'राजी' में

उनके शानदार प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया था। 'एनिमल' और 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' के लिए अवॉर्ड मिलने पर बधाई। मुझे आप दोनों पर बहुत गर्व है।'

आलिया और रणबीर को मिला अवॉर्ड

69वां फिल्मफेयर अवॉर्ड गुजरात के गांधीनगर में आयोजित हुआ था। दो दिवसीय समारोह का आगाज 27 जनवरी 2024 को हुआ। रविवार को मुख्य श्रेणी में पुरस्कारों का वितरण हुआ। फिल्मफेयर में बेस्ट एक्टर का अवॉर्ड रणबीर कपूर को मिला। उन्हें फिल्म 'एनिमल' के लिए ये अवॉर्ड दिया गया है। वहीं, फीमेल कैटेगरी में बेस्ट एक्ट्रेस का अवॉर्ड आलिया भट्ट को मिला है। आलिया भट्ट को अवॉर्ड फिल्म 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' के लिए दिया गया है।

रणबीर ने पत्नी आलिया पर लुटाया प्यार

फिल्मफेयर अवॉर्ड इवेंट से आलिया भट्ट और रणबीर कपूर से एक वीडियो भी वायरल हो रहा है। दोनों स्टार्स अवॉर्ड मिलने के बाद एनिमल के गाने जमाल कुडू का हुक स्टेप करते नजर आ रहे हैं।

आलिया और रणबीर ने अपने डांस से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। दोनों ने लॉर्ड बॉबी की तरह सिर पर गिलास रखते हुए पैर हिलाए। वहीं, रणबीर आलिया के गाल पर किस भी करते नजर आए।

वजन बढ़ा तो सैनिकों की कट सकती हैं छुट्टियां

सेना करने जा रही नियमों में बड़ा बदलाव

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)। भारतीय सेना अधिकारियों के बीच घटते फिजिकल स्टैंडर्स को देखते हुए एक नई फिटनेस नीति लेकर आई है। इसके तहत मौजूदा परीक्षणों में नए टेस्ट्स के साथ ही प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक आर्मी फिजिकल फिटनेस असेसमेंट कार्ड (एपीएसी) भी जरूरी होगा। सेना में अब नई नीति लागू की गई है, जिसके तहत कई नई जांचों को शामिल किया गया है। खास बात है कि नए मानकों पर खरा नहीं उतरने वाले सैनिकों पहले सुधार के लिए 30 दिनों का भी समय दिया जाएगा और ऐसा नहीं होने पर छुट्टियों में कटौती जैसे कदम उठाए जा सकते हैं।

इंडियन एक्सप्रेस की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि नए बदलावों के अनुसार, एक कमांडिंग ऑफिसर के बजाय एक ब्रिगेडियर रैंक का अधिकारी तिमाही होने वाले परीक्षणों में पीठासीन अधिकारी होगा। यह नई पॉलिसी 30 दिनों के भीतर कोई सुधार नहीं होने पर अधिक वजन वाले कर्मियों के खिलाफ सख्त एक्शन लेती है।

साथ ही मौजूदा परीक्षणों के साथ ही एक्स्ट्रा टेस्ट्स भी पेश करती है। जिसके लिए प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक आर्मी फिजिकल फिटनेस असेसमेंट कार्ड की भी जरूरत होगी। सूत्रों के अनुसार, सभी कमांड्स को भेजे गए एक लेटर में बताया गया है कि इस नई नीति का उद्देश्य परीक्षण प्रक्रिया में एकरूपता लाना, पाठ्यक्रमों के दौरान अधिकारियों के शारीरिक रूप से अयोग्य या मोटापे से ग्रस्त होना, पोस्टिंग और जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों के बढ़ने जैसे मुद्दों का समाधान करना है।

क्या हैं वर्तमान नियम?

फिलहाल, सेना में हर तीन महीने में बैटल फिजिकल एफिशीएंसी टेस्ट (बीपीईटी) और फिजिकल प्रोफीशिएंसी टेस्ट (पीपीटी) होता है। बीपीईटी के तहत एक शख्स को 5 किमी की दौड़, 60 मीटर की सप्रिंट, रस्सी के बल ऊपर चढ़ना और तय समय में 9 फीट के गड्ढे को पार करना है। यहां समय उम्र के आधार पर तय किया जाता है। वहीं, पीपीटी में 2.4 किमी की दौड़, 5 मीटर शटल, पुश अप्स, चिन अप्स, सिट अप्स और 100 मीटर की सप्रिंट होती है। इसके अलावा कुछ जगहों पर तैराकी जांच भी होती है। इन जांचों के नतीजों को एनुअल कॉन्फिडेंशियल रिपोर्ट (एसीआर) में शामिल किया जाता है, जिसके जिम्मेदार कमांडिंग ऑफिसर होते हैं।

क्या हैं नए नियम?

नए नियमों के तहत ब्रिगेडियर रैंक के अधिकारी दो कर्नल और एक मेडिकल अधिकारी के साथ मिलकर हर तीन महीनों में आंकलन करेंगे। सैनिकों को बीपीईटी और पीपीटी के अलावा कुछ और टेस्ट भी देने होंगे। इनमें 10 किमी का स्पीड मार्च और हर 6 महीनों में 32 किमी का रूट मार्च शामिल है। साथ ही 50 मीटर का स्विमिंग टेस्ट भी देना होगा।

फिटनेस टेस्ट में फेल होने पर क्या होगी कार्रवाई?

रिपोर्ट के मुताबिक, जो सैनिक इन मानकों पर खरे नहीं उतरते या ओवरवेट पाए जाते हैं, उन्हें स्थिति सुधारने के लिए 30 दिनों का समय मिलेगा। अगर इस अवधि में भी उनमें कोई सुधार नहीं होता है तो छुट्टियों और टीडी कोर्सेज में कटौती की जाएगी।

हरियाणा में आप अकेले लड़ेगी विधानसभा चुनाव

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने रविवार को घोषणा की कि उनकी पार्टी हरियाणा की सभी 90 विधानसभा सीटों पर अपने दम पर चुनाव लड़ेगी। साथ ही आम आदमी पार्टी सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल ने यह भी कहा कि उनकी पार्टी राज्य में आगामी लोकसभा चुनाव में विपक्ष के इंडिया गठबंधन के हिस्से के रूप में लड़ेगी।

केजरीवाल की यह घोषणा कांग्रेस विधायक दल के नेता और पूर्व मुख्यमंत्री भूपिंदर सिंह के उस बयान कुछ दिनों बाद आई है जिसमें उन्होंने कहा था कि वह लोकसभा चुनाव के लिए राज्य में आप के साथ गठबंधन के इच्छुक नहीं हैं। राज्य में 10 संसदीय सीटें हैं। गौरतलब है कि लोकसभा चुनाव अप्रैल-मई में हो सकते हैं जबकि हरियाणा विधानसभा चुनाव इस साल के अंत में अक्टूबर में होने की संभावना है।

कांग्रेस में कुछ महान नेता 2029 चुनाव की तैयारी कर रहे हैं

आचार्य प्रमोद कृष्णम का राहुल गांधी पर बड़ा हमला

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी इन दिनों 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' को लेकर चर्चा में हैं। यात्रा ने सोमवार को किशनगंज से बिहार में प्रवेश किया। कांग्रेस की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष अखिलेश प्रसाद सिंह और पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेताओं ने बिहार में राहुल गांधी का स्वागत किया। भारत जोड़ो न्याय यात्रा' के तहत पश्चिम बंगाल से होते हुए बिहार पहुंचे गांधी ने कहा कि आरएसएस और भाजपा की विचारधारा ने देश में हिंसा और नफरत फैलाई है। वहीं, कांग्रेस नेता आचार्य प्रमोद कृष्णम ने अपनी ही पार्टी पर निशाना साधते हुए कहा कि हम 2029 के चुनावों के लिए खुद को तैयार कर रहे हैं।

राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा पर तंज कसते हुए कांग्रेस नेता आचार्य प्रमोद कृष्णम ने कहा, "कांग्रेस पार्टी में कुछ बहुत ही महान और बुद्धिमान नेता हैं। एक तरफ जहां सभी राजनीतिक पार्टियां 2024 के चुनाव के लिए कमर कस रही हैं, वहीं दूसरी तरफ पूरी कांग्रेस पार्टी राजनीतिक पर्यटन कर रही है, यात्रा कर रही है। दरअसल, हम 2024 के बाद यह पता लगाएंगे कि 2029 का चुनाव कैसे जीता जाए।" उन्होंने कहा कि ऐसा लगता है कि हम 2029 के चुनावों के लिए खुद को तैयार कर रहे हैं। अगर हम 2024 की तैयारी कर रहे होते, तो ऐसा नहीं होता।" गठबंधन पर कांग्रेस नेता आचार्य प्रमोद कृष्णम ने कहा, "इंडिया गठबंधन अपनी स्थापना के बाद से ही गंभीर बीमारियों से ग्रस्त रहा है। फिर वो आईसीयू में चला गया, जिसके बाद गठबंधन को वेंटिलेटर पर रखा गया। कल नीतीश कुमार ने उसका अंतिम संस्कार किया। अब इंडिया गठबंधन का क्या होगा?" वहीं, कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा, "भारत जोड़ो न्याय यात्रा का हमें असम के मुख्यमंत्री से खूब प्रचार मिला। नीतीश कुमार के विश्वासघात के बाद किशनगंज और बिहार की जनता राहुल गांधी का स्वागत कर रही है।

हमें बिहार के मुख्यमंत्री या असम के मुख्यमंत्री से कोई प्रमाणपत्र नहीं चाहिए। हमने सभी को निमंत्रण दिया है, हमने नीतीश कुमार को भी कहा था लेकिन वो तो गिरगिट निकले।" 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' के तहत पड़ोसी राज्य पश्चिम बंगाल से होते हुए बिहार पहुंचे राहुल गांधी ने कहा कि आरएसएस और भाजपा की विचारधारा ने देश में हिंसा और नफरत फैलाई है। उन्होंने कहा, ''हम नफरत के बाजार में मोहब्बत की दुकान खोलना चाहते हैं।"

उत्तराखंड के मदरसों में पढ़ाई जाएगी रामायण

वक्फ बोर्ड ने लिया बड़ा फैसला

देहरादून, 29 जनवरी (एजेंसियां)। उत्तराखंड के मदरसों में जल्द ही बच्चों को रामायण का पाठ भी पढ़ाया जाएगा। 117 मदरसों में आगामी सत्र से इसे लागू किया जाएगा। उत्तराखंड वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष शादाब शम्स ने कहा है कि वक्त बोर्ड के अंतर्गत पड़ने वाले मदरसों में बच्चों को संस्कृत पढ़ाएंगे। इसके साथ ही रामायण भी पढ़ाई जाएगी जिससे बच्चे अपनी संस्कृति से जुड़ सकें। इससे पहले उत्तराखंड के मदरसों में बच्चों को संस्कृत पढ़ाने की बात भी कही गई थी। इस फैसले का मुस्लिम मौलानाओं की ओर से जबरदस्त विरोध देखने को मिला था।

वक्ब बोर्ड के अध्यक्ष शादाब शम्स ने कहा कि उत्तराखंड में 415 मदरसे संचालित हैं, जिनमें से 117 मदरसे वक्फ बोर्ड के अधीन आते हैं। उन्होंने कहा कि मदरसों में पढ़ने वाले छात्र-छात्राएं नबियों और पैगंबरों के बारे में जानकारी के साथ-साथ श्रीराम के किरदार को भी छात्र नजदीकी से जान सकेंगे। इन मदरसों में एनसीईआरटी का पाठ्यक्रम लागू किया जा रहा है। बता दें कि वक्फ बोर्ड ने रामलला के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के बाद सभी मदरसों में श्रीराम कथा पाठ्यक्रम में शामिल करने का निर्णय लिया है। वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष शादाब शम्स ने कहा हिंदुस्तान में मुसलमानों ने धर्म परिवर्तन किया है, लेकिन अपने पूर्वजों की परंपरा को बनाए रखना उनकी प्राथमिकता है। इसलिए विकसित भारत की तर्ज पर मदरसों में भी बदलाव लाने का काम किया जा रहा है ताकि सभी धर्म, जाति के छात्र-छात्राएं उनमें शिक्षा ले सकें। कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मदरसों में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं की शिक्षा बेहतर बनाने के लिए एक हाथ में कुरान, दूसरे हाथ में लैपटाप देने का संकल्प लिया है। बच्चों को मदरसों में रामायण का पाठ पढ़ाने के लिए स्पेशल टीचर रखे जाएंगे।

जरांगे ने की मराठा कोटा के विशेषज्ञों से अपने विचार साझा करने की अपील

मुंबई, 29 जनवरी (एजेंसियां)। मराठा आरक्षण के कार्यकर्ता मनोज जरांगे ने सोमवार को विशेषज्ञों से आरक्षण के मुद्दे पर सरकार को लिखित में अपने विचार साझा करने की अपील की है। महाराष्ट्र सरकार द्वारा सभी मांगों को मानने के बाद शनिवार को 40 वर्षीय मनोज जरांगे ने अपना अनिश्चितकालीन हड़ताल खत्म किया था।

मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कहा कि जबतक मराठों को आरक्षण नहीं मिल जाता, तब तक उन्हें अति पिछड़ा वर्ग को मिलने वाला सभी लाभ मिलेगा। महाराष्ट्र सरकार ने मराठा समुदाय के सदस्यों के रक्त सबंधियों को कुनबी की मान्यता देने के लिए एक अधिसूचना जारी की है, जिनके पास कुनबी जाति के रिकॉर्ड पाए गए हैं। उन सभी को कुनबी समुदाय का माना जाएगा। जरांगे सभी मराठों के लिए कुनबी प्रमाण पत्र की मांग कर रहे थे।

विशेषज्ञों से लिखित में विचार साझा करने की अपील

जरांगे ने 20 जनवरी को जालना जिले के अपने पैतृक गांव अंतरवाली सारती से विरोध मार्च निकाला था। उन्होंने वाशी में अपना अनशन शुरू किया। हालांकि राज्य सरकार से मुलाकात के बाद उन्होंने अपना अनशन खत्म किया। सोमवार को अपने घर की तरफ प्रस्थान करने के दौरान जरांगे ने कहा, 'मराठा कोटा के लिए कानून आने वाला है। अगले 15 दिनों में लोगों को अपने विचार साझा करने के लिए कहा गया है। मराठा कोटा के विशेषज्ञ अपनी राय लिखकर सरकार को भेज सकते हैं। यह मराठा कानून को मजबूत बनाने में मदद करेगा।' जरांगे ने आगे कहा कि मराठवाड़ा में मराठों को चिंता करने की जरूरत नहीं है। उन्होंने आगे कहा, 'मराठवाड़ा के मराठों को भी आरक्षण जरूर मिलेगा। उन्हें तनावमुक्त रहना चाहिए। कुछ गांवों में हमने पाया कि वहां के रिकॉर्ड जला दिए गए हैं।' मराठा आरक्षण को लेकर महाराष्ट्र के मंत्री और ओबीसी नेता छगन भुजबल ने मुंबई में अपने आधिकारिक आवास पर एक बैठक रखी। इस बैठक में ओबीसी सांसद, विधायक और तहसीलदार शामिल हुए। राज्य सरकार के फैसले के खिलाफ एक फरवरी को विरोध प्रदर्शन किया जाएगा।

भाजपा की आरक्षण खत्म करने की साजिश : कमलनाथ

भोपाल, 29 जनवरी (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने भाजपा सरकार पर आरक्षण खत्म करने की साजिश रचने का आरोप लगाया है। कमलनाथ ने एक्स पर लिखा कि भारतीय जनता पार्टी का आरक्षण विरोधी चेहरा अब खुलकर सामने आता जा रहा है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने जिस तरह से विश्वविद्यालय में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के आरक्षण को समाप्त करने के लिए ड्राफ्ट तैयार किया है, वह अत्यंत खतरनाक प्रवृत्ति है। कमलनाथ ने ड्राफ्ट का जिक्र करते हुए कहा कि इस ड्राफ्ट में कहा गया है कि अगर उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग से योग्य उम्मीदवार नहीं मिलते तो आरक्षित सीटों को अनारक्षित कर दिया जाए। यह आरक्षण समाप्त करने की स्पष्ट साजिश है। कमलनाथ का आरोप है कि यह पहली बार नहीं हो रहा, जब भारतीय जनता पार्टी समाज के कमजोर तबके से आरक्षण छीनना चाहती है। इससे पहले मध्य प्रदेश में मेरी सरकार ने अन्य पिछड़ा वर्ग को 27 प्रतिशत आरक्षण दिया था, जिसे भाजपा की सरकार ने षड्यंत्रपूर्वक समाप्त हो जाने दिया।

'...असंतोष पैदा होगा', मराठा आरक्षण पर महाराष्ट्र सरकार के फैसले से सहमत नहीं केंद्रीय मंत्री

मुंबई, 29 जनवरी (एजेंसियां)। मराठा आरक्षण को लेकर महाराष्ट्र सरकार के फैसले से केंद्रीय मंत्री नारायण राणे सहमत नहीं है। उन्होंने इस फैसले पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि राज्य सरकार के इस कदम से अशांति फैल जाएगी। दरअसल, महाराष्ट्र सरकार ने अति पिछड़ा वर्ग को मिलने वाले सभी लाभ मराठों को आरक्षण मिलने तक देने का फैसला किया है। राज्य सरकार के इस फैसले पर सोशल मीडिया पर नारायण राणे ने आपत्ति जताई है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर केंद्रीय मंत्री नारायण राणे ने कहा, 'राज्य सरकार के इस फैसले से मैं सहमत नहीं हूं। इससे राज्य में असंतोष पैदा हो जाएगा।'

उन्होंने कहा कि वह इस मुद्दों पर प्रेस कॉन्फेरेंस करेंगे। महाराष्ट्र सरकार ने कहा कि मराठा समुदाय के सभी रक्त संबंधी, उचित रिकॉर्ड के साथ कृषक कुनबी के सदस्य थे। इससे उन्ह ओबीसी का लाभ मिल सकता है। मराठा आरक्षण के लिए कार्यकर्ता मनोज जरांगे लंबे समय से ही प्रदर्शन कर रहे थे। सरकार की तरफ से मसौदा अधिसूजना जारी करने के बाद उन्होंने अपना अनिश्चितकालीन हड़ताल खत्म किया। जरांगे ने तब तक आंदोलन जारी रखने की कसम खाई है, जब तक अधिसूचना के अनुसार मराठा समुदाय को सभी लाभ नहीं मिल जाता। उन्होंने मीडिया से बात करते हुए बताया कि सरकार ने उन्हें मसौदा दिखाया है। अंतिम अधिसूचना अभी तक जारी नहीं है। जरांगे ने आगे कहा कि उनका आंदोलन तब तक जारी रहेगा, जब तक समुदाय के एक व्यक्ति को अधिसूचना के तहत लाभ नहीं मिल जाता।

अब एक भी पेपर आउट नहीं होगा : शिक्षा मंत्री

भोपाल, 29 जनवरी (एजेंसियां)। भोपाल के एक्सीलेंस स्कूल में 'परीक्षा पे चर्चा-2024' कार्यक्रम में स्कूल शिक्षा मंत्री राव उदय प्रताप ने एक बड़ा दावा किया है। उन्होंने कहा, आगामी परीक्षाओं में एक भी पेपर आउट (लीक) नहीं होगा। पेपर लीक न हो इसके लिए एक सिस्टम डेवलप किया गया है। अगले सत्र से एक सख्त कानून भी लागू किया जाएगा।

अगले महीने से शुरू होने वाली परीक्षाओं और पेपर लीक होने के सवाल पर उन्होंने कहा, बच्चों को किसी भी तरह से सोशल मीडिया पर इस प्रकार की प्रैक्टिस में इन्वॉल्व नहीं होना चाहिए। इससे उनका खुद का नुकसान होगा। इतना ही नहीं वे आपराधिक गतिविधि के भागीदार भी होंगे।

प्रियंका को हिमाचल से राज्यसभा भेज सकती है सरकार

शिमला, 29 जनवरी (एजेंसियां)। कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी को प्रदेश सरकार हिमाचल से राज्यसभा भेज सकती है। चुनाव आयोग द्वारा सोमवार को इलेक्शन का शेड्यूल जारी करते ही सियासी गलियारों में इसे लेकर चर्चाएं तेज हो गई हैं।

दरअसल, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा का बतौर राज्यसभा सांसद अप्रैल 2024 में कार्यकाल पूरा हो रहा है। प्रदेश में इस वक्त कांग्रेस की सरकार है। अब मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू और कांग्रेस हाईकमान तय करेगा कि किसे राज्यसभा भेजा जाए। नए राज्यसभा सांसद की रेस में प्रियंका गांधी का नाम प्रमुखता से लिया जा रहा है। प्रियंका का शिमला से करीब 14 किलोमीटर दूर छराबड़ा में अपना मकान भी है।

'तमिलनाडु और पुडुचेरी में एनडीए सभी 40 सीटें जीतेगी'

लोकसभा चुनाव से पहले केंद्रीय मंत्री का दावा

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)। केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री एल मुरुगन ने लोकसभा चुनाव को लेकर एक बड़ा दावा किया है। उन्होंने कहा कि एनडीए गठबंधन इस बार तमिलनाडु और पुडुचेरी में 40 सीटें जीतेगी।

तमिलनाडु और पुडुचेरी में सभी सीटें जीतने का दावा

एल मुरुगन ने कहा, 'लोकसभा चुनाव में एनडीए गठबंधन तमिलनाडु और पुडुचेरी में सभी 40 सीटें जतेगी। इंडिया गठबंधन में पार्टियां मिली जुली है। यह सभी को मालूम है कि गठबंधन पार्टियां चुनाव के अंत तक साथ नहीं रहेगी। गठबंधन में अभी से फूट पड़ने लगी है।' मंत्री ने रविवार को अपने परिवार के साथ नामक्कल के प्रसिद्ध हनुमान मंदिर में पूजा-अर्चना की। इसके साथ ही उन्होंने जिले में भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर बड़े स्क्रीन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'मन की बात' का कार्यक्रम भी देखा। पीएम मोदी के मन की बात कार्यक्रम पर केंद्रीय मंत्री ने कहा, 'आज मन की बात का 109वां एपिसोड था। इस एपिसोड में पीएम मोदी ने छात्रों के हितों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने आगामी परिक्षाओं का सामना करने जा रहे छात्रों और पद्म भूषण और पद्म विभूषण से सम्मानित लोगों को लेकर भी बात की। मैं नीलगिरि से चुनाव लड़ूंगा या नहीं यह लीडरशिप तय करेगा।'

मन की बात कार्यक्रम में पीएम मोदी ने राम मंदिर पर की बात

मन की बात के 109 वें एपिसोड में पीएम मोदी ने अयोध्या के राम मंदिर पर प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी कहा कि भगवान राम का शासन संविधान निर्माताओं के लिए प्रेरणा है। पद्म पुरस्कार को लेकर पीएम मोदी ने कहा कि इस वर्ष शीर्ष नागरिक सम्मानों के लिए प्राप्त नामांकन 2014 की तुलना में 28 गुना अधिक थे। इस साल के पहले एपिसोड में पीएम मोदी ने कहा कि पद्म पुरस्कारों की विश्वसनीयता और सम्मान हर साल बढ़ रहा है।

नीतीश को पाले में लेकर अमित शाह ने फिर चला बड़ा दांव

पार्टी को बड़े नुकसान से बचाया

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)। एनडीए ने 2019 का चुनाव नीतीश कुमार के साथ लड़ा था। 40 में से 39 सीटें आई थीं। अगस्त 2022 में नीतीश महागठबंधन के साथ चले गए थे। नीतीश की पुरानी सरकार में मंत्री रहे सूत्र का कहना है कि इससे बिहार में एनडीए की आधी सीटें घटने की संभावना थी।

इसके अलावा कुछ असर दूसरे राज्यों में संभव था। राजद कोटे के पूर्व मंत्री ने माना कि नीतीश के भाजपा में जाने से एनडीए को कुल मिलाकर लोकसभा चुनाव में 20-22 सीटों का फायदा हो सकता है। इसे केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने बारीकी से बड़ा दांव चलकर हासिल कर लिया है। वह नीतीश को एनडीए में ले आए, लेकिन मुख्यमंत्री के हाथ और पैर बांधकर। सूत्र का कहना है कि विजय सिन्हा और सम्राट चौधरी को डिप्टी सीएम बनाने के पीछे राज यही है। तेजस्वी यादव के सचिवालय के सूत्र का कहना है कि पूर्व उपमुख्यमंत्री पिछले 4-5 दिन से तंग थे। बताते हैं राजद को नीतीश के हाव-भाव से दो सप्ताह पहले से ही पाला बदलने का एहसास था। जनवरी के दूसरे सप्ताह में इंडिया गठबंधन की बैठक में मुख्यमंत्री ने इसकी झलक दिखाई थी। बताते हैं तब राजद कोटे के एक मंत्री ने एक समारोह के दौरान सावधान किया था। मंत्री जी ने कहा था कि नीतीश बाबू को अंगूर खट्टा लगने पर वह फिर पाला बदल लेंगे। बताते हैं नीतीश कुमार के महागठबंधन में लौटकर आने के बाद से राजद उनके पाला बदलने के डर से कुछ ज्यादा मनुहार कर रहा था।

कांग्रेस के पूर्व मुख्यमंत्री का कहना है कि राहुल गांधी की पहले चरण की भारत जोड़ो यात्रा के बाद विपक्ष को बड़ी संजीवनी मिली थी। गांधी की दूसरे चरण की न्याय यात्रा के बीच में नीतीश कुमार इंडिया गठबंधन को छोड़कर चले गए। इससे भाजपा को मदद मिलेगी और इसकी भरपाई में समय लगेगा। जबकि 2024 के लोकसभा चुनाव को देखते हुए हमारे पास समय कम है। पटना के वरिष्ठ पत्रकार संजय वर्मा कहते हैं कि नीतीश को कांग्रेस और इंडिया गठबंधन से जोड़ने की पहल लालू प्रसाद यादव ने की थी। अब नीतीश कुमार कांग्रेस का नुकसान करके एनडीए में चले गए हैं। इसका घाटा पूरे विपक्ष को होगा। कांग्रेस के विधायक शकील अहमद खान का भी मानना है कि धर्म निरपेक्षता के मामले में कांग्रेस का भरोसा लालू प्रसाद पर अधिक था। हालांकि वैचारिक दृष्टि से लालू और नीतीश के करीबी नेता शिवानंद तिवारी का मानना है कि इस बार नीतीश के महागठबंधन का साथ छोडने की वजह कांग्रेस है। कांग्रेस ने नीतीश कुमार को उचित महत्व नहीं दिया। शिवानंद मानते हैं कि नीतीश महत्वाकांक्षी हैं। राजनीति में महत्वाकांक्षा खराब नहीं है, लेकिन सूझबूझ से काम लिया गया होता, तो यह स्थिति नहीं आती।

दो नेताओं के बीच में गड़बड़ाते ताल को नहीं साध पाई कांग्रेस

नीतीश कुमार ने इंडिया गठबंधन की शुरुआत के लिए तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख ममता बनर्जी से संपर्क किया था। ममता बनर्जी की हां के बाद, उन्होंने उड़ीसा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक समेत अन्य से बात की थी। कांग्रेस के सूत्र बताते हैं कि बिना कांग्रेस को पूरी तरह से विश्वास में लिए गठबंधन के लिए पहली बैठक की तारीख तय हो गई थी। लेकिन इसके बाद ममता बनर्जी और नीतीश कुमार में आपस के तालमेल नहीं बन पाए।

शबरी रसोई में 10 रुपये की चाय और टोस्ट के लिए वसूले 120 रुपये

वायरल वीडियो पर एडीए ने उठाया यह कदम

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)। अयोध्या में भगवान श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा का कार्यक्रम पूरा होने के बाद श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए कई तरह के काम किए जा रहे हैं। यहां देश के कोने-कोने से रोजाना हजारों श्रद्धालु भगवान के दर्शन के लिए पहुंच रहे हैं। उनके रहने, खाने और अन्य जरूरतों के लिए अयोध्या विकास प्राधिकरण (एडीए) ने कुछ लोगों को कांट्रैक्ट आधार पर बजट भोजनालय चलाने की जिम्मेदारी दी है।

गुजरात के एक कांट्रैक्टर को दी गई है जिम्मेदारी

ऐसा ही एक भोजनालय शबरी रसोई नाम से शुरू किया गया है। अयोध्या के टेहरी बाजार में बनी मल्टी स्टोरीज कॉमर्शियल बिल्डिंग के अरुंधति भवन में चल रहे इस भोजनालय का कांट्रैक्ट गुजरात के कवच फेसिलिटी मैनेजमेंट को दिया गया है। हाल ही में अयोध्या विकास प्राधिकरण ने इसके कांट्रैक्टर को नोटिस जारी कर श्रद्धालुओं से अधिक पैसे लेने पर तीन दिन में जवाब मांगा है। दरअसल सोशल मीडिया पर वायरल एक वीडियो में भोजनालय के भारी भरकम बिल से हड़कंप मचा हुआ है। इस बिल में 10 रुपये की चाय और टोस्ट के बदले 120 रुपये वसूले गये हैं। प्राधिकरण के मुताबिक 50 सीट वाले इस भोजनालय को 10 रुपये में चाय और दो टोस्ट देने की बात तय हुई थी। भोजनालय में खाने के अलावा रहने की भी सुविधा है। फिलहाल इसमें 100 बिस्तरों वाली डॉरमिटरी उपलब्ध है। इसमें रुकने के लिए श्रद्धालुओं को एक रात के लिए 50 रुपये देने होते हैं। हालांकि रसोई संचालकों का कहना है कि कुछ लोगों ने एक साजिश के तहत वीडियो को वायरल किया है। उन्होंने यह भी कहा कि कुछ लोग मुफ्त में खाना और नाश्ता चाहते हैं। वे ही बदनाम करने के लिए इस तरह की हरकत कर रहे हैं।

उधर, अयोध्या में भगवान श्रीराम का मंदिर बनने के बाद वहां पर सुरक्षा व्यवस्था भी मजबूत की जा रही है। इसके लिए पुख्ता कदम उठाए जा रहे हैं। यूपी पुलिस के स्पेशन कमांडो मंदिर की सुरक्षा में तैनात किए गए हैं। अब जल्द ही यूपी पुलिस यहां एंटी ड्रोन सिस्टम लगाने जा रही है। अयोध्या के साथ कई अन्य जगहों पर एंटी ड्रोन सिस्टम लगाए जाएंगे। जानकारी के मुताबिक यूपी पुलिस इजरायल से एंटी ड्रोन सिस्टम खरीदने जा रही है।

बजट में रोटी, नौकरी और मकान पर होगा फोकस 6000 से 9000 हो सकती है पीएम किसान की राशि

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)।बजट पेश होने में महज 3 दिन बचे हैं. चुनावी साल होने की वजह से सरकार का ध्यान बजट में आम आदमी को खुश करने पर होगा. ऐसे में सरकार का फोकस का रोटी, मकान, नौकरी और किसान पर ही होगा. लोगों को उम्मीद है कि अंतरिम बजट में रोजगार के मौके बढ़ाने और महंगाई को बढ़ने से रोकने के उपाय हो सकते हैं. बजट में इनको लेकर सरकार बड़े ऐलान कर सकती है. ऐसे में रोजगार के मौके बढ़ाने के लिए सरकार को बड़े कदम उठाने होंगे. हर साल लाखों युवा वर्कफोर्स का हिस्सा बन रहे हैं. इनके लिए रोजगार के मौके पैदा करना सरकार के लिए बजट में बड़ी चुनौती है. अर्थशास्त्रियों के मुताबिक, 1 फरवरी को कुछ महत्वपूर्ण घोषणाओं की उम्मीद है. इसके अलावा प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि या पीएम-किसान के तहत हस्तांतरित धन की राशि को मौजूदा 6,000 से लगभग 50% बढ़ाकर 9,000 सालाना किया जा सकता है.

रोटी पर मिलेगी राहत

कोरोना की महामारी के बाद से खाने-पीने की चीजों की कीमतों में काफी इजाफा हुआ है. खासकर दालों और कुछ खाद्य तेल की कीमतें बढ़ी हैं. रसोई गैस के सिलेंडर की कीमत भी 1000 रुपये के करीब पहुंच गई है. हालांकि, सरकार ने दो-ढाई महीने पहले इसमें कमी की थी. लेकिन, यह कमी पर्याप्त नहीं है. इसमें और कमी लाने की जरूरत है. सरकार को रोजमर्रा की चीजों की कीमतें बढ़ने से रोकने की कोशिश करनी चाहिए. इससे आम आदमी खासकर कम आय वर्ग के लोगों को बहुत राहत मिलेगी. आम आदमी की इनकम का ज्यादा हिस्सा खाने-पीने की चीजों पर खर्च हो जाता है. इसलिए इन चीजों की कीमतें बढ़ने से रोकने के ठोस उपाय होने चाहिए. उम्मीद है कि वित्तमंत्री इस बारे में बजट में कदम उठा सकती हैं.

रोजगार बढ़ेंगे

सरकार को रोजगार के मौके बढ़ाने के लिए बड़े कदम उठाने होंगे. यूनियन बजट इसके लिए बड़ा मौका हो सकता है. हर साल लाखों युवा वर्कफोर्स का हिस्सा बन रहे हैं. इनके लिए रोजगार के मौके पैदा करना सरकार के लिए बड़ी चुनौती है. एक्सपर्ट्स का कहना है कि सरकार ने मैन्युफैक्चरिंग पर फोकस बढ़ाया है. इससे रोजगार के मौके बढ़ाने में मदद मिली है. रोजगार के मौके बढ़ाने के लिए प्रोडक्शन लिंक्ड इनसेंटिव (पीएलआई) स्कीम का दायरा बढ़ाने की जरूरत है. इस स्कीम के तहत इकोनॉमी के उन सेक्टर को लाने की जरूरत है, जिनमें लेबर का ज्यादा इस्तेमाल होता है.

बढ़ सकती है पीएम किसान की राशि

बजट 2024 में किसानों को भी वित्त मंत्री खुश कर सकती हैं. मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, अंतरिम बजट में वित्तमंत्री प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की किस्त बढ़ाकर 9,000 रुपये कर सकती हैं. इससे जीडीपी पर 0.1 फीसदी का असर पड़ेगा. इससे सरकार को ज्यादा दिक्कतनहीं होगी.

3 साल में भारत करेगा कमाल, बनेगा दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी इकोनॉमी; वित्त मंत्री ने जताया भरोसा

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)।भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया में अपना डंका बजा रही है. वहीं, अब देश 3 साल में और भी कमाल करने वाला है और इतिहास बनाने वाला है. दरअसल, देश के इकोनॉमिक ग्रोथ पर पूरी दुनिया को भरोसा है. उम्मीद जताई जा रही है कि भारत जल्द दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी इकोनॉमी बन जाएगा. इस बात का संकेत वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भी दिया है. वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने पूरा भरोसा जताया है कि देश 2028 तक तीसरी सबसे बड़ी इकोनॉमी बन जाएगा।

जीडीपी का इतना है लक्ष्य

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने व्यापार के विकास और भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की जीडीपी का लक्ष्य हासिल करने में मदद करने के लिए सीमा शुल्क विभाग से अपील की है. उन्होंने कहा कि कस्टम्स डिपार्टमेंट को अपना पूरा ध्यान व्यापार बढ़ाने में लगाना चाहिए. अगर कस्टम्स डिपार्टमेंट ने नवीन प्रयोग किए तो 2027-28 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी इकोनॉमी का लक्ष्य पूरा हो जाएगा। कस्टम्स डिपार्टमेंट ने फेसलेस असेसमेंट और सिंगल विंडो क्लीयरेंस जैसी पहल की है. इसमें व्यापार की जरूरतों के हिसाब से विकास किए जाने चाहिए. 5 ट्रिलियन डॉलर के लक्ष्य में कस्टम्स डिपार्टमेंट की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रहने वाली है. इस लक्ष्य में सभी को अपना योगदान देना चाहिए।

रेटिंग एजेंसी का अनुमान

वित्त मंत्री के अलावा एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स को भी भारत की इकोनॉमी पर भरोसा है. रेटिंग एजेंसी के मुताबिक, भारत 2030 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा. एसएंडपी का अनुमान है कि भारत की नाम जीडीपी 2022 में 3.5 ट्रिलियन डॉलर से बढ़कर 2030 तक 7.3 ट्रिलियन डॉलर हो जाएगी. एसएंडपी के मुताबिक, भारत को सेवा-प्रधान अर्थव्यवस्था से विनिर्माण-प्रमुख अर्थव्यवस्था में बदलने के लिए एक मज़बूत लॉजिस्टिक्स ढांचा विकसित करना ज़रूरी होगा. वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भी भरोसा जताया है कि भारत 2028 तक तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

बजट से पहले अडानी की कंपनियों का कमाल

कुछ ही घंटों में किया मालामाल

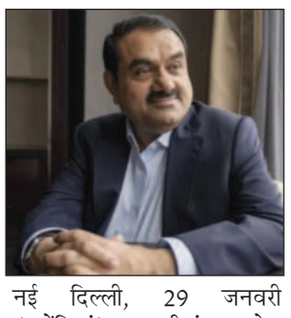

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)। अडानी इंटरप्राइजेज के शेयरों में आज कारोबारी सत्र के दौरान 6 फीसदी से ज्यादा का इजाफा देखने को मिला और कंपनी का शेयर 3092 रुपए के साथ दिन के हाई पर पहुंच गया। जिसकी वजह से कंपनी के मार्केट कैप में 22,509.32 करोड़ रुपए का इजाफा देखने को मिला। अडानी पोर्ट एंड एसईजेड के शेयरों में आज कारोबारी सत्र के दौरान 4 फीसदी से ज्यादा का इजाफा देखने को मिला और कंपनी का शेयर 1204.80 रुपए के साथ दिन के हाई पर पहुंच गया। जिसकी वजह से कंपनी के मार्केट कैप में 12,561.21 करोड़ रुपए का इजाफा देखने को मिला। अडानी पोर्ट एंड एसईजेड के शेयरों में आज कारोबारी सत्र के दौरान 4 फीसदी से ज्यादा का इजाफा देखने को मिला और कंपनी का शेयर 1204.80 रुपए के साथ दिन के हाई पर पहुंच गया। जिसकी वजह से कंपनी के मार्केट कैप में 12,561.21 करोड़ रुपए का इजाफा देखने को मिला। अडानी एनर्जी सॉल्यूशंस में आज कारोबारी सत्र के दौरान करीब 4 फीसदी की तेजी देखने को मिली और कंपनी का शेयर 1135.80 रुपए के साथ दिन के हाई पर पहुंच गया। जिसकी वजह से कंपनी के मार्केट कैप में 8,421.97 करोड़ रुपए का इजाफा देखने को मिला। अडानी ग्रीन एनर्जी में आज कारोबारी सत्र के दौरान 3 फीसदी से ज्यादा की तेजी देखने को मिली और कंपनी का शेयर 1750 रुपए के साथ दिन के हाई पर पहुंच गया। जिसकी वजह से कंपनी के मार्केट कैप में 13,543.48 करोड़ रुपए का इजाफा देखने को मिला। अडानी टोटल गैस में आज कारोबारी सत्र के दौरान 3 फीसदी से ज्यादा की तेजी देखने को मिली और कंपनी का शेयर 1051 रुपए के साथ दिन के हाई पर पहुंच गया। जिसकी वजह से कंपनी के मार्केट कैप में 5,236.04 करोड़ रुपए का इजाफा देखने को मिला। अडानी विल्मर अडानी टोटल गैस में आज कारोबारी सत्र के दौरान करीब 3 फीसदी की तेजी देखने को मिली और कंपनी का शेयर 364 रुपए के साथ दिन के हाई पर पहुंच गया। जिसकी वजह से कंपनी के मार्केट कैप में 1675.66 करोड़ रुपए का इजाफा देखने को मिला।एसीसी लिमिटेड में आज कारोबारी सत्र के दौरान 3 फीसदी से ज्यादा की तेजी देखने को मिली और कंपनी का शेयर 2563.95 रुपए के साथ 52 हफ्तों के हाई पर पहुंच गया।

इस सरकारी कंपनी का बंपर रिजल्ट,मुनाफा बढ़कर हुआ 2843 करोड़

55 फीसदी डिविडेंड देने का ऐलान

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)। सरकारी नेचुरल गैस कंपनी गेल (इंडिया) का रिजल्ट आ गया है। कंपनी को वित्त वर्ष 2023-24 की तीसरी तिमाही में शानदार मुनाफा हुआ है। तीसरी तिमाही में कंपनी के मुनाफे में बढ़ोतरी देखने को मिली है। इसी तिमाही में कंपनी की आय में भी बढ़ोतरी हुई है। कंपनी का कंसोलिडेटेड मुनाफा 2302 करोड़ रुपये रहा है। तीसरी तिमाही में कंपनी का कंसोलिडेटेड मुनाफा 2302 करोड़ रुपये रहने की संभावना थी। कंपनी ने अच्छे नतीजों से उत्साहित होकर 55 फीसदी डिविडेंड देने का भी ऐलान किया है। कंपनी की इनकम में भी इजाफा हुआ है। गेल की कंसोलिडेटेड इनकम बढ़कर 34254 करोड़ रुपये रही है। कंसोलिडेटेड आय का 35070 करोड़ रुपये रहने का अनुमान था। वित्त वर्ष 2023-24 की तीसरी तिमाही में गेल का कंसोलिडेटेड मुनाफा तिमाही आधार पर बढ़कर 2843 करोड़ रुपये रहा, जबकि पिछली तिमाही में कंपनी का कंसोलिडेटेड मुनाफा 2405 करोड़ रुपये रहा था। गेल (इंडिया) लिमिटेड के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक संदीप कुमार गुप्ता के मुताबिक, कंपनी का तिमाही के दौरान सभी प्रमुख व्यावसायिक क्षेत्रों में भौतिक प्रदर्शन में सुधार हुआ है। क्षमता का बेहतर इस्तेमाल, संयंत्र को और इफेक्टिव बनाने जैसे उपायों के चलते पेट्रोकेमिकल सेगमेंट लाभदायक हो गया है। बताया कि कंपनी का ऑपरेटिंग से राजस्व वित्त वर्ष 24 की तीसरी तिमाही तक 1,00,666 करोड़ रुपये रहा, जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि में यह 1,12,611 करोड़ रुपये था। क्यू3 एफवाई24 तक के लिए पीबीटी 45% बढ़कर 9,496 करोड़ रुपये हो गया, जबकि क्यू3 एफवाई23 तक के लिए यह 6,567 करोड़ रुपये था। क्यू3 एफवाई24 तक पीबीटी 49% बढ़कर 7,431 करोड़ रुपये हो गया, जबकि क्यू 3 एफवाई23 तक 4,982 करोड़ रुपये था।सरकारी नेचुरल गैस कंपनी गेल (इंडिया) लिमिटेड के शेयर में आज शानदार तेजी देखने को मिली है। शेयर बाजार 7 फीसदी से ज्यादा उछाल के साथ 172.50 रुपये के स्तर पर बंद हुए हैं।

1 फरवरी नहीं इस दिन पेश होता था बजट, मोदी सरकार ने बदली प्रथा

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)।देश का बजट पेश होने में महज कुछ ही दिन बचे हैं। 3 दिन बाद एक फरवरी को संसद में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण बजट 2024 पेश करेंगी। इस साल चुनाव होने हैं तो इसे चुनावी बजट भी माना जा रहा है और अंतरिम बजट पेश किया जाएगा। बजट को लेकर लोगों के मन में कई तरह सवाल होते हैं। जैसे बजट शब्द कहां से आया, कितना था देश का पहला बजट, किसने पेश किया कब पेश किया गया। आपको जानकर हैरानी होगी लेकिन देश का बजट पहले 1 फरवरी को पेश नहीं किया जाता था बल्कि फरवरी के आखिरी दिन पेश होता था। मगर मोदी सरकार ने बजट से जुड़ी पुरानी परंपरा को बदलते हुए बजट की तारीख बदल दी। आइए जानते हैं क्यों... केंद्र सरकार हर साल नए वित्त वर्ष की शुरुआत से पहले आगामी वित्त वर्ष के व्यय और राजस्व का ब्यौरा पेश करती है। इसके बाद सरकार इस बजट को संसद के दोनों सदनों से पास करवाती है। देश में बजट पेश करने की शुरुआत ब्रिटिश काल में ही 1860 में हुई थी। साल 2017 से पहले देश का बजट फरवरी के आखिरी दिन में पेश किया जाता था, लेकिन उस समय के तत्कालीन वित्त मंत्री अरुण जेटली ने बजट की 92 साल पुरानी परंपरा में बदलाव करते हुए इसे 1 फरवरी को पेश करने का फैसला किया था। इसके बाद से लेकर अब तक हर साल बजट 28 या 29 फरवरी के बजाय 1 फरवरी को पेश किया जाता है।

रिलायंस की बदौलत शेयर बाजार जोरदार तेजी के साथ हुआ बंद, निवेशकों की संपत्ति में 6 लाख करोड़ रुपये का उछाल

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)।तीन दिनों की लंबी छुट्टी के बाद इस हफ्ते का पहला कारोबारी सत्र भारतीय शेयर बाजार के लिए बेहद शानदार रहा। बाजार में बजट पेश होने से पहले जबरदस्त तेजी देखने को मिली है। रिलायंस इंडस्ट्रीज के अगुवाई में सेंसेक्स में 1200 से ज्यादा और निफ्टी में करीब 400 अंकों की तेजी देखने को मिली है। आज का कारोबार खत्म होने पर बीएसई सेंसेक्स 1241 अंकों के उछाल के साथ 71,941 और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 385 अंकों के उछाल के साथ 21,737 अंकों पर बंद हुआ है। बाजार के मार्केट कैपिटलाइजेशन में 6 लाख करोड़ रुपये का इजाफा देखने को मिला है।

मार्केट कैप में 6 लाख करोड़ का उछाल

शेयर बाजार में शानदार तेजी के चलते निवेशकों के संपत्ति में जोरदार बढ़ोतरी आई है। बीएसई पर लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैप 377.13 लाख करोड़ रुपये पर जा पहुंचा है जबकि पिछले कारोबारी सत्र में मार्केट कैप 371.28 लाख करोड़ रुपये रहा था। यानि आज के ट्रेड में निवेशकों की संपत्ति में 5.85 लाख करोड़ रुपये का उछाल देखने को मिला है।

सेक्टर का हाल

आज के कारोबारी में रिलायंस इंडस्ट्रीज और ओएनजीसी के स्टॉक में बड़ी तेजी के चलते एनर्जी इंडेक्स 1820 अंकों या 5.17 फीसदी के उछाल के साथ बंद हुआ है। इसके अलावा बैंकिंग, ऑटो, फार्मा, मेटल्स, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स, हेल्थकेयर और ऑयल एँड गैस सेक्टर के स्टॉक्स में बड़ी तेजी के साथ बंद हुए। केवल एफएमसीजी स्टॉक्स में गिरावट रही। आज के कारोबार में मिड कैप और स्मॉल कैप शेयर भी बड़ी तेजी के साथ बंद हुए। सेंसेक्स के 30 शेयरों में 26 तेजी के साथ और 4 गिरकर बंद हुए। जबकि निफ्टी के 50 शेयरों में 38 तेजी के साथ और 12 गिरकर बंद हुए। आज रिलायंस इंडस्ट्रीज का स्टॉक 6.86 फीसदी के उछाल के साथ अपने लाइटाइम हाई 2896 रुपये, टाटा मोटर्स 3.62 फीसदी, पावर ग्रिड 3.40 फीसदी, लार्सन 3.25 फीसदी की तेजी के साथ बंद हुआ है। आईटीसी 1.20 फीसदी, इंफोसिस 0.89 फीसदी, टेक महिंद्रा 0.53 फीसदी की गिरावट के साथ बंद हुआ है।

सोना हुआ महंगा, चांदी की भी बढ़ी चमक, आज क्या है 10 ग्राम गोल्ड का रेट

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)। भारतीय सर्राफा बाजार में आज, 29 जनवरी, 2023 को सोना और चांदी महंगा हुआ है। मजबूत ग्लोबल ट्रेड के बीच भारतीय सर्राफा बाजार में दस ग्राम सोना महंगा होकर 63,100 रुपये का हो गया है। एक किलो चांदी की दरों में भी मजबूती आई है और अब यह 76,400 रुपये में बिक रही है। एचडीएफसी सिक्योरिटीज ने यह जानकारी दी है। दिल्ली सर्राफा बाजार में सोमवार को सोने का भाव 200 रुपये की तेजी के साथ 63,100 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ। पिछले कारोबारी सत्र में सोने की कीमत 62,900 रुपये प्रति 10 ग्राम थी।

आज कितने पर पहुंच गई चांदी ?

चांदी की कीमत भी 200 रुपये उछलकर 76,400 रुपये प्रति किलोग्राम पर जा पहुंची।

विदेशी बाजारों में सोने में तेजी

वैश्विक बाजारों में सोना बढ़कर 2,031 डॉलर प्रति औंस हो गया, जबकि चांदी उछाल के साथ 22.99 डॉलर प्रति औंस हो गई। उल्लेखनीय है कि आप इन रेट्स को आसानी से घर बैठे पता लगा सकते हैं।

इसके लिए आपको सिर्फ इस नंबर 8955664433 पर मिस्ड कॉल देना है और आपके फोन पर मैसेज आ जाएगा, जिसमें आप लेटेस्ट रेट्स चेक कर सकते हैं।हाल में सरकार ने सोने-चांदी पर लगने वाली इंपोर्ट ड्यूटी पर बड़ा फैसला किया है। वित्त मंत्रालय ने सोने, चांदी और कीमती धातुओं के सिक्कों पर इंपोर्ट ड्यूटी मौजूदा 10 फीसदी से बढ़ाकर 15 फीसदी कर दिया है।

मुकेश अंबानी की कंपनी ने बनाया रिकॉर्ड 5 घंटे में की 1.25 लाख करोड़ की कमाई

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)।रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयर की कीमत सोमवार को रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गई। कंपनी का मार्केट कैप भी 19.50 लाख करोड़ को पार कर गया। बीएसई पर रिलायंस का शेयर करीब 7 फीसदी की तेजी के साथ 2897.40 रुपए की नई ऊंचाई पर पहुंच गया। बीएसई पर, रिलायंस के शेयर की कीमत 6.90 फीसदी उछलकर 2897.40 की रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गई। वहीं दूसरी ओर निफ्टी 50 इंडेक्स पर आरआईएल स्टॉक टॉप गेनर में रहा। निफ्टी 50 की बढ़त में आरआईएल के शेयरों ने लगभग 89 अंकों का योगदान दिया। निफ्टी 50 इंडेक्स 303.70 अंक या 1.79 फीसदी बढ़कर 21,734.55 पर कारोबार कर रहा था। इस तेजी की वजह से रिलायंस के मार्केट कैप में 285 मिनट में 1.25 लाख करोड़ रुपए का इजाफा देखने को मिला और कंपनी का कुल मार्केट कैप रिकॉर्ड 19.60 लाख करोड़ रुपए के करीब पहुंच गया। रिलायंस इंडस्ट्रीज देश की सबसे वैल्यूएबल कंपनी है। जानकारों की मानें तो बजट से पहले कंपनी का मार्केट कैप 20 लाख करोड़ रुपए को पार कर सकता है।देश की सबसे बड़ी कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज का शेयर 2900 रुपए के लेवल के करीब पहुंच गया है, जो एक रिकॉर्ड है। बांबे स्टॉक एक्सचेंज पर रिलायंस इंडस्ट्रीज का शेयर करीब 7 फीसदी की तेजी के साथ 2,899.40 रुपए के साथ 52 हफ्तों के हाई पर पहुंच गया। वैसे कंपनी का शेयर 6.70 फीसदी की तेजी के साथ 2891.95 रुपए पर कारोबार कर रहा है। वैसे आज कंपनी का शेयर 2713.20 रुपए पर ओपन हुआ था। पिछले एक महीने में रिलायंस के शेयरों में लगभग 9 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है, जबकि तीन महीनों में स्टॉक में 24 फीसदी से ज्यादा का इजाफा देखने को मिला है।। रिलायंस के शेयर ने 3 साल में 53 फीसदी का रिटर्न दिया है।

5 घंटे में 1.25 लाख करोड़ की कमाई

वहीं दूसरी ओर रिलायंस इंडस्ट्रीज ने 5 घंटे में 1.25 लाख करोड़ रुपए की कमाई की है। आंकड़ों के अनुसार कंपनी का शेयर 2 बजकर 15 मिनट पर रिकॉर्ड हाई पर पहुंच गया था, तब कंपनी का मार्केट कैप 19,59,370.53 करोड़ रुपए पर पहुंच गया था। जबकि पिछले हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन कंपनी का मार्केट कैप 18,33,737.6 करोड़ रुपए था।

दैनिक पंचांग

ग्रह गोचर

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य-	मकर में	मकर..	05-53 बजे
चंद्र-	कन्या में	कुंभ...	07-44 बजे
मंगल	धनु में	मीन ..	09-21 बजे
बुध-	धनु पें	मेष--	10-57 बजे
गुरु-	मेष में	वृष--	12-42 बजे
शुक्र-	धनु में	मिथुन..	14-42 बजे
शनि-	कुंभ में	कर्क...	16-55 बजे
राहु-	मीन में	सिंह...	19-06 बजे
केतु-	कन्या में	कन्या..	21-13 बजे
		तुला.....	23-18 बजे
		वृश्चिक	00-29 बजे
		धनु.....	03-46 बजे

श्री पिंगल नामक संवत्सर-विक्रम संवत्- **2080**
शक संवत् **-1945,** सूर्य -उत्तरायणे - ऋतु- शिशिर
महावीर निर्वाण संवत् **-2550,**हिजरी सन् **-1444**
कलियुग अवधि-**432000** सूर्योदय - 06-52 सूर्यास्त. - 18-06
भोग्य कलि वर्ष-**426876**
कलियुग संवत् **-5124** वर्ष,
कल्पारंभ संवत् **-1972949124**
सृष्टि ग्रहारंभ संवत्-**1955885124**
दिशाशूल -- उत्तर - गुड खाकर घर से निकले
तिथि- चतुर्थी - **08 -54** - तक उपरान्त पंचमी
मास - माघ कृष्ण पक्ष , मंगलवार **30 January**
नक्षत्र - उ.फाल्गुनी - **22 - 05** - तक उपरान्त हस्त
योग - अतिगण्ड - **10 - 42** - तक उप सुकर्मा
करण- बालव - **08 -54** - तक उप- कौलव
विशेष:- व्रत -त्योहार - **गांधी पुण्य दि.**

विशेष:- राशिफल "हों के गोचर के आधार पर लिखा गया है।सूक्ष्म फलादेश क लिए जन्म पत्रिका की सूक्ष्म स्थिति जानने के लिए जन्म कुण्डली दिखाना चाहिए।

राहुकाल 15:19 से 16:44 तक

श्री पंचागुली ज्योतिष केन्द्र Hyd,Sec

दिन का चौघड़िया		रात का चौघड़िया	
रोग	06:52 - 08:15 अशुभ	काल.	18:06 - 19:44 अशुभ
उत्पात	08:15 - 09:40 अशुभ	लाभ	19:44 - 21:19 शुभ
चंचल	09:40 - 11:05 शुभ	उत्पात	21:19 - 22:54 अशुभ
लाभ	11:05 - 12:29 शुभ	शुभ	22:54 - 24:29 शुभ
अमृत	12:29 - 13:54 शुभ	अमृत	24:29 - 02:04 शुभ
काल.	13:54 - 15:19 अशुभ	चंचल	02:04 - 03:39 शुभ
शुभ.	15:19 - 16:44 शुभ	रोग	03:39 - 05:15 अशुभ
रोग	16:44 - 18:06 अशुभ	काल	05:15 - 06:52 अशुभ

आपका राशिफल

मेष (चू,चे, चो, ला, ली, लू , ले, लो, अ,)

आज आप एक आमंत्रक की भूमिका में रहेंगे ! इसलिए एक मेजबान की जगह एक आयोजक की भूमिका में रहे , आप दोनों ही मामलो में अच्छी राशि पाएंगे परन्तु एक आयोजक की भूमिका लाभप्रद होगी । यह आपकी जन्मजात क्षमताओं में से एक है सिर्फ आप उसकी पहचान नहीं कर पाये थे ।

वृष (ई, उ, ए, जो, वा, वी, वू, वे, वो,)

जब लोहा गर्म हो तो उस पर निशाना लगाये ! यह विशेष रूप से प्रेरक वक्ताओं की भूमिका या इसी तरह की भूमिका वालो के लिए एक महान दिन है। आज आप जनता के साथ बेहतर संवाद करने में सक्षम होंगे और आपको उस के लिए उच्च भुगतान भी किया जा सकता है। तो आप आगे बढे और इस तरह प्रदर्शन करे की लोग आप की बातें सुनने के लिए लालायित रहे ।

मिथुन (का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, ह,)

आज का दिन सट्टा उद्यम के लिए उपयुक्त है पर बिना सोचे समझे कोई निर्णय न ले । अगर आप गणना करके जोखिम लेंगे तो लाभ में रहेंगे परन्तु याद रखे अज्ञानता में लिए गया फैसला नुकसान दिला सकता है इसलिए फिलहाल लाटरी के मकड़जाल में न फसे । बिना सोचे समझे सट्टा खेलना या निवेश करना हानिकारक है ।

कर्क (ही, हू ,हे , हो, डा , डी, डू, डे, डो,)

अपने स्वयं के वित्त एवं धन का नियंत्रण लेना आप के लिए अब बहुत महत्वपूर्ण है और आप इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत से डरते नहीं हैं । आज आप बहुत संगठित और अनुशासित हैं और आप बहुत ही व्यावहारिक तरीके से अपने कार्य क्षेत्र और कैरियर के मुद्दों से निपटने के लिए तैयार हैं।

सिंह (मा, मी ,मू ,मे, मो, टा, टी ,टू ,टे,)

कुछ समय से आपके व्यय बढ रहे थे पर आज से आप इन सब में एक खुशनुमा बदलाव देखेंगे । आखिरकार आपका भाग्य आपका साथ देगा और आपके खर्चे काफी हद तक नियंत्रण में आयेंगे और माहौल बदलता हुआ सा नजर आएगा जिससे आपकी आमदनी बढ़ेगी पर आपको अत्यधिक सावधानी से आगे बढ़ना है । जल्दबाजी में लिए गया हुआ कदम आपको पीछे की और धकेल सकता है ।

कन्या (टो, पा, पी, पू ,ष, ण, ठ, पे ,पो,)

दिन की शुरुआत में ही अपने सभी कार्य खत्म करने की कोशिश करे ! आपको दिन के उत्तरार्द्ध में काम करने का मौका नहीं मिलेगा । किसी भी क्रय या विक्रय में सावधानी बरते अन्यथा आप धोखाधड़ी के शिकार हो सकते है । आपको अपनी इच्छा शक्ति पर एक मजबूत नियंत्रण करना होगा , ताकि आप अपने खर्च को संतुलित कर पाए ।

तुला (रा, री, रू ,रे ,रो , ता, ती, तू ,ते,)

ग्रहों की स्थिति में परिवर्तन के कारण , एक नई ऊर्जा का संचार आप में हो सकता है । आप जीवंत महसूस करेंगे । आप में अधिक से अधिक काम लेने की इच्छा आप में प्रबल होगी और तब भी आप खुश रहेंगे । इससे पता चलता है की चीज़े सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ रही है। लेकिन इस उत्साह में , अपने स्वास्थ्य को नजरअंदाज न करे । एक स्वस्थ मन एक स्वस्थ शरीर में रहता है।

वृश्चिक (तो,ना,नी, ने,नू, नो, या, यी ,यू,)

आज का दिन शेयर बाजार में निवेश के लिए उत्तम है परन्तु आपको अपने निवेश को लेकर सतर्क रहना होगा । आज के दिन अगर आप वाहन , दवाई या सौन्दर्य प्रसाधन उद्योग में निवेश करेंगे तो वो काफी फायदेमंद साबित होगा । ये बहुत जरुरी है की आप अपने निवेश को दोबारा परखे और जहा जरुरी हो उसमे बदलाव लाये जिससे की आपकी लाभ की सीमा बढे ।

धनु (ये, यो,भा, भी, भू धा ,फा, ढा, भे)

आप अपने करियर की एक बड़ी सफलता के कगार पर खड़े है। ये आपके निर्णायक निर्णय पर निर्भर करेगा की आप इसे किस दिशा में ले जाना चाहते है। इसके लाभ और हानि पर आपको विश्लेषण करने की जरूरत है। आपका निर्णय आपके जीवन को प्रभावित करेगा और अगर आप सही विकल्प का चुनाव करते हैं, तो आपकी आय में अगले कुछ दिनों में काफी वृद्धि होने की संभावना है।

मकर (भो, जा, जी, खो, खू, खे, खो, गा, गी)

आज आपके समान हित के लोगों या एक समान व्यवसाय करने वालो के साथ वार्तालाप होगी । आपको इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए एवं दूसरों को बढ़ावा एवं प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि बदले में वे भी आपको समर्थन दे । आपको उन लोगों से ज्यादा उम्मीद नहीं करनी चाहिए क्यों की चीजे धीरे धीरे खुलती है और लोगो को नयी वस्तु या व्यक्ति पर भरोसा करने में समय लगता है ।

कुंभ (गू, गे ,गो, सा, सी, सू, से, सो, दा,)

आप अपने रास्ते में एक महान अवसर की बाट देख रहे थे और इस तरह के अवसर के लिए ये सबसे अच्छा समय है। अगर आपने साक्षात्कार दिया है, तो उस मोर्चे पर आज अच्छी खबर मिल सकती है । अप्रत्याशित जगहों से नौकरी के अवसर आपको मिल सकते है या कुछ पुराने संपर्कों से भी आप आगे की और बढ़ सकते है ।

मीन (दी, दू,थ, झ, ञ, दे, दो, चा,ची)

आपका धैर्य , कर्तव्य और जिम्मेदारी की अपनी भावना आपके रास्ते में आ रही सभी बाधाओं को दूर करने में सहायक सिद्ध होगी । आपको अपने हास्य क्षमता को जागृत करना होगा ताकि आपका कार्य क्षेत्र में एक अच्छे माहौल का निर्माण हो सके जिससे की आप आराम से अपने कार्य को कर सके । दिन के अंत में एक गंभीर वित्तीय लाभ का मौका आपको मिल सकता है।

पं ।महेशचन्द्र शर्मा 9247132654, 8309517693

बिहार में बिना नीतीश क्यों नहीं चलती सरकार

कम सीटें फिर भी सीएम क्यों, 4 वजहों से उनके पास सत्ता की चाबी

पटना, 29 जनवरी (एक्सक्लूसिव डेस्क)। जेडीयू के पास महज 45 विधायक हैं। इसके बावजूद नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री बनाया गया है। राजद गठबंधन में भी कम सीटों के बावजूद नीतीश मुख्यमंत्री रहे। पिछले 18 सालों से बिहार में नीतीश किंगमेकर नहीं, किंग बनते आ रहे हैं। इस दौरान सिर्फ 9 महीने के लिए जीतन राम मांझी बिहार के सीएम बने थे, वह भी नीतीश की कृपा से। नीतीश के बिना बिहार में सरकार चलाना मुश्किल क्यों हो गया है और कैसे 2 दशकों से उनके हाथ में सत्ता की चाबी है, इसकी पडताल करती रिपोर्ट।

2010 के विधानसभा चुनाव में नीतीश कुमार की जेडीयू पार्टी को सबसे ज्यादा 22.58% वोट मिला था। जबकि इससे पहले 2005 के चुनाव में नीतीश को 20.46% वोट मिले थे। इसके बाद 2015 में नीतीश कुमार 17 साल पुरानी दोस्ती तोड़कर एनडीए से अलग हो गए। इस बार चुनाव में उन्हें 71 सीटों पर जीत मिली। वहीं, 2020 में विधानसभा चुनाव हुआ तो जदयू को सिर्फ 43 सीटों पर जीत मिलीं। इसके बाद साल-दर-साल नीतीश का वोट प्रतिशत घटता गया है।

जेडीयू को 2010 में 22.5% वोट मिला था जो 2015 में घटकर 16.8% रह गया। वहीं, बीजेपी का वोट शेयर 2010 में करीब 16.5% था जो 2015 में बढ़कर करीब 24.5% हो गया। भले ही जदयू का वोट शेयर 6% घटा हो, लेकिन अब भी बिहार में उसके बिना सरकार बनाना मुश्किल है। बिहार में नीतीश कुमार का कोर वोट बैंक 16% है। उनके वोट शेयर पर उनके पाला बदलने से कोई असर नहीं होता है। वह बिहार में कोइरी, कुर्मी और महादलित समुदाय के सबसे बड़े नेता हैं। इस समुदाय के लोगों के लिए नीतीश कुमार प्राइड इश्यू हैं। यही वजह है कि नीतीश कुमार को साथ रखना बीजेपी और आरजेडी दोनों की मजबूरी है।

2003 में नीतीश के साथ मिलकर जॉर्ज फर्नांडिस ने 2003 में नई पार्टी जनता दल यूनाइटेड बनाई। इस वक्त जॉर्ज इस पार्टी के दूसरे सबसे बड़े नेता थे। 2009 आते-आते नीतीश जितना मजबूत हो गए थे, जॉर्ज उतना ही कमजोर हो गए। दोनों नेताओं के बीच खटास पैदा हो गई थी। खराब सेहत का हवाला देते हुए नीतीश ने जॉर्ज को 2009 लोकसभा चुनाव में टिकट ही नहीं दिया। जॉर्ज ने मुजफ्फरपुर से निर्दलीय चुनाव लड़ा, लेकिन हार गए। इस तरह नीतीश ने अपने राजनीतिक गुरु को हमेशा के लिए साइडलाइन कर दिया। यह पहला और आखिरी मौका नहीं था। जो भी नीतीश के फैसले के बीच में आया, सबको उन्होंने अपने रास्ते से हटा दिया।

पार्टी के शुरुआती दिनों के नेता दिग्विजय सिंह, शरद यादव को भी नीतीश कुमार ने जॉर्ज की तरह ही साइड लाइन कर दिया। अब जब ललन सिंह जदयू को

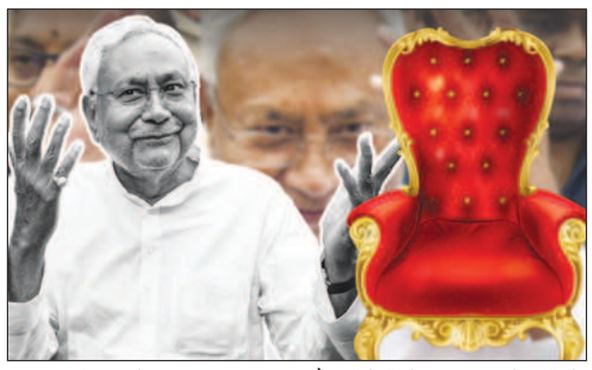

महागठबंधन के साथ रखना चाहते थे तो नीतीश ने सबसे पहले उन्हें अध्यक्ष पद से हटाया। जब पूरी तरह से पार्टी पर नीतीश की पकड़ मजबूत हुई, तब जाकर उन्होंने बीजेपी के साथ सरकार बनाने का फैसला किया। जदयू में सबसे मजबूत नेता की छवि ने ही उन्हें बिहार की राजनीति में इतना ताकतवर बनाया है।

एक मुख्यमंत्री के रूप में नीतीश कुमार बिहार की राजनीति में विवादों से दूर रहे हैं। इससे प्रदेश में उनकी साख मजबूत हुई है। बीजेपी नेता अरुण जेटली ने 2005 के विधानसभा चुनाव से पहले नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री बनाने का फैसला किया। उनका यह फैसला सटीक बैठा। लालू यादव के शासन के बाद 2005 और 2010 के बीच नीतीश कुमार ने बिहार में बिजली, सड़क और अपराध रोकने पर अच्छा काम किया। इससे उनकी छवि मजबूत हुई। लोग उन्हें 'सुशासन बाबू' कहने लगे। इस तरह नीतीश कुमार प्रदेश में पसंदीदा सीएम बनकर उभरे।

बिहार की राजनीति में लालू यादव की पार्टी राजद को एम-वाय यानी मुस्लिम-यादव समीकरण वाली पार्टी के रूप में जाना जाता है। 1990 के बाद से ही राजद के बड़े नेता अपने मूल वोट बैंक को साधने में ही लगे रहे। इसकी वजह से दूसरी जातियों का वोट राजद को न के बराबर मिलता रहा।

इसी समय 30% से ज्यादा ईबीसी समुदाय और एससी को साधने की कोशिश नीतीश कुमार और उनकी पार्टी ने की। उन्हें 2010 के विधानसभा चुनाव में काफी सफलता भी मिली। इस बार विधानसभा चुनाव में इन्हें 22% से ज्यादा वोट मिला। हालांकि 2020 विधानसभा चुनाव में तेजस्वी ने 10 लाख रोजगार का वादा किया। उन्होंने कहा कि राजद सिर्फ एव-वाय पार्टी नहीं बल्कि ए टू जेड पार्टी है, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। नीतीश अपने वोट बैंक को साधकर मजबूत नेता बन चुके थे।

बीजेपी के साथ गठबंधन में रहकर नीतीश कुमार पहले से ज्यादा मजबूत नेता बनकर उभरे। इस गठबंधन के पक्ष में एक खास बात यह है कि बीजेपी का वोटर बेस सवर्ण जाति, गैर-यादव अन्य पिछड़ी जातियों और अत्यंत पिछड़ा वर्ग है। वहीं, नीतीश की पार्टी का ईबीसी, गैर-यादव ओबीसी के साथ-साथ लव-कुश (कुर्मी-कोइरी), महादलित (एससी) मुख्य वोट बैंक है। यही वजह है कि गठबंधन में होने पर इन जातियों के वोट दोनों दलों को थोक में मिलते हैं।

नीतीश ने बिहार में खुद को एक विकासवादी मुख्यमंत्री के चेहरे के रूप में पेश किया है। वहीं, बीजेपी में नरेंद्र मोदी की इमेज भी विकास पुरुष की है। लंबे समय तक साथ रहने के कारण जेडीयू और बीजेपी के विधायक आपस में सामंजस्य के साथ काम करते नजर आते रहे हैं। बीजेपी के साथ रहने से नीतीश की पार्टी को फायदा ही मिला है।

बिहार में जाति की राजनीति सबसे मजबूत है। बीजेपी और राजद नीतीश कुमार के वोट बैंक में सेंध लगाने में सफल नहीं हो पाई हैं। यही वजह है कि अपने करीब 16% ईबीसी वोट बैंक के बल पर नीतीश कुमार सत्ता के केंद्र में बने हुए हैं। सोशल इंजीनियरिंग और धर्म के नाम पर बीजेपी भले ही यूपी में जाति समीकरण को तोड़ने में कामयाब रही हो, लेकिन बिहार में वो कामयाब नहीं हो पाई है।

इसके अलावा पार्टी पर पूरी तरह से कंट्रोल होने की वजह से नीतीश पसंदीदा लोगों को टिकट देते हैं। यही वजह है कि इनके विधायकों के टूट की संभावना बेहद कम होती है। वो जितनी बार चाहे पाला बदल लें, उनके विधायक उनके साथ रहेंगे। राजद, बीजेपी या बिहार के किसी दूसरे दल में नीतीश के कद का नेता नहीं होना भी उनके मुख्यमंत्री होने की एक वजह है।

ब्लेड से हमला करने वाला शातिर पुलिस के हत्थे चढ़ा

कोर्ट में पेश कर भेजा जेल

कोरबा, 29 जनवरी (एजेंसियां)। मानिकपुर पुलिस ने उस आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। जिसने आपसी विवाद में एक व्यक्ति के ऊपर ब्लेड से हमला किया था। आरोपी का नाम संजय सोनवानी है। जिसने कन्हैया रात्रे पर हमला किया था। जिसकी शिकायत पर हरकत में आई पुलिस ने जांच शुरु की। उसे गिरफ्तार कर लिया। आरोपी के खिलाफ विभिन्न धराओं के तहत कार्रवाई की जा रही है। कोर्ट में पेश करने के बाद उसे जेल भेज दिया गया है।

मानिकपुर चौकी अंतर्गत आनन्दम विहार के पास शनिवार की शाम ब्लेड से हमला करने का मामला सामने आया था। जहां आरोपी संजय और कन्हैया के बीच किसी बात को लेकर विवाद हो गया। विवाद इतना बढ़ गया कि दोनों के बीच गाली गलौज करने लगे और हाथापाई तक उतर आए। जहां कन्हैया ने विवाद के दौरान संजय सोनवानी को चेहरे को दांतों से काट दिया। जिसके बाद उसे गुस्सा आया और ब्लेड से हमला कर दिया। आरोपी ने गुस्से में एक नही दो नहीं 12 बार हमला किया।

कांकेर नवोदय विद्यालय के छात्र ने पीएम मोदी से पूछा सवाल

बढ़ाया हौसला, मिला जवाब

कांकेर, 29 जनवरी (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को देश के छात्रों से परीक्षा पर चर्चा की। इस चर्चा में छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले में नवोदय विद्यालय में पढ़ने वाले नवमी कक्षा के छात्र शेख तैफुर रहमान ने पीएम से सवाल किया। जिस पर पीएम मोदी ने छात्र के सवाल को गंभीरता से लेते हुए सवाल का जवाब दिया। पीएम के जवाब से छात्र बेहद संतुष्ट नजर आया। उसने पीएम के इस जवाब को अपने जीवन में लागू करने की बात कही है।

छात्र ने पीएम से पूछा कि परीक्षा के दौरान अधिकांश छात्र घबराहट में गलती कर बैठते हैं और प्रश्न को ठीक से समझ नही पाते हैं। उनसे गलती हो जाती है, इससे कैसे बचा जा सकता है। जिस पर पीएम नरेंद्र मोदी ने जवाब देते हुए कहा कि परीक्षा में कभी भी घबराना नहीं है। जिन सवालों के जवाब आपको आते हैं। उन्हे पहले हल करना है और शेष सवालों के लिए फिर आपके पास पर्याप्त समय बच जाता है। जिससे आप आराम से सवाल को समझकर उसे हल कर सकते हैं। छात्र तैफूर ने कहा कि पीएम के जवाब से वो बेहद संतुष्ट हैं और ये सीख ना केवल परीक्षा में बल्कि आप जीवन में भी उनके काम आएगा।

जवाहर नवोदय विद्यालय की प्रिंसिपल जयंती पी गोपाल ने बताया कि पीएम से सवाल पूछने 534 छात्रों ने रजिस्ट्रेशन करवाया था। जिसमें एक छात्र को सवाल पूछने का अवसर मिला है। उन्होंने कहा कि पीएम का यह कार्यक्रम छात्र के लिए लाभदायक है। इससे जो छात्र आत्महत्या जैसे कदम उठाते हैं, उन्हे सीख मिलेगी और वो जीवन में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं।

100 करोड़ की लागत का विकास कार्य

रांची एयरपोर्ट पर बढ़ेंगी यात्री सुविधाएं, जाम न लगे इसके लिए नई पार्किंग बन रही

रांची, 29 जनवरी (एजेंसियां)। बिरसा मुंडा हवाई अड्डा रांची की विमान पत्तन सलाहकार समिति की बैठक हुई। सांसद संजय सेठ ने बताया कि रांची एयरपोर्ट पर यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए 100 करोड़ की लागत से विकास कार्य किया जा रहे हैं। रांची एयरपोर्ट पर यात्रियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। गाड़ी से जाम लग जाने के कारण यात्रियों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसे ध्यान में रखते हुए पुराने टर्मिनल के पास पार्किंग की व्यवस्था की जा रही है। इसके विस्तारीकरण का काम शुरू कर दिया गया है। जल्द ही पार्किंग में जो असुविधा होती थी, उसस लोगों को निजात मिलेगी। साथ ही गर्मी और बरसात में यात्रियों की सुविधा के लिए एयरपोर्ट से पार्किंग स्थल तक कैनोपी का भी निर्माण किया जा रहा है। सांसद सेठ ने कहा- एयरपोर्ट के अंदर पहले तल का विस्तारीकरण किया जा रहा है, ताकि 500 से 600 लोग आराम से बैठ सकें। वहीं यात्रियों को लाइब्रेरी, कैंटीन की व्यवस्था समेत कई अन्य सुविधाएं प्रदान की जाएंगी।

पूर्व गृहमंत्री बोले- मैंने 5वीं कक्षा से शराब छोड़ी

ननकीराम कंवर ने सीएम साय से की नशाबंदी की मांग, कहा- ये समाज की भी जिम्मेदारी

रायपुर, 29 जनवरी (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ में एक बार फिर शराबबंदी की मांग उठी है। पूर्व गृहमंत्री ननकी राम कंवर ने मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के सामने यह मांग रखी है। रायपुर के टाटीबंध में आयोजित कंवर समाज के कार्यक्रम में ननकी राम कंवर ने कहा कि मैं एक ही निवेदन करूंगा मुख्यमंत्री से की समाज का गौरव होने के नाते समाज के हित में आप नशाबंदी कर दीजिए। मैं समाज से भी मांग करता हूं कि समाज अपनी ओर से नशाबंदी कर दे। सरकार शराबबंदी करे या न करे, अगर हम बंद कर देते हैं तो हमें आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। अगर नशाबंदी होगी तो व्यक्ति की उम्र भी बढ़ जाएगी। आज 70 से 80 साल के व्यक्ति का मिलना बहुत मुश्किल है। नशे के कारण 10 बीमारियां और पागलपन लोगों में होता है। पिछले समय जब मैं गृहमंत्री था, तब हर गांव की महिलाओं ने कहा कि नशाबंदी करनी चाहिए। मुझे शर्म से महिलाओं को कहना पड़ा कि सरकार नहीं मान रही है, तो मैं अकेले नशाबंदी नहीं कर पाऊंगा। ननकी राम ने कहा कि मैंने 5वीं कक्षा से शराब छोड़ दी। इससे

पहले मैं शराब पीता था। यहां बैठे कुछ लोग हैं, जो नशाबंदी के पक्ष में हैं। मुख्यमंत्री इस बारे में क्या सोचते हैं मैं नहीं जानता, लेकिन नशे के कारण आज हमारा समाज नीचे गिरा हुआ है। समाज के लोगों की उम्र कम हो रही है। अगर हमारा समाज नशाबंदी कर ले तो मैं समझता हूं कि आदिवासी कंवर समाज को कोई पीछे नहीं धकेल पाएगा। उन्होंने कहा कि पिछली सरकार में बहुत से पुलिस वाले होंगे, जो आदिवासियों को शराब बेचने के नाम पर पकड़ते थे, फिर 30 से 50 हजार रुपए लेकर छोड़ते थे। इसलिए मैंने पिछले समय कसम खाई थी कि अगर यह सरकार नहीं बदली और भाजपा की सरकार नहीं बनी तो मैं राजनीति नहीं करूंगा। मैंने आदिवासियों का दर्द देखा था। आदिवासियों को शराब बनाने की छूट है, लेकिन जब आदिवासी शराब बनाता है, तो उसे शराब बेचने के लिए पुलिस क्यों पकड़ती है। जो लोग शराब नहीं बेचते थे, उन्हें भी पकड़ा गया। इस बारे में सरकारी अमला जो सकता है, उन्हें करना चाहिए। मैं मांग करता हूं कि आदिवासियों को शराब बनाने की छूट बंद कर देनी चाहिए। आदिवासी शराब क्यों बनाएंगे और फिर आदिवासी क्यों पकड़ा जाएगा। आखिरी में ननकी राम ने कहा कि मेरी बात किसी को अच्छी नहीं लगी होगी तो मुझे माफ करेंगे। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि जिम्मेदारी बढ़ी है।

आज बहुत बड़ा विश्वास हमारे समाज पर करते हुए मुझे सीएम बनाया गया है। आज जो मेरा सम्मान हुआ है, इसके लिए मैं आभारी हूं। आदिवासी समाज के बेटे को छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री का दायित्व मिलना पूरे कंवर समाज का सम्मान है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कंवर समाज के एक छोटे से कार्यकर्ता को बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है।

पुलिस ने की कार्रवाई

सब्जी व्यवसायी से 18 लाख लूटने वाले 4 अपराधी गिरफ्तार, 4 अब भी फरार

रांची, 29 जनवरी (एजेंसियां)। दशम फॉल थाना क्षेत्र स्थित नावाडीह में हुए 18 लाख रुपए के लूटकांड का खुलासा करते हुए पुलिस ने 4 अपराधियों को गिरफ्तार कर रविवार को जेल भेज दिया। इनमें शहजान अंसारी, शमीम अंसारी, जबीउल्लाह मियां और इफ्तेखार आलम उर्फ रॉबर्ट शामिल हैं। पुलिस ने लूट के 11.61 लाख नकद के अलावा एक कट्टा और 18 गोलियों समेत अन्य सामान बरामद किए हैं। एसएसपी चंदन सिन्हा ने बताया कि लूटकांड में कुल 8 अपराधी शामिल थे। चार अभी भी फरार हैं, उनकी तलाश में छापेमारी की जा रही है। जेल जाने से पहले पुलिस पूछताछ में गिरफ्तार अपराधियों ने घटना में अपनी संलिप्तता स्वीकार की है। मालूम हो कि 16 जनवरी को अपराधियों ने शिवम बस में हथियार के बल पर 3 सब्जी व्यवसायियों से 18 लाख रुपए लूट लिए थे।

कवर्धा का गौसेवक साधराम हत्याकांड

धीरेंद्र शास्त्री बोले- हिंदुओं एक हो जाओ, वरना हर घर में कांड होगा

कवर्धा, 29 जनवरी (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के कवर्धा जिले में गौ सेवक साधराम यादव की हत्या का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने रविवार रात पीड़ित परिवार के घर पहुंचकर मुलाकात की। उन्होंने पीड़ित परिवार को ढाई लाख रुपए की आर्थिक मदद देने की बात कही है।

दरअसल, धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री कथा करने तीन दिवसीय प्रवास पर कवर्धा पहुंचे हैं। 28 जनवरी को कथा के पहले दिन उन्हें सुनने के लिए बड़ी संख्या में लोग पहुंचे। उन्होंने प्रसिद्ध हनुमान मंदिर पहुंचकर पूजा-अर्चना भी की। वहीं, पीड़ित परिवार से मुलाकात के बाद शास्त्री ने कहा- हिंदुओं एक हो जाओ, वरना हर घर में कांड हो सकता है। इन

विरोधियों की ठठरी बारने की जरूरत है।

राक्षसों ने सीधे-सादे परिवार के मुखिया को मार डाला

पंडित धीरेंद्र शास्त्री ने कहा कि कवर्धा में राक्षसों ने एक सीधे-सादे परिवार, जिनके पास बैठने की भी व्यवस्था नहीं है, उस परिवार के मुखिया गौरक्षक साधराम यादव की निर्मम हत्या कर दी। इससे मैं दुखी हूं, लेकिन प्रशासन ने कठोर कार्रवाई की है। आरोपियों की गिरफ्तारी हुई और मकान में बुलडोजर चलवाया है।

धीरेंद्र शास्त्री ने कहा कि हम हिंदुओं से कहना चाहते हैं एक हो जाओ वरना हर घर में कांड हो सकता है। इसलिए सनातनियों को एक होने की जरूरत है। इन विरोधियों की ठठरी बारने की जरूरत है। परिवार ने बताया कि कैसे घटना हुई और कुछ नशेड़ियों ने घटना को अंजाम दिया है। साधराम यादव गांव में गौ सेवा करते थे। इन्होंने मना किया, तो आरोपियों का ईगो हर्ट हो गया।

उन्होंने कहा कि पुलिस ने आरोपी को जेल में डाल दिया है। प्रशासन ने बुलडोजर चलाकर आरोपी की अवैध संपत्ति को तोड़ दिया है। छत्तीसगढ़ में राम राज है, सरकार राम हितैषी है, ये अच्छी बात है। हमने मृतक के परिवार को ढाई लाख रुपए की आर्थिक मदद देने को कहा है, जो सोमवार तक दे दी जाएगी। बागेश्वर सरकार ने कहा कि राम मंदिर बन गया है, अब कृष्ण जन्मभूमि और ज्ञानवापी की तैयारी है। हम बागेश्वर धाम में भारत देश की सेना को मजबूत करने और अमर वीर शहीदों की स्मृति में 108 कुंडली महायज्ञ 1 मार्च से 8 मार्च तक करने जा रहे हैं। धीरेंद्र शास्त्री ने कहा कि 2 फरवरी को पूरे भारत के हिंदुओं को एक बड़ा तोहफा देने जा रहे हैं। सनातन धर्म क्या है?

पांच दिन के अज्ञातवास में हमने यह पुस्तक लिखी है। उस पुस्तक में जानकारी संक्षिप्त है। छोटा पैक, बड़ा धमाका है। उस पुस्तक को पढ़ने के बाद छोटे से छोटा बच्चा भी एक लाख सनातन विरोधियों के बीच खड़ा होकर बोलेगा सनातन धर्म की जय हो।

कांग्रेस नेता के दफ्तर में ड्राइवर को बेरहमी से पीटा

ओवरटेक को लेकर विवाद

बिलासपुर, 29 जनवरी (एजेंसियां)। बिलासपुर में बदमाशों ने कांग्रेस नेता के निजी ऑफिस में घुसकर ड्राइवर की लाठी-डंडों से जमकर पिटाई कर दी। बताया जा रहा है कि गाड़ी ठीक से नहीं चलाने का आरोप लगाकर लाठी-डंडे से लैस युवक ठेकेदार के दफ्तर में घुस गए और ड्राइवर पर हमला कर दिया। यह घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। मामला सिविल लाइन थाना क्षेत्र का है। कोनी क्षेत्र के सेंदरी का रहने वाला हरीश कुर्रे ठेकेदार और कांग्रेस के ग्रामीण जिला उपाध्यक्ष नीरज जायसवाल का हाईवा चलाता है। ठेकेदार ने मंगला के धुरीपारा में ही दफ्तर खोल रखा है। रविवार को हरीश हाईवा लेकर ऑफिस की ओर आ रहा था। पास ही बाइक सवार एक युवक ने हाईवा को ओवरटेक करते हुए गाली-गलौज की।

आईपीएस श्वेता को मिला राष्ट्रपति पुरस्कार

छत्तीसगढ़ के पूर्व डीजीपी विजय शंकर चौबे की बेटी ने बढ़ाया मान, दुर्ग में गुजरा है बचपन

भिलाई, 29 जनवरी (एजेंसियां)। दुर्ग जिले की बेटी आईपीएस श्वेता चौबे राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित होगी। श्वेता इस समय उत्तराखंड राज्य के पौड़ी में बतौर एसएसपी पदस्थ हैं। वो दुर्ग जिले की रहने वाली हैं और छत्तीसगढ़ के पूर्व डीजीपी विजय शंकर चौबे की बेटी हैं। श्वेता के पिता भी राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित हो चुके हैं।

दरअसल, केंद्रीय गृह मंत्रालय ने अलग-अलग क्षेत्र में कार्यरत शासकीय कर्मचारियों को उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिए पुरस्कृत करने चयनित किया गया है। इन सभी अधिकारियों की सूची हाल ही में जारी की गई है। इसमें श्वेता चौबे का भी नाम शामिल है। श्वेता का नाम पौड़ी जिले में बतौर एसएसपी पदस्थ रहते हुए सराहनीय पुलिस सेवा के दृष्टिकोण से राष्ट्रपति मेडल के लिए चयनित हुआ है। आईपीएस श्वेता चौबे के

पिता विजय शंकर चौबे को यह पुरस्कार सन 1987 में दुर्ग में पदस्थ रहते हुए मिला था। इसके बाद वे सन 2000 में विशिष्ट पुलिसिंग सेवा के लिए भी राष्ट्रपति पुरस्कार से नवाजे गए थे। बता दें कि श्वेता चौबे का पूरा बचपन छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में ही बीता है। श्वेता चौबे को उनकी पुलिसिंग के लिए पूरे उत्तराखंड में उत्तराखंड की शेरनी के नाम से जाना जाता है। श्वेता ने सन 2005 में बतौर डीएसपी राज्य पुलिस सेवा में अपने करियर की शुरुआत की थी। इसके बाद अपने दबंग अंदाज के चलते उन्हें धीरे-धीरे उत्तराखंड की शेरनी के नाम से जाना जाने लगा। सन 2019 में उन्हें आईपीएस अवार्ड हुआ और वे देहरादून में बतौर एसपी पदस्थ हुईं। कोरोना काल में बतौर एसपी सिटी श्वेता के कार्यकाल की हर किसी ने सराहना की। इसके अलावा 2021 के महाकुंभ के दौरान उन्होंने जिस तरह से कार्य किया वह किसी से छिपा नहीं है। एसआईटी में रहते हुए उन्होंने शिक्षक भर्ती घोटाले का भंडाफोड़ किया। वहीं विजिलेंस में रहते हुए बड़े-बड़े भ्रष्टाचारियों को जेल भेजने का काम किया।

ढाई साल पहले मिली करोड़ों की मूर्ति, सुपुर्दगी पर विवाद

रायपुर कलेक्टर का जैन समाज को प्रतिमा सौंपने का आदेश, आरंग में विरोध

रायपुर, 29 जनवरी (एजेंसियां)। रायपुर के आरंग के अंधियार खोप तालाब में सितंबर 2021 में गहरीकरण के दौरान मिली जैन तीर्थंकर की प्राचीन मूर्ति को लेकर विवाद गहरा गया है। रायपुर के तत्कालीन कलेक्टर सर्वेश्वर भूरे के 3 जनवरी 2024 के आदेश के मुताबिक इसे जैन समाज को दिया जाएगा। वहीं स्थानीय लोगों ने इस आदेश का विरोध करना शुरू कर दिया है।

पुरातत्वविद भी इस तरह की दुर्लभ प्राचीन मूर्ति पर सिर्फ पुरातत्व विभाग का एकाधिकार होने की बात कह रहे हैं। स्थानीय लोगों का भी कहना है कि इसे आरंग में ही संरक्षित किया जाए। वहीं तत्कालीन कलेक्टर सर्वेश्वर भूरे के मुताबिक यह प्रक्रिया नियमों के मुताबिक ही है। ऐसी चर्चा है कि इंटरनेशनल मार्केट में इस मूर्ति की कीमत 35 से 40 करोड़ रुपए होगी। सितंबर 2021 में आरंग के अंधियार खूब तालाब में गहरीकरण के दौरान जैन तीर्थंकर की मूर्ति निकली थी। मूर्ति मिलने के बाद स्थानीय लोगों ने मूर्ति को आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया को सौंप दी थी। इसे एएसआई ने भाण्डलदेवल मंदिर आरंग में संरक्षित किया था। मूर्ति निकलने के कुछ समय बाद दिगंबर जैन चंद्रगृह तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट डोंगरगढ़ की ओर से एक पत्र लिखा गया। इस पत्र में ट्रस्ट के कार्यकारी अध्यक्ष विनोद जैन बड़जात्या ने मूर्ति को पूजा-अर्चना के लिए सौंपे जाने की मांग की। इस पर तत्कालीन रायपुर डीएम सर्वेश्वर भूरे की कोर्ट ने ने आदेश पारित कर दिया। अब इस मूर्ति को डोंगरगढ़ के जैन समाज को देने का स्थानीय लोग विरोध कर रहे हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि प्राचीन मूर्ति को आरंग में ही रखा जाए या इसके लिए म्यूजियम बनाया जाए। पुरातत्वविद पद्मश्री अरुण कुमार शर्मा का कहना है कि जो प्राचीन मूर्ति जमीन के अंदर से निकलती है, वह देश की धरोहर होती है। उस मूर्ति पर सिर्फ और सिर्फ पुरातत्व विभाग का एकाधिकार होता है।

हथिनी को करंट लगाकर मारा

टुकड़े-टुकड़े कर दफन किया शव, 4 गिरफ्तार

सूरजपुर, 29 जनवरी (एजेंसियां)। सूरजपुर जिले के रमकोला एलिफेंट रेस्क्यू सेंटर के पास धूरिया के जंगल में ग्रामीणों ने करंट लगाकर मादा हथिनी को मार डाला। उसके शव के टुकड़े-टुकड़े में काटकर 12 गड्ढों में दफन कर दिया। अब वन विभाग ने गड्ढों से हथिनी के अवशेष बरामद किए हैं। 4 ग्रामीणों को गिरफ्तार किया गया है। जानकारी के मुताबिक, डीएफओ पंकज कमल को किसी ग्रामीण ने सूचना दी थी, कि धूरिया के जंगल में एक हथिनी को मारकर उसके शव को कई टुकड़ों में

काटकर दफन किया गया है। रविवार को वन अमला ने दो ग्रामीणों को हिरासत में लिया। पूछताछ में उनके बताए अनुसार खोदे गए गड्ढे में हथिनी के अवशेष मिले। जिसकी उम्र 15 से 20 वर्ष बताई गई है। पशु चिकित्सक डॉ. महेंद्र पांडेय, एलिफेंट रेस्क्यू सेंटर के डॉ. अजीत पांडेय और डॉ. शंभू पटेल की टीम ने शव का पोस्ट मार्डम किया। चिकित्सकों के अनुसार हथिनी की मौत करीब एक माह या 40 दिनों पहले हुई है। उसके पैरों और सूंड में करंट लगने के निशान मिले हैं। विशालकाय हथिनी के अंगों को कुल्हाड़ी और फावड़े से काटा गया है। पैर, सूंड और जबड़े सहित अन्य अंगों को 12 टुकड़ों में काटकर दफन किया गया था। जबड़े में 10-10 दांत मिले हैं। सभी हड्डियां सुरक्षित मिली हैं। शुरुआती जांच में पता चला है कि ग्रामीणों ने फसल को बचाने के लिए जीआई तार बिछाकर करंट फैलाया था। घटना स्थल मुख्यमार्ग से करीब 400 मीटर अंदर है। मौके पर जंगल का तालाब है। मृत हथिनी अकेले विचरण कर रही थी। करंट लगने से हथिनी की मौत हो गई थी।

भारत में चीनी राजदूत की 15 महीने बाद नियुक्ति संभव

गलवान झड़प के कारण अपॉइंटमेंट में देरी, 2022 में पूर्व एंबेसडर का कार्यकाल पूरा हुआ था

बीजिंग, 29 जनवरी (एजेंसियां)। भारत के साथ सीमा विवाद के बीच चीन भारत में अपना अगला एंबेसडर नियुक्त कर सकता है। करीब 15 महीने से भारत में चीन का कोई भी राजदूत नहीं है। इसके पहले सुन वीडोंग भारत में चीन के राजदूत थे। उनका कार्यकाल अक्टूबर 2022 में खत्म हो गया था।

भारत और चीन के बीच पूर्वी लद्दाख की गलवान घाटी पर करीब 3 साल पहले 2020 में हिंसक झड़प हुई थी। इसमें भारत के 20 जवान शहीद हो गए थे, जबकि 38 चीनी सैनिक मारे गए थे। हालांकि, चीन इसे लगातार छिपाता रहा है।

गलवान घाटी पर दोनों देशों के बीच 40 साल बाद ऐसी स्थिति पैदा हुई थी। इसके बाद से दोनों देशों के रिश्ते बिगड़ते चले गए। यही वजह है कि चीन भारत में नया राजदूत अब तक नियुक्त नहीं कर पाया।

जू फीहोंग हो सकते हैं नए राजदूत

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक चीन सीनियर डिप्लोमैट जू फीहोंग को भारत में एंबेसडर के तौर पर नियुक्त कर सकता है। जू फीहोंग अफगानिस्तान में राजदूत के रूप में काम कर चुके हैं। इसके अलावा वह रोमानिया में भी चीन के राजदूत रह चुके हैं। फिलहाल वह चीन में विदेश मामलों के सहायक मंत्री की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं।

हालांकि, नए राजदूत की नियुक्ति की औपचारिकताएं अभी पूरी नहीं हुई हैं और यह स्पष्ट नहीं है कि वह कब पदभार ग्रहण करेंगे। इस पर दोनों देशों के विदेश मंत्रालय ने भी बयान नहीं दिया है।

गलवान झड़प की वजह

गलवान पर हुई झड़प के पीछे की वजह यह थी कि गलवान नदी के एक सिरे पर भारतीय सैनिकों अस्थाई पुल बनाने का फैसला लिया था। चीन ने इस क्षेत्र में अवैध रूप से बुनियादी ढांचे का निर्माण करना शुरू कर दिया था। साथ ही, इस क्षेत्र में अपने सैनिकों की संख्या बढ़ा रहा था। जुलाई 2023 में विदेश मंत्री एस जयशंकर ब्रिक्स की एक मीटिंग में शामिल हुए थे। तब उन्होंने भारत-चीन बॉर्डर पर जारी तनाव को अपने करियर का सबसे कठिन डिप्लोमैटिक चैलेंज बताया था।

सीमा विवाद सुलझने तक सामान्य नहीं हो सकते : जयशंकर

13 जनवरी को नागपुर में आयोजित एक कार्यक्रम में विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा था- दोनों देशों के रिश्ते सीमा विवाद सुलझने तक सामान्य नहीं हो सकते। मैंने चीन के विदेश मंत्री से कहा कि जब तक वो सीमा विवाद का समाधान नहीं ढूंढ लेते तब तक आप यह उम्मीद नहीं कर सकते कि डिपलोमैटिक रिलेशन्स सामान्य तरीके से चलेंगे। यह असंभव है।

किम जोंग ने देखा पुल्हवासल-3-31 क्रूज मिसाइलों का परीक्षण

सियोल, 29 जनवरी (एजेंसियां)। उत्तर कोरिया के तानाशाह किम जोंग उन ने रविवार को पनडुब्बी से लॉन्च की गई क्रूज मिसाइलों के परीक्षण की निगरानी की। इसके साथ ही उन्होंने पनडुब्बी निर्माण की परियोजना की भी समीक्षा की।

दक्षिण कोरिया की स्थानीय मीडिया ने बताया कि पनडुब्बी से लॉन्च होने के बाद क्रूज मिसाइल पुल्हवासल-3-31 ने पूर्वी सागर में 7,421 सेकंड और 7,442 सेकंड तक उड़ान भरी। इसके साथ ही निर्धारित लक्ष्यों पर सटीक निशाना भी साधा। हालांकि, इसे लेकर कोई खास जानकारी अभी तक नहीं दी गई है। दक्षिण कोरियाई सेना ने रविवार को कहा कि उन्होंने पूर्वी बंदरगाह शिनपो के पास सुबह आठ बजे उत्तर कोरिया द्वारा कई क्रूज मिसाइलों के प्रारीक्षण का पता लगाया है। पुल्हवासल-3-31 एक नई क्रूज मिसाइल है, जिसका उत्तर कोरिया ने पहली बार बुधवार को परीक्षण किया। उत्तर कोरिया ने यह खुलासा किया कि यह मिसाइल पनडुब्बी से लॉन्च की जाने वाली मिसाइल है।

मैक्रों की भारत यात्रा के बाद चीन का बयान

जिनपिंग बोले- हम फ्रांस के साथ रिश्ते मजबूत करना चाहते हैं, हमारे संबंध 60 साल पुराने

पेरिस, 29 जनवरी (एजेंसियां)। फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों की भारत यात्रा (25-26 जनवरी) के 3 दिन बाद चीन ने फ्रांस को लेकर बयान दिया है। राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने कहा है कि चीन, फ्रांस के साथ रिश्ते मजबूत करना चाहता है।

दरअसल, 27 जनवरी को चीन और फ्रांस के राजनयिक संबंधों के 60 साल पूरे हुए। इसके बाद अब चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने कहा- बीजिंग द्विपक्षीय संबंधों के विकास को महत्व देता है। हम फ्रांस के साथ अपने रिश्ते मजबूत करके विकास के नए रास्ते खोलना चाहते हैं। आज दुनिया एक बार फिर महत्वपूर्ण मोड़ पर है। चीन और फ्रांस को संयुक्त रूप से मानव विकास के लिए शांति, सुरक्षा और प्रगति का रास्ता खोलना चाहिए।

चीन का बयान इसलिए भी अहम

भारत की यात्रा के दौरान फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रों ने भारत के साथ सहयोग तेज करने के अलावा हिंद महासागर में एक महत्वाकांक्षी डिफेंस रोडमैप का अनावरण किया था। हिंद महासागर में चीन का दखल बढ़ता जा रहा है। वो लगातार यहां अपने जासूसी जहाज भेजता रहता है। इससे निपटने के लिए भारत 19 से 27 फरवरी तक हिंद महासागर में सबसे बड़ा सैन्य अभ्यास आयोजित करेगा। इसमें फ्रांस की नौसेना भी शामिल होगी। इसके अलावा अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण कोरिया समेत 50 देशों की नौसेनाएं भी शामिल होंगी। हिंद महासागर में भारत को मिल रहे फ्रांस के सहयोग से चीन की चिंता बढ़ी है। इसके बाद चीन-फ्रांस के रिश्तों को मजबूत करने वाला जिनपिंग का बयान सामने आया। इसलिए इस बयान को फ्रांस को लुभाने के चीनी प्रयास के तौर पर देखा जा रहा है।

वन चाइना पॉलिसी का समर्थन करते हैं मैक्रों

हालांकि फ्रांस और चीन के रिश्ते हमेशा ही से मजबूत रहे हैं। मैक्रों ने अप्रैल 2023 में कहा था- हम चीन की वन चाइना पॉलिसी के साथ हैं और चाहते हैं कि समस्या का समाधान शांतिपूर्ण तरह से निकाला जाए।

5 अप्रैल को 3 दिन के दौरे पर बीजिंग पहुंचे राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रों ने चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मुलाकात की थी। इस दौरान दोनों देशों के बीच ट्रेड और इकोनॉमी सहित ताइवान विवाद पर भी चर्चा हुई थी। बैठक के बाद मीडिया को संबोधित करते हुए फ्रांस ने कहा था कि यूरोप को अमेरिका पर अपनी निर्भरता कम करनी चाहिए।

हमें ताइवान को लेकर चीन और अमेरिका के बीच टकराव में घसीटे जाने से बचना चाहिए।

अमेरिका में सीमा के नजदीक हो सकता है बड़ा आतंकी हमला

वॉशिंगटन, 29 जनवरी (एजेंसियां)। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने आशंका जताई है कि अमेरिका में सीमा के नजदीक बड़ा आतंकी हमला हो सकता है। ट्रंप ने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया है। इस पोस्ट में ट्रंप ने लिखा कि अमेरिका-मैक्सिको बॉर्डर को लेकर हो रही डील तबाही ला सकती है। उन्होंने अमेरिका के दक्षिणी बॉर्डर को दुनिया के इतिहास में सबसे बुरा बताया और आशंका जताई कि अमेरिका में बड़ा आतंकी हमला हो सकता है।

ट्रंप बोले- 'यह खुले घाव जैसा'

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रुथ पर साझा किए पोस्ट में ट्रंप ने लिखा 'तीन साल पहले तक हमारी सीमाएं अमेरिका के इतिहास में सबसे मजबूत और सुरक्षित थीं। आज तबाही का इंतजार हो रहा है। यह दुनिया के इतिहास की सबसे खराब सीमाएं हैं और यह हमारे देश के लिए खुले घाव जैसी हैं।' ट्रंप ने लिखा कि 'पूरी दुनिया के आतंकी हमारे देश में बिना किसी जांच के घुस रहे हैं। 100 प्रतिशत आशंका है कि अमेरिका में सीमा के नजदीक कोई बड़ा आतंकी हमला हो सकता है।'

अवैध शरणार्थियों के मुद्दे पर घिरे बाइडन

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन यूएस-मैक्सिको बॉर्डर पर अमेरिकी संसद में समझौते की बात कर रहे हैं। वहीं ट्रंप रिपबल्किन पार्टी के सांसदों से अपील कर रहे हैं कि वह किसी भी डील में शामिल न हों। ट्रंप ने कहा कि एक बुरी डील से अच्छा है कि कोई डील ही न हो। डोनाल्ड ट्रंप अमेरिका में अवैध रूप से आ रहे शरणार्थियों के मुद्दे पर जो बाइडन को घेर रहे हैं। माना जा रहा है कि इस साल नवंबर में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव में भी अवैध शरणार्थियों का मुद्दा सबसे अहम होगा। यही वजह है कि ट्रंप इस मुद्दे पर जो बाइडन की सरकार को घेरने का कोई मौका नहीं छोड़ना चाहते। बाइडन भी इस बात को जानते हैं, तभी उन्होंने अपने एक बयान में एलान किया है कि अगर कांग्रेस समझौते पर पहुंचती है तो वह यूएस-मैक्सिको बॉर्डर को पूरी तरह से बंद करने के लिए तैयार हैं।

भारतीय छात्र ने नशेड़ी की मदद के लिए बढ़ाया हाथ

न्यूयॉर्क, 29 जनवरी (एजेंसियां)। अमेरिका के लिथोनिया शहर के जॉर्जिया में एक बेघर नशेड़ी ने एक 25 वर्षीय भारतीय छात्र की पीट-पीटकर हत्या कर दी। दरअसल, छात्र पिछले कुछ दिनों से उस बेघर नशेड़ी की मदद कर रहा था। हत्या की घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। सीसीटीवी फुटेज में देखा गया कि आरोपी जुलियन फॉकनर ने मृतक विवेक सैनी के सिर पर हथौड़े से करीब 50 बार बेरहमी से वार किया था। मृतक एक स्टोर में क्लर्क के तौर पर काम करता था, जहां वह उस बेघर नशेड़ी को पिछले दो दिनों से चिप्स, कोक, पानी और जैकेट देकर मदद करता था। सुरक्षा को देखते हुए मृतक ने आरोपी को स्टोर से चले जाने के लिए कहा था। इसे लेकर 16 जनवरी को आरोपी ने मृतक पर हमला कर दिया। घटना की सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची। उन्होंने शव के पास ही फॉकनर को पाया। भारतीय छात्र विवेक सैनी दो साल पहले ही बीटेक की पढ़ाई पूरी करने के बाद अमेरिका आया था।

इजराइल ने यूएन स्टाफ के खिलाफ सबूत दिए

कहा– किडनैपिंग, हथियार सप्लाई करने में मदद कर रहे थे कर्मचारी, जंग के बीच 3 अमेरिकी सैनिकों की मौत

न्यूयॉर्क/पेरिस, 29 जनवरी (एजेंसियां)। न्यूयॉर्क टाइम्स के मुताबिक, इजराइल ने हमास अटैक में यूएन स्टाफ के शामिल होने के सबूत दिए हैं। इजराइल ने कहा- यूएन के एक स्टाफ मेंबर ने इजराइली महिला को अगवा करने में हमास आतंकियों की मदद की थी। इसके अलावा एक मेंबर आतंकियों को हथियार सप्लाई कर रहा था। एक स्टाफ मेंबर ने लोगों की जान भी ली थी।

इजराइल ने 26 जनवरी को यूएन एजेंसी के स्टाफ पर हमास अटैक में शामिल होने का आरोप लगाया था। इसके बाद 12 कर्मचारियों को बर्खास्त कर दिया गया। इस बीच जॉर्डन-सीरिया बॉर्डर पर बने अमेरिकी सैन्य ठिकाने पर रविवार देर रात ड्रोन अटैक हुआ। इसमें 3 अमेरिकी सैनिकों की मौत हो गई।

गाजा में इजराइली लोगों को बसाने का प्लान

इजराइल गाजा में अपने लोगों को बसाने का प्लान बना रहा है। टाइम्स ऑफ इजराइल की रिपोर्ट के मुताबिक, 12 मंत्रियों का कहना है कि जंग के बाद गाजा में नई बस्तियां बनाई जाए और इनमें इजराइली नागरिकों को बसाया जाए। रिपोर्ट के कहा गया कि यहूदी सेटलर्स अब गाजा बॉर्डर के पास पहुंचने लगे हैं। सेटलर्स वो यहूदी हैं जिन्हें इजराइल की सरकार फिलिस्तीनी इलाकों में बसाती है। 27 जनवरी को कुछ सेटलर्स ने 2 इजराइली बच्चों को देश का झंडा थमाकर गाजा बॉर्डर के नीचे से गाजा पट्टी की तरफ भेजा दिया। यूएन स्टाफ पर लगे आरोपों के बाद 9 देशों ने यूएन एजेंसी को दी जाने वाली फंडिंग रोक दी। इसके बाद यूएन ने अमेरिका समेत 8 देशों से अपील की है कि वो इस संगठन की फंडिंग बंद न करें, क्योंकि ये दुनिया में उन देशों या वहां के लोगों की मदद करता है जो किसी न किसी रूप में हिंसा या भूख से जुड़ी मुश्किलों का सामना कर रहे हैं। दूसरी तरफ, फ्रांस की राजधानी पेरिस में एक अहम बातचीत शुरू हो रही है। इसमें इजराइल और हमास के बीच सीजफायर कराने के अलावा होस्टेज डील पर विचार किया जाएगा।

यूएन चीफ एंतोनियो गुतेरस ने कहा- हमें अपने 12 कर्मचारियों के खिलाफ शिकायत और सबूत मिले थे।

इसके बाद तेजी से एक्शन लिया गया और 9 कर्मचारियों को हटा दिया गया। ये सभी यूएन रिलीफ एंड वर्क एजेंसी यानी यूएआरडब्ल्यूए से जुड़े थे। इन पर आरोप थे कि इजराइल में 7 अक्टूबर 2023 को हुए हमलों में इनकी भी भूमिका थी। इन लोगों ने इन हमलों में हिस्सा लिया था।

8 फरवरी को मतदान से पहले कराची में चुनावी हिंसा की खबरें

इस्लामाबाद, 29 जनवरी (एजेंसियां)। पाकिस्तान में 8 फरवरी को चुनाव होने वाले हैं। आम चुनाव के लिए मतदान से पहले कराची में चुनावी हिंसा की खबरें सामने आई हैं। देश के सबसे बड़े शहर कराची में तनाव बढ़ रहा है। प्रतिद्वंद्वियों के बीच झड़प और हिंसा की कई खबरें सामने आई हैं।

राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच टकराव के दौरान मौत के साथ-साथ घायल होने की खबरें भी सामने आई हैं। खबरों के मुताबिक संसद में निर्वाचन के साथ-साथ प्रांतीय विधानसभा सीटों पर ताल ठोक रहीं राजनीतिक पार्टियों के कार्यकर्ता प्रतिद्वंद्वियों को मात देने के लिए हिंसा का रास्ता चुन रहे हैं। ऐसे में मतदान से केवल हफ्ते भर पहले हो रही हिंसा के कारण चुनाव आयोग (ईसीपी) के माथे पर बल पड़ने लगे हैं। सोमवार को कराची के नाजिमानाड में हिंसक झड़पों की खबर सामने आई।

मालदीव की संसद में मारपीट

प्रेसिडेंट मुइज्जू की कैबिनेट को लेकर विपक्ष का हंगामा, स्पीकर पर पक्षपात का आरोप

माले, 29 जनवरी (एजेंसियां)। मालदीव की संसद में रविवार को जबरदस्त मारपीट और हंगामा हुआ। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक- रविवार को प्रेसिडेंट मोहम्मद मुइज्जू की कैबिनेट पर संसद की मुहर लगनी थी। जब विपक्षी सांसद संसद के अंदर जाने लगे तो गार्ड्स ने उन्हें रोकने की कोशिश की। हालांकि, ज्यादातर सांसद अंदर चले गए। इसके बाद विपक्षी सांसदों ने स्पीकर पर पक्षपात का आरोप लगाया और उनके कान के पास अपने साथ लाए बिगुल बजाने लगे। सत्ता पक्ष के सांसदों ने विरोध किया। कुछ देर में मामला मारपीट तक जा पहुंचा। इसके कई वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं। मोहम्मद मुइज्जू ने अपनी चुनावी कैंपेन में इंडिया आउट का नारा दिया था। उन्होंने सत्ता में आने के बाद मालदीव में मौजूद भारत के सैनिकों को निकाल लेने के आदेश दिए। भारत के साथ हाइड्रोग्राफिक सर्वे एग्रीमेंट खत्म करने की घोषणा की। इसके बाद मालदीव के दो मंत्रियों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लक्षद्वीप विजिट को लेकर उनके और भारत के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी कर दी। इसके बाद 14 जनवरी को मालदीव में हुई कोर कमेटी की बैठक में मुइज्जू सरकार ने वहां मौजूद 88 भारतीय सैनिकों को हटाने के लिए 15 मार्च तक का समय दिया। 15 नवंबर 2023 को मालदीव के नए राष्ट्रपति और चीन समर्थक कहे जाने वाले मोहम्मद मुइज्जू ने शपथ ली थी। इसके बाद से भारत और मालदीव के रिश्तों में खटास आई है। जनवरी की शुरुआत में टाइम्स ऑफ इंडिया को दिए एक इंटरव्यू में मुइज्जू से भारत की सैन्य मौजूदगी के मुद्दे पर सवाल पूछा गया था। सवाल था कि भारत अपने सैनिकों को बाहर निकालने की आपकी जिद से चिंतित है। इस पर मुइज्जू ने जवाब दिया था- इस साल के राष्ट्रपति चुनावों में मालदीव के लोगों ने यह साफ कर दिया था कि वो देश में विदेशी सैनिकों की मौजूदगी नहीं चाहते हैं।

इराक से बचे हुए सैनिक निकालेगा अमेरिका

पहले राउंड की बैठक हुई, इराकी पीएम ने कहा था– आपसी लड़ाई के लिए हमारी जमीन इस्तेमाल न करें

बगदाद, 29 जनवरी (एजेंसियां)। इराक में मौजूद अमेरिकी सेना को निकालने के लिए शनिवार को बगदाद में पहले राउंड की बैठक हुई। इसमें इराक के प्रधानमंत्री मोहम्मद शिया-अल-सुदानी सहित कई सीनियर अधिकारी और इराक की सेना के अफसर मौजूद रहे।

पीएम ऑफिस ने अपने स्टेटमेंट में कहा- इराक और अमेरिका के बीच सैन्य गठबंधन को खत्म करने के लिए पहली बैठक हुई है। मिलिट्री एक्सपर्ट्स मिलकर आईएसआईएस के खिलाफ बने वैश्विक गठबंधन के सैन्य मिशन को खत्म करने का नेतृत्व करेंगे। फिलहाल इराक में करीब 2500 अमेरिकी सैनिक मौजूद हैं। इराक के पीएम ऑफिस की स्टेटमेंट के मुताबिक, अमेरिकी सैनिकों की वापसी के लिए 3 वर्किंग ग्रुप बनाए गए हैं। ये इस बात की जांच करेंगे कि इराक में फिलहाल आईएसआईएस का कितना खतरा है। इसके अलावा इराकी सेना को मजबूत करने के लिए कितनी ट्रेनिंग और सपोर्ट की जरूरत है।

अमेरिका के मुताबिक, सैन्य मिशन खत्म करने की शर्तों पर बातचीत के लिए एक कमेटी बनाई गई थी। इसकी पहली बैठक पिछले साल हुई थी। लेकिन गाजा में इजराइल की जंग तेज होने के बाद से इराक में मौजूद ईरान-समर्थक गुटों ने इराक और सीरिया में अमेरिकी सैनिकों पर कई हमले किए। इसके जवाब में अमेरिका ने कार्रवाई की। हालांकि, इराक में इसका जमकर विरोध हुआ। अमेरिका ने लगातार इस बात पर जोर दिया है कि इराक से सेना को निकालने का फैसला 7 अक्टूबर को इजराइल पर हमास के हमले से पहले हो चुका था। हालांकि, इराक में मौजूद आईएसआईएस ने दावा किया है कि उनके हमलों के बाद अमेरिका ने इराक छोड़ने का फैसला किया है। आईएसआईएस ने कहा- अमेरिका सिर्फ दबाव और हमलों की भाषा जानता है। हम उन पर हमले जारी रखेंगे। इससे पहले 20 जनवरी को भी इराक में मौजूद अमेरिकी फौज पर बैलिस्टिक मिसाइलों से हमला हुआ था।

बलूच नागरिकों के प्रदर्शन से घबराए सुरक्षाबल

आवाज उठाने वालों का कर रहे अपहरण

इस्लामाबाद, 29 जनवरी (एजेंसियां)। पाकिस्तान में अत्याचार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन के बीच बलूचिस्तान के डेरा बुगती क्षेत्र में 10 लोग लापता हो गए। स्थानीय मीडिया न बताया कि सुई शहर में गुप्त एजेंसियों के साथ मिलकर पाकिस्तानी सुरक्षा बलों ने घर-घर जाकर तलाशी अभियान चलाया और 10 लोगों को लापता कर दिया। पाकिस्तानी बल ने जाफर कॉलोनी में तलाशी अभियान चलाया, जिसके बाद जीटीए के अध्यक्ष और जमहूरी वतन पार्टी कार्यकर्ता मास्टर मौस बक्श और उनका बेटा लापता हो गए। इसी तरह गोबर खान बुगती के बेटे आतिफुल्लाह को पाकिस्तानी खुफिया एजेंसियों ने हिरासत में लिया, जिसके बाद से ही वह लापता हो गया।

क्या है राइट टू हेल्दी फूड

जिसकी मांग करते हुए दो लड़कियों ने विश्व प्रसिद्ध मोनालिसा पेंटिंग पर फेंका सूप

पेरिस, 29 जनवरी (एजेंसियां)। दो क्लाइमेट एक्टिविस्ट ने रविवार को पेरिस के लौवर म्यूजियम में मोनालिसा की पेंटिंग पर सूप फेंका। दोनों लड़कियों ने पेंटिंग के करीब जाने के लिए लगे सिक्योरिटी बैरियर को पार करते हुए ये काम किया। ये सूप पेंटिंग की हिफाजत के लिए उसके सामने लगाए गए कांच पर गिरा। दरलअसल, इन दोनों का मकसद अपने एक अभियान की तरफ लोगों का ध्यान दिलाना था। उनके पेंटिंग के पास जाने या सूप फेंकने से ज्यादा अहम उनकी नारेबाजी और लोगों से किए गए सवाल हैं। सूप फेंकने के बाद उन्होंने एक टिकाऊ खाद्य प्रणाली की मांग करते हुए नारे लगाए।

इन लड़कियों ने मोनालिसा की पेंटिंग के सामने खड़े होकर चिल्लाते हुए लोगों से सवाल किया कि ज्यादा जरूरी क्या है? कला या फिर भोजन का अधिकार? हमारी खेती बुरे हाल में है, पूरी प्रणाली बीमार है। हमारे किसान मर रहे हैं और कोई इस पर ध्यान नहीं दे रहा है। अपनी वेबसाइट पर फूड रिपोस्टे ग्रुप ने कहा कि फ्रांसीसी सरकार जलवायु परिवर्तन को लेकर अपने वादों को तोड़ रही है। वेबसाइट पर मांग की गई है कि सरकार लोगों को स्वस्थ भोजन तक बेहतर पहुंच प्रदान करने के साथ-साथ किसानों को अच्छी आय देने के लिए व्यवस्था करे।

क्या है राइट टू हेल्दी फूड

सभी को भोजन मिलने के अधिकार को लेकर दुनिया के कई देशों में बीते कई दशकों से अभियान चलते रहे हैं। बीते कुछ सालों में राइट टू हेल्दी फूड को लेकर भी कैंपेन देखने को मिले हैं। ये अभियान कहता है कि ना सिर्फ भोजन मिले बल्कि सबको ऐसा भोजन मिले तो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक ना हो। जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण के मुद्दों पर काम करने वाले एक्टिविस्ट इस मांग को उठा रहे हैं।

चीन और पाकिस्तान से खतरा

45 हजार करोड़ में किलर पनडुब्बियां खरीदेगा भारत, जर्मनी ने दिया बड़ा ऑफर

बॉन, 29 जनवरी (एजेंसियां)। चीन और पाकिस्तान के साथ बढ़ते खतरे के बीच भारत पी-75I प्रॉजेक्ट के तहत 45 हजार करोड़ रुपये में अत्याधुनिक किलर पनडुब्बी खरीदना चाहता है। भारत के साथ इस महाडील में जर्मनी और स्पेन सबसे आगे चल रहे हैं। इस बीच जर्मनी ने पनडुब्बी को लेकर बड़ा ऑफर दिया है। जर्मन सरकार ने भारत को ऑफर दिया है कि दोनों सरकारों के बीच 6 अत्याधुनिक पनडुब्बी खरीदने का सौदा किया जाए। भारत और जर्मनी के बीच इस बड़े सौदे को लेकर बातचीत हुई है। जर्मनी के साथ-साथ एक और यूरोपीय देश स्पेन भी भारत को पनडुब्बियां बेचना चाहता है।

दो बंदूकधारियों ने चर्च में घुसकर की गोलीबारी, एक की मौत

इस्तांबुल, 29 जनवरी (एजेंसियां)। तुर्किये के एक गिरजाघर में हमला हो गया, जिसमें एक व्यक्ति हो गई। हालांकि, पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। मीडिया रिपोर्ट की मानें तो दोनों आरोपी इस्लामिक स्टेट से जुड़े हुए थे और दोनों ही विदेशी नागरिक हैं। तुर्किये के राष्ट्रपति ने हमले की निंदा की है और चर्च को अपना समर्थन दिया है। घटना तुर्किये के इस्तांबुल की है।

30 स्थानों पर की गई छापेमारी

मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, आंतरिक मंत्री अली येरलिकाया ने कहा कि रविवार सुबह करीब 11.40 बजे इस्तांबुल के सांता मारिया कैथोलिक चर्च में नकाबपोश दो बंदूकधारी घुस गए। इस दौरान, उन्होंने चर्च में सेवा कर रहे एक तुर्की नागरिक पर हमला कर दिया। हमले में उसकी मौत हो गई। आरोपियों की धड़पकड़ के लिए शहर के 30 से अधिक स्थानों पर छापेमारी की गई और 47 लोगों को हिरासत में लिया गया। काफी मशक्कत के बाद आखिरी छापे के दौरान दोनों आरोपियों को पकड़ लिया गया।

जांच में सामने आया कि दोनों ही आरोपी विदेशी नागरिक हैं। उनमें से एक ताजिकिस्तान का नागरिक है तो दूसरा रूस का नागरिक है। शुरुआती जांच में सामने आया कि आरोपी इस्लामिक स्टेट से जुड़े हुए हैं। आरोपियों से पूछताछ की जा रही है। बता दें, गिरफ्तारी से पहले इस्लामिक स्टेट ने टेलीग्राम पर एक बयान जारी किया, जिसमें उन्होंने हमले की जिम्मेदारी ली।

राष्ट्रपति एर्दोगन ने घटना की निंदा की है और पादरी के प्रति संवेदनाएं व्यक्त की है। आंतरिक मंत्री येरलिकाया के साथ-साथ न्याय मंत्री ने भी हमले की निंदा की है। वेटिकन के पोप फ्रांसिस ने भी घटना की निंदा की है। इटली की राष्ट्रपति जॉर्जिया मेलोनी ने भी संवेदनाएं व्यक्त की हैं।

जलशक्ति मंत्री ने पूर्व मुख्यमंत्री पर साधा निशाना

कहा जनता ने अशोक गहलोत को प्यासे कंठों पर राजनीति करने की सजा दी, पूर्व सरकार की हठधर्मिता से अटकी थी ईआरसीपी

जोधपुर, 29 जनवरी (एजेंसियां)। केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर प्यासे कंठों पर राजनीति करने का बड़ा आरोप लगाया। शेखावत ने दो टूक कहा कि जनता ने उनको पाप की सजा दी है। जोधपुर के एलीवेडेट प्रोजेक्ट पर शेखावत ने कहा कि यह बहुत जल्दी होने वाला है।

सोमवार सुबह अपने संसदीय क्षेत्र पहुंचे शेखावत ने मीडिया से बातचीत में कहा कि पूर्वी राजस्थान में सिंचाई के निमित्त स्वर्गीय अटल जी के समय पार्वती-कालीसिंध-चंबल नदियों को जोड़ने की परिकल्पना की गई थी, लेकिन मध्य प्रदेश और राजस्थान राज्यों के बीच सहमति न बन पाने के कारण परियोजना को स्थगित कर दिया गया। बाद में वसुंधरा राजे की सरकार के समय राजस्थान के पूर्वी हिस्से के 13 जिलों में पेयजल और सिंचाई को लेकर पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना (ईआरसीपी) की कल्पना की गई थी, लेकिन मध्य प्रदेश व राजस्थान के बीच सहमति न बन पाने के कारण और अशोक

गहलोत सरकार की हठधर्मिता के चलते हुए वो भी सिरे नहीं चढ़ पाई।

गहलोत राजनीतिक गोटी की तरह इस्तेमाल कर रहे थे

शेखावत ने कहा कि अशोक गहलोत इसको राजनीतिक गोटी की तरह इस्तेमाल कर रहे थे। बार-बार इसको लेकर राजनीतिक लाभ के लिए टिप्पणियां करते थे। केंद्रीय मंत्री शेखावत ने कहा कि मैंने प्रधानमंत्री जी से निवेदन किया था तो उन्होंने कहा कि कहीं भी रुकने से समाधान नहीं होता, इससे आगे सोचने है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि हमने पूरे देशभर के हाइड्रोलॉजी के विशेषज्ञ और मध्य प्रदेश व राजस्थान के इंजीनियर्स को साथ बैठाकर पार्वती-कालीसिंध-चंबल परियोजना तथा ईआरसीपी को इंटीग्रेटेड कर एक नदी जोड़ने की परियोजना, जिससे दोनों राज्यों को लाभ हो सके, पर विचार किया। उन्होंने कहा कि जैसा मैंने चुनाव से पहले भी कहा था, सुप्रीम कोर्ट ने जो इंटरलिंकेज ऑफ रिवर के लिए कमेटी बनाई है। उस कमेटी ने इसको अप्रूव कर दिया था और इंटरलिंकेज ऑफ रिवर्स के रूप में मान्यता प्रदान की थी। कमेटी ने इसको नेशनल पर्सपेक्टिव प्लान के तहत प्राथमिकता के साथ करेंगे, उस रूप में मान्यता प्रदान की थी।

शेखावत ने कहा कि उस समय भी हमने अधिकारियों के स्तर पर चर्चा की थी, लेकिन दुर्भाग्य से, क्योंकि राजनीतिक रूप से अशोक गहलोत सरकार इसको नहीं करना चाहती थी, अधिकारियों के स्तर पर सहमति बन जाने के बावजूद भी यह नहीं हो पा रही थी।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि दोनों राज्यों की सरकारी बदली और मैंने चुनाव के समय भी कहा था कि अशोक गहलोत जिस तरह से प्यासे कंठों पर राजनीति कर रहे हैं। जिस तरह से सुखी धरती और किसान की अपेक्षाओं के ऊपर राजनीति करने, अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए इसको चारे और गोटी के रूप में उपयोग में लेने का पाप कर रहे हैं। इस पाप का दंश उनको निश्चित रूप से भोगना पड़ेगा। शेखावत ने कहा कि जनता ने उनको पाप की सजा दी और जैसा मैंने कहा था कि आने वाले समय में हम पहली कैबिनेट के साथ में इसको पूरा करेंगे।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव दोनों साथ बैठे, अधिकारियों के साथ बैठकर इसमें जितने भी गतिरोध थे, उनको हटाकर हमने इस परियोजना के समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किए। यह निश्चित रूप से 13 जिलों के लिए एक जीवनदायनी गंगा के रूप में तो होगी, लेकिन साथ-साथ वहां के आर्थिक परिदृश्य को बदलने में बहुत बड़ी भूमिका का निर्वाहन करेगी।

लंबे समय बाद हुई बारिश

गंगानगर और हनुमानगढ़ में घना कोहरा छाया; 48 घंटों में बरसात की संभावना

जयपुर, 29 जनवरी (एजेंसियां)। राजस्थान में लंबे समय बाद देर रात हल्की बारिश हुई। चूरू के कुछ हिस्सों में हल्की बारिश हुई है। राज्य के मौसम में आए इस बदलाव से न्यूनतम तापमान 5 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ गया है। मौसम विभाग का अनुमान है कि एक नया वेदर सिस्टम 31 जनवरी से उत्तर भारत में एक्टिव होगा, जिसके असर से राज्य में बारिश हो सकती है। इस सिस्टम का असर उत्तरी राजस्थान के गंगानगर, हनुमानगढ़ एरिया में देखने को मिल सकता है।

राजस्थान में आज सुबह उत्तर-पूर्वी हिस्सों में आसमान साफ रहा, लेकिन दिन निकलने के साथ ही कोहरा छाने लगा। जयपुर, सीकर, चूरू, नागौर, बीकानेर, अलवर और गंगानगर-हनुमानगढ़ के कुछ हिस्सों में सुबह कोहरा छाने के साथ हल्की सर्द हवा रही। गंगानगर, हनुमानगढ़ के एरिया में सुबह घना कोहरा रहने यहां ग्रामीण इलाकों में विजिबिलिटी कम रही।

उधर जैसलमेर, जोधपुर, पाली, सिरोही, बाड़मेर, जालोर, उदयपुर, डूंगरपुर, राजस्थान के एरिया में आज सुबह हल्के बादल छाए रहे।

बादल छाने से इन शहरों में रात का मिनिमम तापमान 5 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ गया। हिल स्टेशन माउंट आबू में कल तापमान शून्य पर था, वह बढ़कर आज 5 डिग्री सेल्सियस पर आ गया। उदयपुर में तापमान 3 डिग्री बढ़कर 11.4 डिग्री सेल्सियस पर आ गया। जयपुर, अजमेर, कोटा, बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, गंगानगर में आज न्यूनतम तापमान 10 डिग्री सेल्सियस से ऊपर रिकॉर्ड हुआ। चूरू में तापमान गिरकर 8.5 डिग्री सेल्सियस पर आ गया।

मौसम में बदलाव के कारण दिन के तापमान में भी कई शहरों में उतार-चढ़ाव रहा। बाड़मेर में अधिकतम तापमान 2.7 डिग्री बढ़कर 28.7 डिग्री सेल्सियस पर दर्ज हुआ। उदयपुर में भी दिन का तापमान तीन डिग्री बढ़कर 27.6 डिग्री सेल्सियस पर आ गया। जयपुर, अजमेर, चित्तौड़गढ़, जैसलमेर, सीकर में भी कल दिन का अधिकतम तापमान 25 डिग्री सेल्सियस के नजदीक रिकॉर्ड हुआ।

मौसम विशेषज्ञों के मुताबिक उत्तर भारत में एक सक्रिय पश्चिमी विक्षोभ 31 जनवरी को एक्टिव होगा। इसका असर उत्तर भारत के साथ पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और उत्तर प्रदेश के इलाकों में देखने को मिलेगा। इस सिस्टम से हरियाणा, पंजाब की सीमा से लगते राजस्थान के जिलों में भी बादल छा सकते है और कुछ स्थानों पर बारिश या बूंदाबांदी हो सकती है।

सरपंच ने खुलेआम तलवार से गर्दन उड़ाने की दी धमकी

डीपी पर लाइन डाल बिजली चोरी कर रहा था; लाइनमैन पर बौखलाया

झुंझुनूं, 29 जनवरी (एजेंसियां)। बिजली चोरी के लिए डाली गई अवैध लाइन को हटाने गए लाइनमैन पर सरपंच ने तलवार तान दी। आरोपी ने हमले की कोशिश की। सरंपच ने खुलेआम लाइनमैन को धमकी दी कि वह तलवार से गर्दन उड़ा देगी। वहीं मौजूद अन्य व्यक्ति ने सरपंच की इस करतूत का वीडियो बना लिया। मामला झुंझुनूं के गढ़ागौड़जी थाना क्षेत्र के केड़ गांव का है। घटना शनिवार सुबह 11 बजे की है।

हाथ में तलवार लेकर धमकाते दिखा सरपंच

वीडियो में केड़ गांव का सरपंच रविराज सिंह हाथ में तलवार लेकर लाइनमैन भवानी सिंह को धमकाते

दिख रहा है। वह खुलेआम लाइनमैन को गर्दन उड़ाने की धमकी दे रहा है। सरपंच गाली-गलौज करते हुए कह रहा है कि मेरी परमिशन के बिना तेरा यहां क्या काम है, तार तो ऐसे ही लगेगा।

बोला- मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा

सरपंच ने लाइनमैन से कहा- यहां से चला जा, नहीं तो तेरी गर्दन उड़ा दूंगा। लाइनमैन बार बार सरपंच से कहता रहा कि यह मेरा काम है। लेकिन सरपंच नहीं माना और लगातार धमकाता रहा।

इस मामले में फीडर इंचार्ज भवानी सिंह ने बताया- लाइनमैन की ड्यूटी केड गांव में है। हमें बार बार सूचना मिल रही थी कि सरपंच रविराज डीपी से तार डालकर बिजली चोरी कर रहा है। शनिवार को मौके पर जाकर देखा तो तार डाला हुआ था। शटडाउन लेकर जैसे ही तार हटाया तो सरपंच रविराज आ गया। तलवार लेकर मेरी तरफ आया। गाली गालौज करते हुए गर्दन उड़ाने की धमकी दी।

सरकार ने क्यों बंद किए अफसरों के समोसे-बर्गर-सैंडविच?

अब लंच टाइम में घर जाने पर बैन की तैयारी, कितना बदलेगी ब्यूरोक्रेसी

जयपुर, 29 जनवरी (एजेंसियां)। राजस्थान में अब सरकारी मीटिंग में अफसर चना-मूंगफली खाते हुए दिखाई देंगे। कार्मिक विभाग ने एक आदेश जारी कर सचिवालय में आईएएस-आरएएस अफसरों की मीटिंग में परोसे जाने वाले मिठाई, चिप्स, समोसे, बर्गर-सैंडविच आदि पर रोक लगा दी है। नए आदेशों के अनुसार मीटिंग में अब केवल भुने हुए चने, भुनी हुई मूंगफली और कभी-कभी मल्टी ग्रेन बिस्किट परोसे जाएंगे।

हाल ही में मुख्यमंत्री ने खुद के लिए आदेश जारी किए थे कि वे खर्च घटाने के लिए विशेष विमान से यात्रा नहीं करेंगे, उन्होंने ऐसा किया भी। प्रदेश में पहली बार ड्यूटी से नदारद मिले RAS-IAS को एपीओ किया गया।

राजस्थान की ब्यूरोक्रेसी में ये कुछ ऐसे बदलाव हैं, जो पहले कभी नहीं हुए। अब जल्द अफसरों को दफ्तर में ही लंच करने के निर्देश मिल सकते हैं। बोर्ड-निगमों में संविदा पर लगे रिटायर्ड कार्मिक हटाए जाएंगे।

सरकारी खर्चे को कम करने, अफसरों पर लगाम कसने, उन्हें पब्लिक फ्रेंडली बनाने के लिए ऐसे कई बदलाव हैं जो आने वाले दिनों में देखने को मिल सकते हैं। पढ़िए- मंडे स्पेशल स्टोरी में...

सरकार का मानना है कि न केवल कचौरी-समोसे, चिप्स, मिठाई आदि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं बल्कि ये तुलनात्मक रूप से बहुत महंगे भी होते हैं। इसकी बजाय भुने हुए चना-मूंगफली स्वास्थ्यवर्द्धक भी होते हैं और साथ ही तुलनात्मक रूप से सस्ते भी होते हैं।

मीटिंग में प्लास्टिक की पानी की बोतलों की बजाय अब कांच की बोतलों से गिलास में पानी दिया जाएगा। क्योंकि प्लास्टिक की बोतल केवल एक बार ही उपयोग में आती है और इससे प्लास्टिक कचरे को बढ़ावा मिलता है। यह पर्यावरण और अर्थव्यवस्था, दोनों के लिए घातक है।

सूत्रों का कहना है कि अभी तक ये आदेश केवल सचिवालय पर ही

लागू किए गए हैं, लेकिन अगले सप्ताह तक ये आदेश प्रदेश के सभी प्रमुख कार्यालयों और जिला कलेक्ट्रेट सहित बोर्ड-निगमों में लागू कर दिए जाएंगे।

एक आकलन के अनुसार सरकार एक वर्ष में इस आदेश से पूरे प्रदेश में करीब 2-3 करोड़ रुपए की बचत कर सकेगी। सरकार की कोशिश है कि कोई ऐसा तंत्र विकसित किया जाए, जिससे भुने हुए चने और मूंगफली की आपूर्ति भी किसी सरकारी संस्थान से ही हो। प्रदेश में सचिवालय में मंत्री कक्षों में आवभगत और बैठकों में होने वाला खर्च करोड़ों रुपयों मे होता है। एक-एक मंत्री के कक्ष में पूर्ववर्ती सरकार के दौरान 2 से 3 लाख रुपए का बिल तो महज कचौरी-समोसे का ही आता रहा है। कई बार वित्त विभाग की आपत्तियां भी सामने आई हैं, लेकिन इस विषय में कभी सरकारों के स्तर पर ध्यान नहीं दिया गया। किसी सरकार के पूरे कार्यकाल (5 वर्ष) को देखा जाए तो यह खर्च करोड़ों रुपयों तक पहुंचता है।

सचिवालय के दो समिति कक्षों में सामान्यतः एक वर्ष में लगभग 215-220 मीटिंग होती हैं। प्रत्येक मीटिंग में 25 से 50 मेहमान तक आते हैं। इन कक्षों में होने वाली मीटिंग में नाश्ते का खर्च एक बार में ही लगभग 3000-4000 रुपए हो जाता है। सीएमओ और मंत्रियों-अधिकारियों के कक्षों में होने वाली मीटिंग के खर्चे अलग से होते हैं। वहां भी लगभग हर कार्य दिवस पर कोई न कोई मीटिंग जरूर होती है। अब यह खर्च स्वतः ही कम हो सकेगा। प्रदेश में अब तक प्रशासनिक सुधार विभाग और जिलों में कलेक्टरों की तरफ से अक्सर सरकारी विभागों में छापा मारकर उपस्थित व अनुपस्थित कर्मचारियों-अधिकारियों का निरीक्षण किया जाता रहा है, लेकिन कार्मिकों को केवल चेतावनी नोटिस देकर छोड़ा जाता रहा है। लेकिन, भजनलाल सरकार में पहली बार अनुपस्थित कार्मिकों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई मौके पर ही की गई। इसमें सामान्य कर्मचारी ही नहीं बल्कि आरएएस और आईएएस अफसर तक शामिल हैं।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने खुद 25 दिसंबर, 2023 की रात को अचानक एसएमएस अस्पताल का दौरा किया। वहां ड्यूटी पर अनुपस्थित पाए गए तीन नर्सिंग कर्मियों को सस्पेंड किया।

ट्रैफिक कॉन्स्टेबल को कार से 100 मीटर तक घसीटा

सिग्नल तोड़ने पर रुकवाया था; हाथ पकड़ा तो मोबाइल पर बात कर रहे ड्राइवर ने बढ़ा दी रफ्तार

जोधपुर, 29 जनवरी (एजेंसियां)। जोधपुर में सिग्नल तोड़कर जा रही कार को रुकवाना ट्रैफिक कॉन्स्टेबल की जान पर भारी पड़ गया। चालान काट रहे कॉन्स्टेबल को ड्राइवर ने पहले कार के बोनट से पीछे करने का प्रयास किया। जब कॉन्स्टेबल समझाने आया तो ड्राइवर उसे कार के गेट पर लटकाकर 100 मीटर तक घसीटते हुए ले गया। इसके बाद चलती हुई कार से धक्का देकर सड़क पर गिरा दिया। घटना शास्त्रीनगर थाना इलाके के जलजोग चौराहे पर हुई।

पूरे घटनाक्रम का एक व्यक्ति ने अपने मोबाइल में वीडियो बना लिया। घायल कॉन्स्टेबल को हॉस्पिटल में भर्ती करवाया गया। उसके पैर में चोट लगी है। इधर, सूचना के बाद पुलिस ने क्षेत्र में नाकाबंदी करवाई। मामले की शिकायत शास्त्री नगर पुलिस थाने में दर्ज कराई गई है। आरोपी ड्राइवर देर रात तक पुलिस की पकड़ में नहीं आया था।

जोधपुर ट्रैफिक के अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त भोपाल सिंह लखावत ने बताया- मेडिकल कॉलेज के सामने ट्रैफिक पॉइंट पर हेड कॉन्स्टेबल मुकेश, कॉन्स्टेबल बीरमाराम (38) ड्यूटी पर थे। शाम को करीब 6 बजे महावीर सर्कल की तरफ से यूपी पासिंग कार चौराहे पर आई।

रेड लाइट होने के बाद भी कार का ड्राइवर कार को आगे ले जाने लगा। इस पर कॉन्स्टेबल बीरमाराम ने ड्राइवर को रोका। कार का ड्राइवर मोबाइल पर बात कर रहा था। इसके चलते कॉन्स्टेबल कार के आगे जाकर खड़ा हो गया और कार को एक तरफ लेने के लिए कहा।

वैल्डिंग का काम करते समय विस्फोट, युवक की मौत

जोधपुर, 29 जनवरी (एजेंसियां)। जोधपुर के नारनाड़ी क्षेत्र में एक वैल्डिंग गैरेज के केमिकल टैंक में विस्फोट हो जाने से काम कर रहे दो मिस्त्री गंभीर रूप से झुलस गए। दोनों मरीजों को एमडीएच हॉस्पिटल में भर्ती करवाया गया था। जहां एक घायल की बीती रात उपचार के दौरान मौत हो गई। वहीं दूसरे का उपचार हॉस्पिटल में जारी है। घायल की मौत हो जाने की सूचना के बाद सोमवार को बोरानाड़ा पुलिस हॉस्पिटल पहुंच और शव को मोर्चरी पहुंचाया।

बोरानाडा एसीपी नरेंद्रसिंह देवड़ा ने बताया कि लूणी सर गांव निवासी भोमाराम पुत्र खींयाराम पटेल ने बोरानाडा पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाई है। रिपोर्ट में बताया कि उनका भतीजा हंसराम पुत्र केवलराम (37) वैल्डिंग मिस्त्री है। वह नारनाड़ी में संचालित होने वाले एक गैरेज में काम करता था। 24 जनवरी को वह गैरेज में एक टैंकर की वैल्डिंग कर रहा था। इस दौरान टैंकर में केमिकल लीकेज के कारण विस्फोट हो गया और आग लग गई। इस हादसे में हंसराम व उसके साथ काम करने वाला एक और मिस्त्री गंभीर रूप से झुलस गए। हादसे के बाद उसे एमडीएम हॉस्पिटल में भर्ती करवाया गया था। जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। पुलिस ने इस संबंध में मामला मर्ग में दर्ज किया है। और शव का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया है।

एक कनेक्शन से 1200 घरों में बिजली दे रहा बिल्डर

हर महीने 40 लाख रुपए बिल भर रहा, लोगों से वसूल रहा 60 लाख

जयपुर, 29 जनवरी (एजेंसियां)। राजधानी जयपुर में जेडीए अप्रूव्ड कॉलोनी में रहने के लिए लोगों ने 16 साल पहले करोड़ों रुपए के प्लॉट खरीदे। मकान बनने के बाद बिजली कनेक्शन के लिए फाइल लगाई तो अधिकारियों ने कनेक्शन देने से मना कर दिया। अब कॉलोनी में रहने वाले करीब 1200 लोग कनेक्शन के लिए भटक रहे हैं। मामला अजमेर रोड स्थित वाटिका इंफोटेक सिटी का है।

बिजली निगम अधिकारियों का कहना है कि इलेक्ट्रीफाइड के लिए प्रक्रिया अपनाते हुए शुल्क जमा कराना होता है, जो अभी तक नहीं किया गया है।

बिल्डर ने अजमेर रोड पर वाटिका इंफोटेक सिटी को 2005 में जेडीए से अप्रूव्ड कराया। इसके बाद 2007 में सभी प्लॉटों की बिक्री हो गई। बिक्री होने के बाद लोगों ने मकान बनाना शुरू कर दिया। अभी तक 3 हजार 500 प्लॉटों में से 1200 में मकान बन चुके हैं। हालांकि बीच में जेडीए ने कई बार कॉलोनी को रिवाइज करके अप्रूव्ड किया। बिजली अधिकारियों की ओर से बिल्डर को इलेक्ट्रीफाइड कराने के लिए नोटिस भी जारी किए जा चुके हैं। इसके बावजूद भी प्रक्रिया को पूरा नहीं कर रहा है।

लोगों ने बताया कि प्लांट में बिल्डर ने कनेक्शन ले रखा है। उस जगह का बिल हर महीने का करीब 40 लाख रुपए आता है, लेकिन बिल्डर मकान मालिकों से बिजली विभाग की नियमित दर 7 रुपए प्रति यूनिट की जगह 11 रुपए प्रति यूनिट वसूल रहा है। इस वजह से हर महीने बिल्डर करीब 20 लाख रुपए अतिरिक्त वसूल रहा है।

जेईएन गौरव पांडेय ने बताया- बिल्डर ने कॉलोनी को इलेक्ट्रीफाइड नहीं कराया है। इलेक्ट्रीफाइड कराने के लिए बिल्डर को कई बार नोटिस भी जारी किए जा चुके हैं।

आमागढ़ में मिला मेल लेपर्ड नकुल का शव

जयपुर, 29 जनवरी (एजेंसियां)। झालाना रेंजर जनेश्वर चौधरी ने बताया कि ट्रैक नंबर तीन पर मेल लेपर्ड नकुल का शव मिला था, जिसे वन विभाग की टीम ने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। शुरुआती जानकारी से पता चला है कि लेपर्ड के सिर और दाएं तरफ पेट में जख्म के निशान थे। जिसे देखने पर लगता है कि दूसरे लेपर्ड से इलाके की जंग में नकुल ने अपनी जान गंवा दी।

वन विभाग की टीम ने जब इसकी जांच की तो पता चला कि आसपास के इलाके में मेल लेपर्ड तारा सिंह या प्रिंस से टेरिटोरियल फाइट में नकुल को गहरी चोट लगी, जिससे घायल होकर उसने दम तोड़ दिया। नकुल जयपुर का फेमस मिल लेपर्ड था, जिसे देखने के लिए देशभर से वाइल्ड लाइफ लवर पहुंचते थे।

वन्य जीवों के चार शिकारी पकड़े: बंदूक से गोली मारते और चाकू से काट देते, हथियार भी जब्त, शिकारियों में एक महिला

बीकानेर, 29 जनवरी (एजेंसियां)। बीकानेर के मरुस्थलीय क्षेत्रों में निरीह वन्य जीवों का शिकार करने वालों के खिलाफ वन विभाग ने कार्रवाई शुरू कर दी है। बंदूक से गोली मारकर हिरण शिकार करने वालों की धरपकड़ करने पर वन विभाग को हथियार भी बरामद हुए हैं। इस मामले में एक महिला सहित चार जनों को गिरफ्तार किया गया है। इनसे बंदूक के साथ ही चाकू भी मिले हैं, जिनसे वन्य जीवों को काटा व चीरा जाता है।

वन विभाग की टीम ने जीव प्रेमियों के साथ पांच गाड़ियों में रात भर शिकारियों की तलाश की। इस दौरान उदरासर, लाधड़िया, श्रीडूंगरगढ़ व माणकरासर की रोही में जगह-जगह दबिश दी गई। रेंजर कपिल राहर ने बताया कि दबिश में दो बंदूके, बारूद, चाकू, जाल, गुलेल, मांस के टुकड़े सहित एक मोटरसाइकिल, तीतर को मार कर बनाई गई सब्जी बरामद की है। टीम ने एक महिला के साथ ही तीन आदमियों को गिरफ्तार किया है। वन विभाग ने नानाराम व रुपाराम के नाम की पुष्टि की है, जबकि महिला और एक अन्य युवक की पुष्टि नहीं की। वन विभाग की इस कार्रवाई में बड़ी संख्या में वन्य जीव प्रेमियों ने भी सहयोग किया। उनकी दबिश कार्रवाई में ये लोग भी साथ रहे। वन्यजीव प्रेमी विक्रम स्वामी ने बताया कि जगह-जगह वन्य जीवों का शिकार किया जा रहा है।

रेलवे के कबाड़ से बने हथियार आतंकी-गैंगस्टर्स को सप्लाई

जोधपुर, 29 जनवरी (एजेंसियां)। राजस्थान का जोधपुर देश में आतंक फैलाने वाली गैंग के लिए हथियार सप्लाई का 'सिल्क रूट' यानी बड़ा अड्डा बन गया है। पंजाब में गन सप्लाई करने वाली एक गैंग के सदस्यों को पुलिस ने चार दिन पहले ही पकड़ा है, जिसने कई चौंकाने वाले खुलासे किए हैं। गैंग ने बताया कि उन्होंने तीन साल में 80 गन सप्लाई की हैं।

सप्लाई किए गए सारे हथियार गैंग ने रेलवे के कबाड़ से तैयार किए थे। पड़ताल में सामने आया कि देश के तीन बड़े हत्याकांड सिद्धू मूसेवाला, राजू ठेहट और सुखदेव सिंह गोगामेड़ी के लिए भी हथियार जोधपुर की इसी गैंग ने सप्लाई किए थे।

बदमाशों ने 4 राज्यों के तस्करों के साथ मिलकर प्रदेश में हथियार सप्लाई का नेटवर्क तैयार कर रखा है। इसका मुख्य सरगना गैंगस्टर कैलाश खीचड़ है, जिसके सहयोगी सुखदेव जांगू को जोधपुर पुलिस ने खेड़ापा से पकड़ा है। पड़ताल में सामने आया कि उसकी गैंग लॉरेंस गैंग समेत पंजाब के कई बदमाशों और आतंकवादियों को हथियार सप्लाई कर चुकी है। पंजाब में हुए सिद्धू मूसेवाला हत्याकांड, राजस्थान के सीकर में राजू ठेहट मर्डर और दो महीने पहले जयपुर में हुए सुखदेव सिंह गोगामेड़ी मर्डर पूरे देश में चर्चा में आए थे।

प्रभुदयाल पंच परिवार द्वारा आयोजित सुश्री जया किशोरीजी कि श्रीमद् भागवत कथा में राजेश गोयल, कीर्तिन अग्रवाल, कमल जाजू इनकी विशेष उपस्थिति रही। शमशाबाद के क्लासिक कन्वेंशन 3 में चल रही कथा में अंतिम दिन भारी मात्रा में भक्तोंने कथा का रसपान किया।

हत्या के आरोप में 7 साल की सजा

आसिफाबाद 29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। आसिफाबाद जिला सत्र न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश एमवी रमेश ने हत्या के मामले में आरोपी को सात साल कैद की सजा सुनाई। न्यायालय संपर्क अधिकारी एसआई के सागर, कागजनगर उप प्रभाग संपर्क अधिकारी बाबाजी (हेड कांस्टेबल) ने कहा कि वर्ष 2022 में गुंटूर कॉलोनी, कागजनगर के मुनिगा सदानंदम और सर सिल्क कॉलोनी, कागजनगर के उय्यला गोपी के खिलाफ मामला दर्ज किया गया था। जब पी जगन मोहन राव ने अदालत में गवाह पेश किए, तत्कालीन आईओ के रविंदर सीआई, डी. सागर एसएसआई ने जांच की और हत्या का अपराध साबित हुआ और अपराधी उय्यला गोपी को धारा 302 आईपीसी के तहत % साल की सजा सुनाई गई।

जिले के एसपी के. सुरेश कुमार आईपीएस ने पुलिस अधिकारियों और अदालत के कर्मचारियों को बधाई दी जिन्होंने मामले में आरोपी को सजा दिलाने के लिए कड़ी मेहनत की।

'प्रगत प्रौद्योगिकी' विशेषांक का विमोचन

धरातल पर कौशल विकास के प्रति ईसीआईएल संकल्पशील : अनुराग कुमार

हैदराबाद, 29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। इलेक्ट्रॉनिक्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (ईसीआईएल) में गणतंत्र दिवस के अवसर पर कॉरपोरेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, अनुराग कुमार ने ईसीआईएल गौरव, अंक-21 'प्रगत प्रौद्योगिकी' विशेषांक का विमोचन किया। उन्होंने कहा कि कार्य प्रणाली में निरंतरता किसी भी संगठन एवं राष्ट्र की प्रगति का प्रमुख आधार है। इस अवसर पर डॉ. अनीश कुमार शर्मा, निदेशक (तकनीकी), राजेन्द्र कुमार पारख, निदेशक (वित्त), डॉ. पी कृष्ण कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी, अनुराग मालवीया, निदेशक (कार्मिक), एम. मृत्युंजयुडु, वरिष्ठ उपमहाप्रबंधक (कॉरपोरेट अध्ययन एवं विकास केंद्र) सहित ईसीओए के सचिव तथा ईसीआईएल मजदूर संघ के महासचिव उपस्थित थे। अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने कहा कि तकनीकी क्षेत्र में आत्मनिर्भरता ईसीआईएल का संकल्प है। हमारे संस्थापक जनक डॉ.ए.एस. राव ने जिस आत्मनिर्भरता का संकल्प लिया था उसे आधुनिक प्रौद्योगिकी के माध्यम से पूरा करना है।

'राष्ट्र पहले- हमेशा पहले' ईसीआईएल के प्रत्येक सदस्य का ध्येय तथा संकल्प होना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि आज वही राष्ट्र प्रगति के पथ पर अग्रसर है जो तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर हैं। अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने संदेश दिया कि प्रगत प्रौद्योगिकी के आधार पर ईसीआईएल को कौशल विकास का उत्कृष्ट केन्द्र बनाया जाएगा।

'प्रगत प्रौद्योगिकी' विशेषांक के मुख्य संपादक डॉ. राजनारायण अवस्थी, प्रबंधक (कॉरपोरेट प्रशिक्षण एवं विकास- राजभाषा) ने इस तकनीकी विशेषांक के प्रकाशन कौशल पर प्रकाश डाला। इस अंक में अनुसंधान एवं विकास नवाचार, अंतरिक्ष पर्यटन, परमाणु प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोगों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, महत्वपूर्ण कार्यक्रम: झलकियां, ईसीआईएल : राजभाषा कार्यान्वयन में निरंतर प्रगति की ओर, आंचलिक कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन, नदियों का जनक : हिमालय, व्यक्ति तथा संगठन के विकास में सीखने की भूमिका, सॉफ्टवेयर आउटसोर्सिंग का विश्लेषण, सार्थक तर्क के माध्यम से संघर्ष का समाधान, ध्यान : संतुलित जीवन के लिए एक कल्याणकारी उपकरण, नारी का व्यक्तित्व : सदा नमन, भारतीय शिक्षा प्रणाली का विश्लेषण, स्वास्थ्य-सौन्दर्य : आयुर्वेद का वरदान- इलायची तथा 'ईसीआईएल गौरव' ज्ञान-प्रश्नोत्तरी आदि को विशेष रूप से प्रकाशित किया गया। विशेषांक के सफल प्रकाशन में कनका श्री महालक्ष्मी, डॉ. चिप्पाड़ा अंबेडकर, कनि. हिन्दी अनुवादक तथा अजहर सुल्तान, प्रवर श्रेणी लिपिक ने महत्वपूर्ण सहयोग किया।

पीवीटीजी के विकास के लिए अधिकारियों को समन्वय बनाकर काम करना चाहिए : दीपक तिवारी

आसिफाबाद 29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। जिले के अपर समाहर्ता दीपक तिवारी ने कहा कि प्रधानमंत्री योजना के तहत जिले में पीवीटीजी के विकास के लिए अधिकारी समन्वय बनाकर काम करें। उन्होंने सोमवार को सभाकक्ष में जिला परिषद, ग्रामीण विकास, पंचायत, मिशन भगीरथ, पंचायत राज इंजीनियरिंग, आदिवासी कल्याण, बिजली विभाग और बैंक के अधिकारियों के साथ योजना के प्रबंधन पर समीक्षा बैठक की। इस अवसर पर जिला अपर समाहर्ता ने कहा कि प्रधानमंत्री जन धन योजना के तहत पीवीपीजी परिवारों के प्रत्येक सदस्य का जनधन बैंक खाता खोला जाये, महिलाओं को स्त्री निधि ऋण उपलब्ध कराया जाये तथा सभी पात्र लोगों को कार्ड उपलब्ध कराये जायें। अधिकारियों को पीवीटीजी के प्रत्येक आवासीय गांव में पीने के पानी की सुविधा प्रदान करने और सड़कों से जुड़ने वाले प्रत्येक आवासीय क्षेत्र में आंतरिक सड़कों का निर्माण करने का निर्देश दिया गया। पीपीटीजी छात्रों के शैक्षिक विकास के लिए छात्रावासों के निर्माण के लिए स्थानों के चयन की प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए संबंधित अधिकारियों को विशेष पहल करनी चाहिए। पीवीटीजी के प्रत्येक आवासीय क्षेत्र में बिजली की आपूर्ति प्रदान की जानी चाहिए, आंगनवाड़ी केंद्रों की स्थापना की जानी चाहिए आदिवासी गांवों और इंटरनेट सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि अधिकारियों को पीवीटीजी परिवारों के प्रत्येक सदस्य को आधार कार्ड जारी करने और आयुष्मान भारत योजना के तहत स्वास्थ्य कार्ड प्रदान करने के लिए कदम उठाना चाहिए। इस कार्यक्रम में आरडीओ सुरेश, संबंधित अधिकारी व अन्य लोग शामिल हुए।

गीत चाँदनी की कवि गोष्ठी संपन्न

हैदराबाद, 29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। काव्य संस्था गीत चाँदनी के तत्वावधान में नामपल्ली स्थित हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद में कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता गीतकार चंपालाल बैद ने की। कवि गोविंद अक्षय ने संचालन किया। उन्होंने बहुआयामी गतिविधियों पर प्रकाश डाला। शायर अतियब एजाज और कवि अंजनी कुमार गोयल बतौर विशेष अतिथि मौजूद थे।

चंपालाल बैद ने कहा कि कीर्तिशेष नेहपाल सिंह वर्मा ने गीत चाँदनी के संस्थापक कार्यदर्शी रहते हुए संस्था को हैदराबाद के घर-घर तक पहुँचाया है। डॉ. प्रेमलता श्रीवास्तव और कवयित्री रत्नकला मिश्र ने महाप्राण निराला द्वारा रचित वर दे वीणा वादिनी वर दे सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। श्रीमती रेखा देवी वर्मा, डॉ. नसीम ज़ैदी, तज्जमुल गुलरेज, श्रीपूनम जोधपुरी, अतियब एजाज, डॉ. प्रेमलता श्रीवास्तव, चपालाल बैद, रत्नकला मिश्रा, गोविंद अक्षय, दुर्गाराज पटून, अंजनी कुमार गोयल आदि ने अपनी कविता का पाठ किया। कार्यक्रम में डॉ. प्रभास चंद्र सिंह चंदर द्वारा जनवरी से दिसंबर,2024 माह तक प्रत्येक माह किसी एक कवि को 1100/- प्रदान किये जाएँगे। इस क्रम में माह जनवरी, 2024 के लिए वरिष्ठ कवयित्री श्रीमती रत्नकला मिश्र को यह राशि भेंट की गयी है।

लोगों की समस्याओं के समाधान के लिए अधिकारी समन्वित प्रयास करें : दसारी वेणु

आसिफाबाद 29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। जिला अपर समाहर्ता दसारी वेणु ने कहा कि जनसमस्याओं के समाधान के लिए आयोजित प्रजावाणी कार्यक्रम में प्राप्त आवेदनों को संबंधित अधिकारियों के समन्वय से समाधान करने का प्रयास किया जा रहा है। सोमवार को जिला केंद्र स्थित समाहरणालय भवन सभाकक्ष में डीआरओ सुरेश के साथ आवेदकों से आवेदन प्राप्त किये गये। जिले के ईदुलवाड़ा क्षेत्र के मारिशेट्टी राममूर्ति ने आवेदन दायर कर संशोधन की मांग की है कि उन्होंने गांव के बाहरी इलाके में पंजीकरण के माध्यम से जमीन खरीदी और धारणी में उत्परिवर्तन कराया, लेकिन उनके नाम के बजाय किसी और का नाम आ गया। आसिफाबाद मंडल के जनकपुर गांव के निवासी ओड्डे पेटन्ना ने एक आवेदन प्रस्तुत किया कि उनके पिता की मृत्यु एक सरकारी कार्यालय में चौकीदार के रूप में काम करते समय हुई थी, और वह, परिवार के सबसे बड़े बेटे, ने एक आवेदन प्रस्तुत कर अनुरोध किया है कि यह नौकरी उसे दी जाए। कौताला मंडल के गुडलाबोरी गांव के सरपंच पाले रामदास ने 14 महीने के वेतन के भुगतान की मांग करते हुए एक आवेदन प्रस्तुत किया। ए. श्रीनिवास ने कहा कि वह पिछले दो वर्षों से एसपी कैंप कार्यालय में धोबी के रूप में काम कर रहे हैं और अब उन्हें बर्खास्त कर दिया गया है और उन्होंने एक और मौका दिए जाने की मांग करते हुए एक आवेदन प्रस्तुत किया है। दहेगाम मंडल केंद्र के नल्ला दामोदर ने एक आवेदन प्रस्तुत किया है जिसमें कहा गया है कि 2 साल पहले कम्मारपल्ली गांव के उपनगरीय इलाके में उनकी जमीन पर गिरी विकास योजना के तहत एक बोरहोल खोदा गया था, और उन्होंने बिजली कनेक्शन प्रदान करके मदद करने का अनुरोध किया था। नैतम सुलोचना जो जिला केन्द्र के राजकीय आदर्श विद्यालय बालिका छात्रावास में रात्रि प्रहरी के पद पर कार्यरत है।उन्होंने आवेदन देकर कहा कि वह पिछले 8 वर्षों से अपने कर्तव्यों का पालन कर रहे हैं और उनकी नौकरी में उत्पन्न हुई समस्या के लिए न्याय मांगा है। खगज नगर शहर के नजरूल नगर के कृष्णा मंडल ने नई डिग्री पासबुक देने की मांग करते हुए एक आवेदन प्रस्तुत किया है क्योंकि उनके पास नजरूल नगर में एक जमीन है। इस अवसर पर जिले के अपर समाहर्ता ने कहा कि जनता से प्राप्त आवेदनों को संबंधित अधिकारियों से समन्वय स्थापित कर समाधान हेतु कदम उठाये जायेंगे।इस कार्यक्रम में संबंधित विभागों के अधिकारी व अन्य लोग शामिल हुए।

जनप्रतिनिधियों को जिले में चल रहे विकास कार्यों में शामिल करना चाहिए : जिला कलेक्टर

आसिफाबाद 29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। जिला कलेक्टर बोरकड़े हेमन्त सहदेव राव ने कहा कि जिले में चल रहे विकास कार्यों में जन प्रतिनिधियों को शामिल किया जाना चाहिए। जिला परिषद के अध्यक्ष कोनेरू कृष्णा की अध्यक्षता में हुई जिला परिषद की पूर्ण बैठक में जिला अतिरिक्त कलेक्टर दीपक तिवारी, जिला वन अधिकारी नीरज कुमार टिबरेवाल, विधान परिषद सदस्य डांडे विट्ठल, आसिफाबाद, सिरपुर विधायक कोवा लक्ष्मी, पलवई हरीश बाबू, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी शामिल हुए। सोमवार को जिला केंद्र में एकीकृत समाहरणालय परिसर में रत्नमाला के साथ अधिकारी शामिल हुए। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने कहा कि अधिकारी जिले में कराये जा रहे विकास कार्यों को जन प्रतिनिधियों के समन्वय से त्वरित गति से पूरा करने की दिशा में कदम उठायें। उन्होंने कहा कि प्रत्येक मण्डल में माह में दो बार विकास बैठकें आयोजित की जाये तथा पंचायत सचिवों के साथ 3 दिन मंगलवार, बुधवार एवं गुरूवार को बैठकें आयोजित की जायेंगी। उन्होंने कहा कि दो फरवरी को संयुक्त जिले में आ रहे मुख्यमंत्री को जिले के विभिन्न विकास कार्यों और उनके लिए आवश्यक धनराशि के संबंध में पूरी रिपोर्ट दी जायेगी। अधिकारियों ने निर्देश दिए कि जिले में विकास कार्य समन्वय के साथ किए जाएं और जो सड़क कार्य स्वीकृत हो गए हैं उन्हें तुरंत शुरू कर तेजी से पूरा किया जाए। इस कार्यक्रम में जिले के सभी विभागों के अधिकारियों, सभी मंडलों के जेडीपीटीसी, एमपीपी, संबंधित विभागों के अधिकारियों और अन्य लोगों ने भाग लिया।

लॉयन्स क्लब ऑफ हैदराबाद ईस्ट द्वारा फ्री हेल्थ चेक कैम्प का आयोजन भोलकपुर सिकन्दराबाद में किया गया। डॉक्टर सरोज तापडिया, डॉक्टर लुबना एवं डॉक्टर सुकन्या द्वारा हीमोग्लोबिन व शूगर टेस्ट एवं अन्य 100 महिलाओं को चेक बिना शुल्क के किया गया। इस अवसर पर लॉयन श्रुतिकान्त भारती, अध्यक्ष, लॉयन विभा भारती, जोन चेयरपर्सन एवं लॉयन्स देवचंद गाला उपस्थित थे।

हिन्दी महाविद्यालय में व्याख्यान देते हुए रेड्डी कॉलेज फॉर वुमेन्स कॉलेज के बी. कॉम तृतीय वर्ष की, बी. भार्गवी, के. वैष्णवी, टी. आश्रिता, जी. चंदना तथा जी. प्रियंका आयकर विषयोक्त बुनियादी पहलुओं का उल्लेख करते हुए तथा हिन्दी महाविद्यालय के वाणिज्य विभाग के प्राध्यापकण एवं छात्र।

पदमश्री एवार्ड से सम्मानित गेड्डाम समैया का स्वागत करते जामबाग के पार्षद राकेश जायसवाल एवं स्टेट सेक्रेटरी नवीन भंडारी।

सनतनगर शोफरोन शो रूम का उद्घाटन करते हुए माथुर वैश्य महिला मंडल भाग्यनगर अध्यक्षा सपना गुप्ता, तथा कियांश साथ शोफरोन डाइरेक्टर , विमल गुप्ता, विनीत गुप्ता , वैशवी , भाग्य श्री स्वागत करते हुए सन्तोष,तेजू ,रचना, विजया, राजेश व अन्य

इमारत से गिरने के बाद एक व्यक्ति की मौत

हैदराबाद30 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता) पंजागुट्टा के एनआईएमएस अस्पताल में एक इमारत से गिरने के बाद एक व्यक्ति की मौत हो गई।

पुलिस के अनुसार, बुचैया नाम का व्यक्ति इलाज के लिए एनआईएमएस अस्पताल आया था और मेडिकल परीक्षण के बाद पता चला कि वह किसी जानलेवा बीमारी से पीड़ित है।

इसके बाद से वह अवसाद में चला गया और पुलिस को संदेह है कि उसने अस्पताल की इमारत से कूदकर आत्महत्या कर ली होगी। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए गांधी अस्पताल की मोर्चरी में रखवा दिया गया है। मामला दर्ज कर लिया गया है।

सकट चौथ के अवसर पर पूजा-पाठ करते हुए जियागुडा निवासी, संगीता बाई, शकुन बाई, सुनीता बाई और संध्या सिंह।

हैदराबादवासी विशाल अपार्टमेंट चुन रहे हैं

शहर में औसत फ्लैट आकार में सालाना 30 प्रतिशत और पांच साल में 35 प्रतिशत की वृद्धि

हैदराबाद: शहर में विशाल अपार्टमेंट की मांग बढ़ रही है, पिछले साल हैदराबाद में 2,300 वर्ग फीट के औसत फ्लैट आकार का उच्चतम रिकॉर्ड दर्ज किया गया था। जो दर्शाता है कि इस तेजी से बढ़ते महानगर में घर खरीदारों की मांग बड़े आकार द्वारा परिभाषित लक्जरी अपार्टमेंट की ओर काफी हद तक झुकी हुई है।

एनारॉक प्रॉपर्टी कंसल्टेंट्स द्वारा तैयार किए गए आंकड़े बताते हैं कि शहर में औसत फ्लैट आकार में सालाना 30 प्रतिशत और पांच साल में 35 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। जहां 2019 में यह 1,700 वर्ग फुट था, वहीं 2022 में यह 1,775 वर्ग फुट हो गया।

हैदराबाद में यह प्रवृत्ति शीर्ष सात में अन्य शहरों के साथ समवर्ती है। नवीनतम आंकड़ों से पता चलता है कि इन शहरों में एक अपार्टमेंट में आवास इकाई का औसत आकार 11 प्रतिशत बढ़ गया है - 2022 में 1,175 वर्ग फुट से बढ़कर 2023 में 1,300 वर्ग फुट हो गया।

बड़े लक्जरी घरों की आपूर्ति में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 2023 में एक लाख से अधिक इकाइयाँ या कुल नए लॉन्च का लगभग 23 प्रतिशत लक्जरी श्रेणी में थे। बड़े घरों की मांग महामारी के कारण शुरू हुई थी, लेकिन तीन साल बाद इसके कम होने के कोई संकेत नहीं हैं, एनारॉक ग्रुप के अध्यक्ष अनुज पुरी कहते हैं।

मुंबई मेट्रोपॉलिटन रीजन (एमएमआर) और कोलकाता केवल दो शहर थे जहां पिछले वर्ष औसत आवास आयाम में कमी आई। एमएमआर में, औसत फ्लैट आकार 2023 में पांच प्रतिशत घटकर 794 वर्ग फुट हो गया, जबकि कोलकाता में दो प्रतिशत वार्षिक गिरावट के साथ 1,124 वर्ग फुट हो गया।

प्रथम पृष्ठ का शेष... लालू यादव से...

जैसे-जैसे चुनाव करीब आ रहे हैं, ऐसा लग रहा है हमारे प्रधानमंत्री काफी डरे हुए हैं...आज हमारे साथ हुआ और कल किसी और राजनीतिक पार्टी के साथ होगा। मीसा भारती लालू यादव से 10 घंटे चली पूछताछ के दौरान वहीं खड़ी रही। मीसा भारती के साथ राजद के कार्यकर्ता और कई नेता वहां मौजूद रहे। पूर्व शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर, अब्दुल बारी सिद्दीकी और इसरायल मंसूरी भी वहा मौजूद रहे। ध्यान रहे कि लालू प्रसाद की पत्नी राबड़ी देवी की 'गौशाला' के एक पूर्व कर्मचारी ने रेलवे में नौकरी के इच्छुक एक व्यक्ति से संपत्ति हासिल की और बाद में इसे बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री की बेटी हेमा यादव को हस्तांतरित कर दिया। यह आरोप प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने सोमवार को लगाया जो जमीन के बदले नौकरी मामले की जांच कर रहा है। केंद्रीय एजेंसी ने इस महीने की शुरुआत में दिल्ली की एक अदालत के समक्ष एक आरोप-पत्र दायर किया था जिसमें कुछ अन्य लोगों के अलावा लालू प्रसाद के परिवार के सदस्यों राबड़ी देवी और उनकी बेटियों मीसा भारती और हेमा यादव को आरोपी बनाया गया था।

विधायक ने किसान भवन का शुभारंभ किया

मदनूर 30 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता) जुक्कल विधायक थोटा लक्ष्मी कांताराव ने सोमवार दिन कामारेड्डी जिला मदनूर मंडल कोडचिरा गांव में 22 लाख रुपये की लागत से बनाए गय किसान भवन का उद्घाटन किया।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार किसानों के कल्याण के लिए काम कर रही है।

किसानों ने कृषि विभाग के अधिकारियों की सलाह से खेती में आधुनिक तरीके अपनाकर अधिक पैदावार लेने की अपील की है।

उन्होंने कहा कि हालांकि एकलरा-कोड चिरा सड़क निर्माण में कुछ बाधाएं हैं, लेकिन काम जल्द से जल्द पूरा किया जायेगा.

वहीं, स्कूल भवन अंतिम चरण में होने के कारण जल्द ही नये भवन का निर्माण कार्य शुरू हो जायेगा

सामुदायिक भवन और विधायक को गांव के लोगों ने खेतों तक जाने के लिए सीसी रोड और अन्य मुद्दों को लेकर प्रार्थना पत्र सौंपा..उन्होंने स्थानिक जनता को बताए की जल्दी ही गांव के समस्या का समाधान करेंगे

उन्होंने गांव के लोगों को विकास कार्यक्रम चलाने का आश्वासन दिया. बाद में गांव में रिलायंस फाउंडेशन के तत्वावधान में मीठे पानी की टंकी का निर्माण शुरू प्रारंभ किया गया।

इस कार्यक्रम में सरपंच संतोष पटेल, कृषि बाजार समिति अध्यक्ष्य संगमेशवर, कांग्रेस पार्टी नेता रमेश हनमंत यादव, अधिकारी, जन प्रतिनिधि, कार्यकर्ता और लोग शामिल थे

द्रविड़ बोले- पहली पारी में 70-80 रन कम बनाए

इंग्लैंड ने 28 रन से हैदराबाद टेस्ट हराया; स्टोक्स ने कहा- उनकी सबसे बड़ी जीत

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)। टीम इंडिया के हेड कोच राहुल द्रविड़ ने कहा कि टीम पहली पारी में 70-80 रन कम बनाने के कारण हारी। भारत ने हैदराबाद टेस्ट की पहली पारी में 190 रन की बढ़त बनाने के बावजूद 28 रन से मुकाबला गंवा दिया। दूसरी ओर, मैच के बाद इंग्लैंड टीम के कप्तान बेन स्टोक्स ने कहा कि ये उनके कप्तानी करियर की सबसे बड़ी जीत है। भारत और इंग्लैंड के बीच 5 टेस्ट की सीरीज का दूसरा मुकाबला 2 फरवरी से विशाखापट्टनम में खेला जाएगा।

किसी ने बड़ी पारी नहीं खेली- द्रविड़

द्रविड़ ने कहा, 'चौथे दिन पिच बैटिंग के लिए मुश्किल थी। मैं बल्लेबाजों की ज्यादा गलती नहीं मानूंगा लेकिन मुझे लगता है हमने दूसरे दिन पहली पारी में 70 रन कम बनाए, उस वक्त पिच बैटिंग के लिए अच्छी थी। बैटर्स ने अच्छी शुरुआत की लेकिन कोई भी बड़ा स्कोर नहीं बना सका। किसी ने शतक नहीं लगाया, कोई बड़ी पारी नहीं खेल सका। इसलिए हम पहली पारी में 70-80 रन से पीछे रह गए।'

पोप ने बेहतरीन बैटिंग की

द्रविड़ बोले- 'हमारे पास 231 रन का टारगेट नहीं होना चाहिए था। पोप ने बेहतरीन पारी खेलकर इंग्लैंड को इतने बड़े स्कोर तक पहुंचा दिया। उन्हीं की पारी दोनों टीमों के बीच अंतर रही। उन्होंने रिस्की शॉट्स खेले और लगातार रन बनाए। उस तरह की पिच पर 196 रन बनाना शानदार है, वो भी तब जब टीम का कोई और बैटर फिफ्टी भी नहीं लगा सका।'

'मैंने किसी टीम को इतने शानदार स्वीप और रिवर्स स्वीप खेलते नहीं देखा। क्वालिटी बॉलिंग लाइन-अप के सामने ऐसे शॉट्स खेलना मुश्किल रहता है। हम अब इन शॉट्स के खिलाफ बेहतर प्लान के साथ बॉलिंग करेंगे।'

हार्टले की बॉलिंग भी शानदार

द्रविड़ ने कहा, 'लेफ्ट आर्म स्पिनर के खिलाफ चौथे दिन की पिच पर पैरों का इस्तेमाल करना रिस्की होता है। इन कंडीशन में स्वीप और रिवर्स स्वीप से ही ज्यादा रन बनते हैं। हम आगे के मैचों में बेहतर प्लान के साथ बैटिंग पर भी ध्यान देंगे।'

स्टोक्स के लिए रही सबसे बड़ी जीत

इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स ने कहा कि ये उनके कप्तानी करियर की सबसे बड़ी जीत है। स्टोक्स ने जून 2022 में इंग्लैंड टेस्ट टीम की कमान संभाली थी। वह बोले, 'मेरी कप्तानी में हमने कई बेहतरीन मैच जीते, कुछ मैच तो बहुत ही शानदार रहे। लेकिन इस बार जिस तरह की टीम और पिच के खिलाफ खेलकर हम जीते, 100% यह ही मेरी कप्तानी में सबसे बड़ी जीत है।

पहली पारी की गलतियों से मैंने सीखा, मैंने देखा कि भारत के स्पिनर्स ने किस तरह बॉलिंग की। उनकी ही फील्ड पोजिशन देखकर मैंने दूसरी पारी में फील्ड सेट की और ये काम कर गई। पोप और हार्टले ने दूसरी पारी में बेहतरीन कमबैक किया। एक टीम के रूप में हम शानदार खेले।"

आईपीएल के लिए तैयार हैं दीपक चाहर

बोले- टी-20 वर्ल्ड कप खेलना चाहता हूं

दिसंबर में खेला था आखिरी इंटरनेशनल मैच

मुंबई, 29 जनवरी (एजेंसियां)। टीम इंडिया के तेज गेंदबाज दीपक चाहर आईपीएल खेलने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। वह पिछले दिनों साउथ अफ्रीका और अफगानिस्तान के खिलाफ नहीं खेले थे। वह पारिवारिक कारणों से टीम में शामिल नहीं हो सके, उन्होंने कहा कि वह अब फिट हैं और भारत के लिए टी-20 वर्ल्ड कप खेलना चाहते हैं।

चाहर ने साथ ही कहा कि एमएस धोनी अब पूरी तरह फिट हैं और उन्हें 2-3 साल क्रिकेट खेलते रहना चाहिए। चाहर ने भारत के लिए आखिरी टी-20 मुकाबला रायपुर में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेला, ये मुकाबला पिछले साल दिसंबर में खेला गया।

दीपक चाहर पिछले 2 महीने से अपने पिता की देखभाल कर रहे थे। जिन्हें दिसंबर में ब्रेन-स्ट्रोक आया था। उनके पिता अब पूरी तरह ठीक हो चुके हैं, लेकिन टीम इंडिया को अब कोई और टी-20 इंटरनेशनल नहीं खेलना है। इसलिए चाहर मार्च में शुरू होने वाले आईपीएल से ही क्रिकेट में वापसी करेंगे। वह 5 बार की चैंपियन चेन्नई सुपरकिंग्स टीम का हिस्सा हैं।

दीपक चाहर ने न्यूज एजेंसी PTI को बताया, 'मेरे लिए पिता सबसे पहले हैं। मैं यहां तक सिर्फ उनकी वजह से पहुंच पाया हूं। मैंने जो भी अचीव किया, सब उन्हीं के कारण। अगर उनके बुरे समय में मैं उनके साथ नहीं रह सका तो मैं किस तरह का बेटा कहलाऊंगा?'

चाहर ने कहा, 'साउथ अफ्रीका के खिलाफ अगर टी-20 सीरीज भारत में होती तो मैं जरूर खेलता। तब मैं 4-5 घंटे का सफर कर हॉस्पिटल पहुंच सकता था। लेकिन साउथ अफ्रीका से आने में 2-3 दिन तक लग जाते। मेरे लिए पिता के साथ रहना आसान फैसला था, हर बेटा यही करेगा।

मैं अलीगढ़ के हॉस्पिटल में 25 दिन तक अपने पिता के साथ रहा। हम सभी को उनके साथ रहना ही था। मैं उस समय क्रिकेट से पूरी तरह दूर हो गया। फिटनेस पर काम कर रहा था लेकिन बॉलिंग प्रैक्टिस नहीं कर पाया। मैंने एक महीने से प्रैक्टिस नहीं की, इसलिए अफगानिस्तान सीरीज के लिए भी तैयार नहीं था।'

चाहर बोले, 'मैंने आईपीएल (बेंगलुरु) में फिर प्रैक्टिस शुरू की। यहां कुछ दिन रहने के बाद मैं पूरी तरह फिट हो सका। मैंने IPL और वर्ल्ड कप के लिए अच्छी तरह तैयारी कर ली है। मैं इंजरी के कारण पिछले 2 वर्ल्ड कप नहीं खेल सका, अगर फिट रहता तो जरूर दोनों बार खेल पाता।

भारत अंडर-19 वर्ल्ड कप का आखिरी ग्रुप मुकाबला जीता

अमेरिका को 201 रन से हराया, अर्शिन कुलकर्णी का शतक; टेबल टॉप पर इंडिया

ब्लोमफोंटेन, 29 जनवरी (एजेंसियां)। भारतीय टीम ने अंडर-19 वर्ल्ड कप में लगातार तीसरा मुकाबला जीत लिया। टीम ने ग्रुप स्टेज के आखिरी मुकाबले में अमेरिका को 201 रन से हराया।

ब्लोमफोंटेन में अमेरिका ने टॉस जीतकर पहले फील्डिंग करने का फैसला लिया। भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 50 ओवर मं 5 विकेट पर 326 रन बनाए। जवाब में अमेरिका 50 ओवर में 8 विकेट पर 125 रन ही बना सका।

भारत की ओर से अर्शिन कुलकर्णी ने शतक और मुशीर खान ने अर्धशतक लगाया। वहीं, नमन तिवारी ने 4 विकेट लिए। इस जीत के साथ भारत ग्रुप-ए की टेबल में टॉप पर आ गया है।

अर्शिन-मुशीर के बीच शतकीय साझेदारी

भारत ने पहले बल्लेबाजी की। टीम के लिए आदर्श सिंह और अर्शिन कुलकर्णी ने गेम की शुरुआत की। आदर्श 12वें ओवर में 25 रन बना कर आउट हो गए। तीसरे नंबर पर मुशीर खान आए, जिन्होंने कुलकर्णी के साथ शतकीय साझेदारी की। 36वें ओवर तक चली इस साझेदारी में दोनों ने साथ 155 रन जोड़े और भारत को मजबूत स्थिति पर ला कर खड़ा कर दिया। मुशीर 36वें ओवर की पहली हॉल पर 73 रन बना कर आउट हुए।

अर्शिन ने शतक लगाया, आखिरी 10 ओवर में स्ट्राइक बैटिंग की

मुशीर के विकेट के बाद भारतीय टीम के खिलाड़ियों ने बड़े शॉट्स खेलना शुरु किया। कप्तान उदय सहारन 35 रन और सचिन दास 20 रन बना कर आउट हुए। वहीं, अर्शिन ने इस दौरान अपना शतक भी पूरी किया। उन्होंने 118 बॉल में 108 रन की पारी खेली।

प्रियांशु मोलिया 27 रन और एरेवेली अविनाश क्रमशः 27 रन और 12 रन बना कर नाबाद रहे।

अमेरिका के अतींद्र सुब्रमणियन को 2 विकेट

अमेरिका की ओर से अतींद्र सुब्रमणियन को सबसे ज्यादा 2 विकेट मिले। वहीं, आरिन नदकर्णी, ऋषि रमेश और आर्या गर्ग को 1-1 विकेट मिला।

अमेरिका की शुरुआत खराब, धीमी बल्लेबाजी की

अमेरिका 327 रन का दिया टारगेट चेज करने उतरा। प्रणव चेत्तिपालयम और भव्य मेहता ने पारी की शुरुआत की। प्रणव 2 रन और भव्य 0 रन बना कर आउट हो गए। यहां से टीम की पारी स्लो हो गई। नंबर-3 पर आए सिद्धार्थ कप्पा ने 60 बॉल में 18 रन बनाए। वहीं, कप्तान ऋषी रमेश 8 रन बना कर पवेलियन लौटे।

उत्कर्ष ने सबसे ज्यादा रन बनाए

अमेरिका के लिए उत्कर्ष श्रीवास्तव ने सबसे ज्यादा रन बनाए। उन्होंने 73 बॉल में 40 रन की पारी खेली। उनके बाद आए मानव नायक 0 रन और पार्थ पटेल 2 रन बना कर आउट हो गए। वहीं, अमोघ एरेपल्ली 27 रन और अतींद्र सुब्रमणियन 3 रन बना कर नाबाद रहे। टीम टारगेट चेज नहीं कर सकी।

नमन तिवारी ने लिए 4 विकेट

भारतीय टीम के लेफ्ट आर्म पेसर नमन तिवारी ने टीम के लिए सबसे ज्यादा 4 विकेट लिए। वहीं, राज लिंबानी, मुरुगन अभिषेक, सौम्य पांडे और प्रियांशु मोलिया को 1-1 विकेट हासिल हुआ।

भारत सुपर-6 में 3 जीत के साथ जाएगा

चारों ग्रुप की 3-3 टॉप टीमें सुपर-6 के लिए क्वालिफाई करेंगी। यानी भारत भी सुपर-6 में जाएगा। सुपर 6 में 6-6 टीमों के दो ग्रुप बनाए जाएंगे। दोनों ग्रुप की टॉप-2 टीमों के बीच सेमीफाइनल होगा और जीतने वाले दोनों देशों के बीच फाइनल मुकाबला खेला जाएगा।

दूसरे टेस्ट से बाहर हो सकते हैं जडेजा

हैमस्ट्रिंग इंजरी हुई; कुलदीप यादव पॉसिबल रिप्लेसमेंट

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)। टीम इंडिया के ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट से बाहर हो सकते हैं। हैदराबाद में पहले टेस्ट के चौथे दिन उन्हें हैमस्ट्रिंग में खिंचाव महसूस हुआ। पैर का स्कैन कराने के बाद उनकी रिपोर्ट्स आना बाकी है। रिपोर्ट्स आने के बाद ही कन्फर्म हो पाएगा कि उनकी चोट कितनी गंभीर है।

क्रिकबज की रिपोर्ट अनुसार, लम्बी सीरीज को ध्यान में रखते हुए जडेजा को दूसरे टेस्ट से आराम दिया जा सकता है। अगर वह बाहर बैठे तो कुलदीप यादव विशाखापट्टनम में उनकी जगह लेंगे। रवींद्र जडेजा हैदराबाद टेस्ट के चौथे दिन इंग्लिश कप्तान बेन स्टोक्स के डायरेक्ट हिट से रन आउट हो गए। पवेलियन लौटने के दौरान उन्हें चलने में दिक्कतें हुईं। मैच खत्म होने के बाद जडेजा ने हैदराबाद में ही अपने पैर का स्कैन करवाया। जडेजा की स्कैन रिपोर्ट मुंबई इंस्टिट्यूट भेजी गई है, जहां सारे प्लेयर्स की स्कैन रिपोर्ट भेजी जाती है। रिपोर्ट आने के बाद सोमवार शाम तक ही कन्फर्म हो जाएगा कि जडेजा एक टेस्ट से बाहर होंगे या पूरी सीरीज से।

कोच राहुल द्रविड़ ने कहा कि उन्होंने अब तक टीम के फिजियो से जडेजा की इंजरी पर बात नहीं की है। फिजियो से बात करने के बाद ही जडेजा के खेलने पर फैसला लेंगे। क्रिकबज के अनुसार, जडेजा की चोट गंभीर नहीं है, उन्हें हल्का खिंचाव महसूस हुआ है। अगर वह दूसरा टेस्ट नहीं खेल सके तो तीसरा मुकाबला खेल सकेंगे। दूसरा मैच 2 फरवरी से विशाखापट्टन में और तीसरा मैच 15 फरवरी से राजकोट में खेला जाएगा।

जडेजा ने पहले टेस्ट की पहली पारी में भारत के लिए सबसे ज्यादा 87 रन बनाए थे। उन्होंने मैच में कुल 5 विकेट भी झटके थे। अगर वह नहीं खेले तो टीम को बॉलिंग और बैटिंग के साथ उनकी फील्डिंग की कमी भी खलेगी।

जडेजा अगर दूसरा टेस्ट नहीं खेले तो कुलदीप यादव दूसरे टेस्ट की प्लेइंग-11 में उनकी जगह लेंगे। कुलदीप स्क्वॉड में शामिल चौथे स्पिनर हैं, उन्हें पहले टेस्ट की प्लेइंग-11 में शामिल नहीं किया गया था।

फ्रेंच राइडर जॉर्डी टिक्सियर ने जीती इंडियन सुपरक्रॉस रेसिंग

पुणे में पहला लेग खत्म; दूसरा फेज 11 फरवरी को अहमदाबाद में

पुणे, 29 जनवरी (एजेंसियां)। इंडियन सुपरक्रॉस रेसिंग लीग सीजन-1 का पहला लेग बीबी रेसिंग टीम के फ्रेंच राइडर जॉर्डी टिक्सियर ने जीत लिया। पहला लेग को पुणे के छत्रपति शिवाजी स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स में देर रात आयोजित हुआ।

टिक्सियर ने 450सीसी की रेस में शुरुआत से ही बढ़त बनाए रखी। टूर्नामेंट के सबसे सफल राइडर मैट मॉस, जो नौ बार के ऑस्ट्रेलियाई एसएक्स और एसएम चैंपियन हैं, लाख कोशिशों के बाद भी उन्हें पछाड़ नहीं पाए। मॉस दूसरे नंबर पर रहे। टिक्सियर 2018 मोटोक्रॉस वर्ल्ड चैंपियन भी हैं। जीत के बाद टिक्सियर ने कहा, 'ट्रैक काफी अच्छा था, मैंने पूरे सप्ताह काफी एन्जॉय किया।'

इंटरनेशनल 250सीसी रेसिंग में बिगरॉक टीम के रीड टेलर पहले नंबर पर रहे। इंडियन एंड एशियन मिक्स 250सीसी कैटेगरी में थाईलैंड और बिगरॉक टीम के पेनजन टॉप पर रहे। वहीं 85cc जूनियर इंडिया-एशिया मिक्स कैटेगरी के पॉइंट्स काउंट नहीं हुए।

रेस शुरू होने से पहले सभी टीमों ने ग्राउंड के लैप लगाए। ढोल-ताशों के साथ पहले सीजन की रंगारंग शुरुआत हुई। देश के नेशनल एंथम के साथ रेस की शुरुआत हुई। पहला लेग पुणे में खत्म हो चुका है। सीजन-1 के अगले दो लेग अहमदाबाद (11 फरवरी) और नई दिल्ली (25 फरवरी) में होंगे।

पहले सीजन में छह टीमों ने हिस्सा लिया। हर टीम में 8-8 रेसर शामिल थे। पहला सीजन चार कैटेगरी में खेला गया, हर कैटेगरी में दो-दो रेसर थे। रेस में 450cc इंटरनेशनल, 250cc इंटरनेशनल, 250cc इंडिया-एशिया मिक्स और 85सीसी जूनियर इंडिया-एशिया मिक्स कैटेगरी शामिल रहीं।

सुपरक्रॉस मोटरसाइकिल रेसिंग है, जो स्टेडियम में मिट्टी के ट्रैक पर होती है। सुपरक्रॉस रेसिंग के दौरान रेसर स्टंट भी करते नजर आए।

विश्व कप में दिव्यांश सिंह ने स्वर्ण पदक जीता

10 मीटर एयरराइफल के फाइनल में बनाया रिकॉर्ड

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसियां)। दिव्यांश ने जीत के बाद कहा कि वह लंबे समय बाद स्वर्ण जीतकर खुश हैं। हाल के समय में वह अच्छी शूटिंग कर रहे हैं, लेकिन परिणाम उन्हें नहीं मिल पा रहा था। यह परिणाम इस महत्वपूर्ण वर्ष में उनका मनोबल बढ़ाएगा।

टोक्यो ओलंपिक में खेल चुके भारतीय शूटर दिव्यांश सिंह पंवार ने फाइनल का विश्व रिकॉर्ड बनाते हुए 10 मीटर एयरराइफल का स्वर्ण जीत लिया। उन्होंने फाइनल में 253.7 का स्कोर कर नया विश्व कीर्तिमान बनाया। दिव्यांश ने चीन के शेंग लीहाओ की ओर से एशियाई खेलों में बनाए गए 253.3 के विश्व रिकॉर्ड को पीछे छोड़ा। 21 वर्षीय दिव्यांश ने पांच साल बाद विश्वकप का व्यक्तिगत स्वर्ण जीता। इससे पहले उन्होंने 2019 के पुटिएन विश्वकप में स्वर्ण जीता था।

क्वालिफाइंग दौर में भी शीर्ष पर रहे

दिव्यांश ने शुरू से ही शानदार फॉर्म का परिचय दिया। उन्होंने क्वालिफाइंग दौर में 632.4 का स्कोर किया और शीर्ष पर रहकर फाइनल में पहुंचे। 24 निशानों के फाइनल में उन्होंने एक बार भी 10 से कम का स्कोर नहीं किया। चौथा और छठा निशाना उनका परफेक्ट 10.9 पर लगा। दिव्यांश का फाइनल में पूरी तरह दबदबा रहा। रजत जीतने वाले इटली दानी सोलाजो उनसे 1.9 अंक पीछे रहे।

दिव्यांश ने जीत के बाद कहा कि वह लंबे समय बाद स्वर्ण जीतकर खुश हैं। हाल के समय में वह अच्छी शूटिंग कर रहे हैं, लेकिन परिणाम उन्हें नहीं मिल पा रहा था। यह परिणाम इस महत्वपूर्ण वर्ष में उनका मनोबल बढ़ाएगा। सर्बिया के लाजार कोवासेविच ने कांस्य पदक जीता, जबकि दूसरे भारतीय शूटर अर्जुन बबूता छठे स्थान पर रहे। यह दिव्यांश का विश्वकप में कुल पांचवां स्वर्ण पदक है। भारत इस विश्वकप में दो स्वर्ण और दो रजत के साथ पदक तालिका में शीर्ष स्थान पर है।

बेटन कप 2024: इंडियन नेवी लगातार दूसरी बार बनी चैंपियन; इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन को 5-4 से हराया

कोलकाता, 29 जनवरी (एजेंसियां)। अखिल भारतीय 125वें अखिल भारतीय बीटन कप 2024 के फाइनल मुकाबले में यहां साईं ग्राउंड में रविवार को खेले गए एक रोमांचक मुकाबले में इंडियन नेवी ने शूट-आउट में इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन को 5-4 से हरा दिया। निर्धारित समय तक दोनों टीमें 2-2 पर बराबरी पर रहीं। इस तरह इंडियन नेवी ने लगातार दूसरी बार ट्रॉफी पर कब्जा जमाया।

यहां साईं ग्राउंड में खेले गए फाइनल मुकाबला बड़ा रोमांचक रहा। निर्धारित समय तक दोनों टीमें 2-2 पर बराबरी पर रहीं। जीत का नतीजा शूट-आउट के जरिए हुआ। शूट-आउट के जरिए इंडिया नेवी ने इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड को 5-4 से हराया। शूट-आउट में इंडियन नेवी ने 3 और इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन 2 गोल कर पाई।

'अब क्रिकेटर को जूझना नहीं पड़ता, काफी पैसा मिल रहा'

1983 की वर्ल्ड कप विजेता टीम का हिस्सा रहे मदनलाल बोले- अब गेम चेंज हो चुका है

जयपुर, 29 जनवरी (एजेंसियां)। क्रिकेट वर्ल्ड कप जीतने वाली टीम का हिस्सा रह चुके मदन लाल शर्मा पिछले दिनों जयपुर पहुंचे। इस दौरान उन्होंने कहा कि खेलों का आयोजन स्कूल और कॉलेज से शुरू होकर यूनिवर्सिटी तक होना चाहिए। इससे खेलों को बढ़ावा मिलेगा। उनका मानना है कि शुरुआती स्तर पर खेलों का आयोजन होता है तो जब खिलाड़ी उसमें जीतता है तो उसे मोटिवेशन मिलता है। उसके लिए यह यादगार पल होता है कि यह मेडल मैंने कॉलेज में जीता था।

मदन लाल का कहना है कि जिंदगी में कभी हार नहीं माननी चाहिए। जब तक आप अंदर से पॉजिटिव नहीं हो सकते, तब तक हम कुछ नहीं कर सकते। यह मेरा एक्सपीरिएंस कहता है।

मेरा हैदराबाद

त्योहारों और छुट्टियों के दौरान अतिरिक्त सुरक्षा व्यवस्था की जाएं : रवि गुप्ता

डीजीपी ने रेलवे की राज्य स्तरीय सुरक्षा समिति की गतिविधियों की समीक्षा की

हैदराबाद, 29, जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। पुलिस महानिदेशक रवि गुप्ता ने राज्य के रेलवे क्षेत्रों में सुरक्षा स्थिति की समीक्षा की। सोमवार को डीजीपी कार्यालय में अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, रेलवे और सड़क सुरक्षा, महेश एम भागवत की अध्यक्षता में रेलवे पुलिस (जीआरपी और आरपीएफ दोनों विंग) और रेलवे अधिकारियों के साथ एक समीक्षा बैठक आयोजित की गई। रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) महानिरीक्षक और प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त अरोमा सिंह ठाकुर, वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त, हैदराबाद अनुप कुमार शुक्ला और सीनियर डीएससी सिकंदराबाद देबाश्मिता सी. बनर्जी, रेलवे अतिरिक्त डीआरएम राजीव कुमार गंगेले, खुफिया सुरक्षा विंग के डीआइजी तफसीर इकबाल, खुफिया ब्यूरो के सहायक निदेशक जी. दामोदर रेड्डी, रेलवे एसपी सलीमा समेत अन्य शामिल हुए। समीक्षा बैठक में डीजीपी रवि गुप्ता ने कहा कि वह तेलंगाना राज्य में रेलवे पुलिस के लिए आवश्यक कुछ और पुलिस कर्मियों को आवंटित करने के मामले पर चर्चा करेंगे। उन्होंने कहा कि सरकारी रेलवे पुलिस (जीआरपी) विंग में 12 रेलवे पुलिस स्टेशनों और 1% रेलवे चौकियों में पुलिसकर्मी कार्यरत हैं। डीजीपी ने सुझाव दिया कि रेलवे पुलिस स्टेशनों की सीमा में आवश्यक सीसीटीवी कैमरे और अन्य सुरक्षा उपकरणों को बढ़ाने के उपाय किये जाने चाहिए। हैदराबाद शहर को देश में सबसे अधिक सीसीटीवी वाली राजधानी के रूप में जाना जाता है और उसी के अनुरूप माना जा रहा है कि इन्हें रेलवे स्टेशनों पर भी लगाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि त्योहारों और छुट्टियों के दौरान भारी यातायात की स्थिति में अतिरिक्त सुरक्षा के उपाय किये जाने चाहिए। डीजीपी ने जीआरपी कर्मियों को रेलवे ट्रैक पर होने वाली सभी दुर्घटनाओं की जांच करने का सुझाव दिया। इस अवसर पर, रेलवे के अतिरिक्त डीजीपी, महेश एम भागवत ने कहा कि दुर्घटनाओं को रोकने के लिए ब्लैक स्पॉट पर फुट ओवर ब्रिज और रेल की पटरियों पर बाड़ लगाई जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि नामपल्ली, काजीपेट, महबूबनगर और अन्य क्षेत्रों में रेलवे स्टेशनों के ⁄टफार्मों पर रेलवे पुलिस स्टेशन स्थापित करने से पीड़ितों को तुरंत शिकायत दर्ज करने का अवसर मिलेगा। सिकंदराबाद ग्रामीण रेलवे पुलिस उप-मंडल, हैदराबाद, सिकंदराबाद रेलवे पुलिस निरीक्षक के कार्यालयों का या तो नवीनीकरण किया जाना चाहिए या एक नया कार्यालय स्थापित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि महबूबनगर , विकाराबाद नलगोंडा, काजीपेट, वारंगल, मंचिरयाला रेलवे स्टेशनों में सुविधाओं को उन्नत किया जाना चाहिए। करीमनगर में रेलवे पुलिस स्टेशन स्थापित किया जाना चाहिए और कोरुतला और सिद्दीपेट में रेलवे आउट पोस्ट स्थापित किए जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि लिंगमपल्ली, चारलापल्ली और फलकनामा में जीआरपी स्टाफ के लिए सुविधाओं की व्यवस्था की जानी चाहिए। एडीजी ने कहा कि सिकंदराबाद, काजीपेट इलाके में ड्रग्स तस्करों को पकड़ने के लिए खोजी कुत्तों से निगरानी की व्यवस्था करने की योजना बनाई गई है। उन्होंने कहा कि रेलवे अस्पताल में जीआरपी कर्मियों के लिए निःशुल्क चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए कदम उठाया जाना चाहिए। बैठक में डीजीपी रवि गुप्ता ने रेल यात्रियों को निर्देश दिए कि जहां भी संदिग्ध व्यक्ति या चीजें नजर आएं तो 100 या 139 या 1512 नंबर डायल करें, अजनबियों से खाना न लें, जहां डिब्बे में बड़ी संख्या में यात्री हों, वहां महिला यात्रियों को रात में यात्रा करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर यात्रियों को अपना मोबाइल फोन चोरी हो जाए तो उन्हें नजदीकी रेलवे पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज करानी चाहिए या www.ceir.gov.in पर लॉग इन करना चाहिए। अतिरिक्त डीआरएम राजीव कुमार और अन्य ने भी यात्री सुरक्षा के लिए आरपीएफ, जीआरपी के सुचारू कामकाज के लिए अपने विचार साझा किए।

पूर्व मंत्री नरसा रेड्डी का निधन

पीसीसी के पूर्व अध्यक्ष, वरिष्ठ कांग्रेस नेता पी. नरसा रेड्डी के पार्थिव शरीर का गांधी भवन में अंतिम दर्शन कर श्रद्धांजलि अर्पित की। टीपीसीसी के कार्यकारी अध्यक्ष महेश कुमार गौड़, वरिष्ठ कांग्रेस नेता कोंडा रेड्डी, नागैया, कुमार राव, निरंजन, कमलाकर, मेट्टु साई कुमार और अन्य ने नरसा रेड्डी के पार्थिव शरीर पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

हैदराबाद, 29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। पूर्व मंत्री और आंध्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी (एपीसीसी) के पूर्व अध्यक्ष नरसा रेड्डी का सोमवार को यहां बंजारा हिल्स स्थित उनके आवास पर निधन हो गया। वह 92 वर्ष के थे। वह पिछले कुछ समय से उम्र संबंधी समस्याओं से जूझ रहे थे। उन्होंने 19%2 से दो वर्षों तक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। नरसा रेड्डी ने सांसद, विधायक और एमएलसी के रूप में लोगों की सेवा की थी। उन्होंने तत्कालीन मुख्यमंत्री जलागम वेंगाला राव के मंत्रालय में राजस्व मंत्री के रूप में काम किया। 22 सितंबर, 1931 को निर्मल जिले के मलाक चिंचोली गांव में जन्मे नरसा रेड्डी ने उस्मानिया विश्वविद्यालय से बी.ए., एल.एल.बी. की डिग्री हासिल की। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भी भाग लिया।

कांग्रेसी नेताओं ने नरसा रेड्डी को श्रद्धांजलि दी

मुख्यमंत्री ने नरसा रेड्डी के निधन पर शोक व्यक्त किया

हैदराबाद, 29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी ने आज पूर्व पीसीसी अध्यक्ष और वरिष्ठ कांग्रेस नेता नरसा रेड्डी के निधन पर शोक व्यक्त किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि नरसा रेड्डी ने लोगों को सेवाएं प्रदान कीं। एक सांसद, विधायक और एमएलसी, पीसीसी चीफ के तौर पर वरिष्ठ कांग्रेस नेता की सेवाएं और तत्कालीन आंध्र प्रदेश में मंत्री के रूप में सराहनीय रही हैं। उन्होंने कहा कि नरसा रेड्डी का अनुभव कांग्रेस के लिए मार्गदर्शक शक्ति है और वरिष्ठ नेता का निधन पार्टी के लिए एक बड़ी क्षति है।

केटीआर पर कोमट रेड्डी ने तंज कसा

हैदराबाद,29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। राज्य के सड़क और भवन मंत्री कोमाटिरेड्डी वेंकट रेड्डी ने विधायक केटीआर पर व्यंग्य किया कि वह उनके नाखून के बराबर भी नहीं है। वे अब अपने आप को फार्म हाउस तक सीमित रख लिया है। उन्होंने यदाद्री जिले का दौरा किया और केटीआर के बयान पर अपना गुस्सा व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि किसी समय केटीआर ने रेवंत रेड्डी पर तंज कसते हुए कहा था कि वे केसीआर के नाखून के बराबर नही है। आज उन्हे यह बताना होगा कि कौन किसके नाखून के बराबर नही है। कोमटरेड्डी ने कहा कि शपथ लेने के तीसरे दिन रेवंत रेड्डी ने मूसी शुद्धिकरण के बारे में बात की। क्या केटीआर ने कभी इसके बारे में बात की है? जिस तरह रेवंत रेड्डी ने केसीआर को हराया है वह काफी शर्मनाक है। उनमें से 50 हजार वोटों से हार गया। केटीआर को यह बात रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि रेवंत रेड्डी, जो जेडपीटीसी से निर्दलीय एमएलसी बने और औऱ आज सीएम बने हैं। उन्होंने कोंडामाडुगु में प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों को हटाने और इसे आवासीय क्षेत्र में बदलने का वादा किया

भारतीय रेलवे में अब तक का सबसे अधिक पूंजीगत व्यय

हैदराबाद , 29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। एक अप्रैल, 2023 से 31 दिसंबर, 2023 के दौरान 9 महीने दिसंबर 2023 तक पूंजीगत व्यय का 75% पूरे आईआर में उपयोग किया गया जबकि 83% पूंजीगत व्यय का उपयोग पूरे एससीआर में किया गया। पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में आईआर कैपेक्स उपयोग लगभग 33% अधिक है। दिसंबर 2023 तक इस वित्तीय वर्ष के पहले नौ महीनों में 75% पूंजीगत व्यय उपयोग (अब तक का उच्चतम)। भारतीय रेलवे ने रुपये का व्यय किया है। दिसंबर 2023 तक 1,95,929.97 करोड़ रुपये जो लगभग है। इस वित्तीय वर्ष के दौरान रेलवे के कुल पूंजीगत व्यय का 75% (2.62 लाख करोड़ रुपये) है। दिसंबर 2022 में इसी अवधि के दौरान, भारतीय रेलवे का 1,46,248.73 करोड़ इस वर्ष, कैपेक्स उपयोगिता लगभग है। पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 33% अधिक है।यह निवेश विभिन्न बुनियादी ढांचा परियोजनाओं जैसे नई लाइनें, दोहरीकरण, गेज परिवर्तन और यात्री सुविधाओं को बढ़ाने में देखा जाता है। रेलवे में यात्रियों की सुरक्षा सर्वोपरि है। सुरक्षा संबंधी कार्यों को बढ़ाने में महत्वपूर्ण राशि का निवेश किया गया है। दक्षिण मध्य रेलवे ने लगभग देखा है। दिसंबर 2023 तक इस वित्तीय वर्ष के पहले नौ महीनों में 83% पूंजीगत व्यय का उपयोग किया गया है। दक्षिण मध्य रेलवे ने रुपये का व्यय किया है। दिसंबर 2023 तक 13,690 करोड़ जो लगभग है। इस वित्तीय वर्ष के दौरान कुल पूंजीगत व्यय बजट आवंटन का 83% (16,599 करोड़ रुपये) है। दिसंबर 2022 में इसी अवधि के दौरान, दक्षिण मध्य रेलवे ने रुपये का पूंजीगत व्यय 5,878 करोड़ था। इस वर्ष, कैपेक्स व्यय लगभग है। पिछले वर्ष की इसी अवधि के व्यय की तुलना में 43% अधिक है। अरुण कुमार जैन, महाप्रबंधक, एससीआर ने चालू वित्तीय वर्ष में पहले नौ महीनों के दौरान कैपेक्स के उपयोग में हुई प्रगति के लिए टीम की सराहना की और सावधानीपूर्वक योजना जारी रखने की सलाह दी है ताकि प्रत्येक चरण में परियोजना निष्पादन तेजी से आगे बढ़े।

संसदीय चुनाव के लेकर हुई बैठक, अधिकारियों को कई निर्देश

हैदराबाद, 29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। रंगारेड्डी जिले में सोमवार को एकीकृत जिला कार्यालय परिसर स्थित सभाकक्ष में जिला प्रोकलेक्टर व नोडल अधिकारी शशांक ने आगामी संसदीय चुनाव को लेकर अधिकारियों के साथ बैठक की। इस अवसर पर बोलते हुए जिलाधिकारी ने नोडल पदाधिकारियों को कई महत्वपूर्ण निर्देश देते हुए कहा कि संसदीय चुनाव कराने के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं पूरी करें। जिला निर्वाचन अधिकारी कलेक्टर शशांक ने अधिकारियों से कहा कि पीठासीन, सहायक पीठासीन अधिकारी, माइक्रो पर्यवेक्षक,क्षेत्रीय अधिकारी, उड़न दस्ता दल, मतगणना पर्यवेक्षक,पर्याप्त स्टाफ की पहचान की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि कम से कम 20 प्रतिशत कार्मिकों को रिजर्व में तैयार रखा जाए। मतदान एवं मतगणना के लिए अलग-अलग कार्मिकों की नियुक्ति करना चाहिए। उन्होंने जागरूकता पैदा करने के लिए प्रशिक्षण कक्षाएं आयोजित करने का आदेश दिया। पर्याप्त वाहन उपलब्ध रखना तथा मतदान सामग्री तैयार करने हेतु निर्देशित किया गया। उन्होंने कहा कि सभी मतदान केंद्रों पर शौचालय, रैंप, बिजली, पेयजल जैसी बुनियादी सुविधाओं में कोई कमी हो तो तुरंत जांच की जा सके। कलेक्टर ने इसे उपलब्ध कराने का सुझाव दिया। बैठकों में अपर समाहर्ता प्रतिमा सिंह, जिला राजस्व अधिकारी संगीत, नोडल अधिकारी आदि ने प्रतिभाग किया।

टीटीडी: तिथि का सालाना बजट 5 हजार करोड़ रुपये के पार

हैदराबाद,29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। तिरुमला तिरुपति देवस्थानम के शासी निकाय ने 2024-25 के लिए वार्षिक बजट को मंजूरी दे दी है। शासक वर्ग ने 5,122.80 करोड़ रुपये के बजट को मंजूरी दी जबकि इसे 5,141.74 करोड़ रुपये के अनुमान के साथ पेश किया गया। संभागवार आवंटन इस प्रकार है। इंजीनियरिंग विभाग के लिए 350 करोड़। हिंदू धर्मप्रचार और संबंधित परियोजनाओं के लिए 108.50 करोड़। विभिन्न संस्थानों को अनुदान के रूप में 113.50 करोड़ रु। राज्य सरकार को अंशदान के रूप में 50 करोड़ रु। विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों और विश्वविद्यालयों को 173.31 करोड़ रुपये का अनुदान। स्वच्छता विभाग के लिए 261.07 करोड़। निगरानी एवं सुरक्षा विभाग के लिए 149.99 करोड़, और चिकित्सा विभाग के लिए 241.07 करोड़ रुपए।

राजस्व अनुमान श्रीवारी हुंडी उपहार के माध्यम से रु. 1,611 करोड़। सावधि जमा पर ब्याज के रूप में 1,167 करोड़ रु। प्रसाद की बिक्री से 600 करोड़ रु। कल्याण प्राप्तियों के माध्यम से 151.50 करोड़ रु। कमरों, कल्याणमंडपम स्टालों के माध्यम से 147 करोड़ श्रीवारी दर्शन और अर्जिता सेवा टिकटों की बिक्री से 448 करोड़ रुपये।

वन, पर्यावरण मंत्री ने प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड कार्यालय का निरीक्षण किया

हैदराबाद , 29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। वन, पर्यावरण और धर्मार्थ मंत्री कोंडा सुरेखा ने सोमवार को सनत नगर में तेलंगाना राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड कार्यालय का औचक निरीक्षण किया।

इस अवसर पर कार्यालय के प्रत्येक अनुभाग का भ्रमण कर फाइलों की जांच की गयी। उन्होंने अधिकारियों से विस्तृत जानकारी ली। बायोमेट्रिक में दर्ज विवरण के साथ उपस्थिति तालिका देखकर उन्हें पता चल जाता है कि कार्यालय में कितने लोग काम कर रहे हैं और कौन छुट्टी पर है। मंत्री ने अधिकारियों और कर्मचारियों को चेतावनी दी है कि बिना पूर्व सूचना के अनुपस्थित रहने और समय पर कार्यालय नहीं आने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। बाद में, मंत्री ने प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण के लिए प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा की जा रही जांच और उपायों की प्रगति के बारे में जानकारी ली। अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए कि कार्मिक अपनी जिम्मेदारियों में लापरवाही न बरतें और अपने कर्तव्यों को कुशलतापूर्वक निभाएं और प्रदूषण नियंत्रण के लिए सरकार द्वारा निर्धारित दिशानिर्देशों को लागू करें। मंत्री सुरेखा ने सुझाव दिया कि भविष्य में जब भी वह निरीक्षण करें तो अधिकारियों और कर्मचारियों को सभी विवरणों के साथ तैयार रहना चाहिए।

संगारेड्डी के विकास के लिए हर संभव प्रयास करूंगा : जग्गा रेड्डी

हैदराबाद,29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। कांग्रेस नेता जग्गा रेड्डी ने आज कहा कि अगर वे चुनाव जीत जाते तो संगारेड्डी के विकास के लिए मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी से निधियों की मांग करते। उन्होंने कहा कि लोगों का आरोप है कि मैने संगा रेड्डी के विकास को नजरंदाज किया। उन्होंने कहा कि मैं उन सत्तर हजार लोगों का जवाबदेह हूं, जिन्होंने मुझे वोट दिया। जग्गारेड्डी ने कहा कि जिन 80 हजार लोगों ने मुझे वोट नहीं दिया, उन्हें सोचना चाहिए। वह एक बार नगर निगम पार्षद, नगर पालिका अध्यक्ष, तीन बार विधायक के रूप में जीते और दो बार हारे। उन्होंने कहा कि ये 70 हजार लोग हर चुनाव में मुझे वोट देने आते हैं। उन्होंने कहा कि अगर मैं उन सभी के लिए भी जवाबदेह हूं जिन्होंने मुझे वोट नहीं दिया।

मुझे खुशी है कि कांग्रेस की सरकार आई है।' उन्होंने कहा कि संगारेड्डी के लोग जानते हैं कि जग्गारेड्डी की मानसिकता क्या है, लेकिन कहीं न कहीं छोटी सी गलती हुई है। उन्होंने कहा कि अगर मैं हारा भी तो कांग्रेस की सरकार है।, इसलिए मुझे पता है कि लोगों की सोच क्या है, इसलिए मैं उसी के मुताबिक काम करूंगा. लोग जानते हैं कि मैं उनके हर मुसीबत में साथ देता रहा हूं, और जो भी मदद कर सकता है मैंने की है।

उन्होंने कहा, यदि आप केवल वोट के लिए ऐसा करना चाहते हैं तो पैसा रखना और चुनाव के दौरान उसे बांटना ही काफी है। इसके अलावा, मैं बिरप्पा, मल्लन्ना, भवानी माता, एल्लम्मा, मोहरम पीर जैसे मेलों में पैसे जमकर खर्च करता हूं। जब मैं दस साल तक सत्ता में था तो मैंने संगारेड्डी निर्वाचन क्षेत्र में किस तरह के विकास कार्य किए। 2014 में मेरे हारने के बाद मैंने मेडिकल कॉलेज के लिए लड़ाई लड़ी। 2018 में जीतने के बाद संगारेड्डी में क्या किया, मुझे आपको बताने की जरूरत नहीं है।

उन्होंने कहा कि बीआरएस ने 9 वर्षों में क्या किया है? वे ऐसा क्यों कहते हैं कि हमने यह किया है? उन्होंने कहा कि कांग्रेस की सरकार इन सबको ध्यान में रखेगी। उन्होंने कहा कि अपने आगे के विकास के लिए सोचने और वोट करने और जीतने के लिए कहा। , कांग्रेस की सरकार बन गई है तो जनता के मन में जो होगा वही करूंगा। लेकिन मैं कुछ दिन दूर रहूंगा। मैं जो भी काम करूंगा वह रुकेगा नहीं। त्यौहार भी हर साल की तरह आयोजित होंगे। उन्होंने कहा कि वह जल्द ही कार्यकर्ताओं के साथ बैठक आयोजित करेंगे।

कांग्रेस पार्टी द्वारा शुरू की गई 6 गारंटी योजनाओं के लिए हर कोई आवेदन कर रहा है। जग्गा रेड्डी ने कहा, अगर कोई छूट भी जाए तो आवेदन दे दें। मेरी पत्नी निर्मला मेरे निर्वाचन क्षेत्र में हर चीज का ख्याल रखेंगी।

रेरा सचिव बालकृष्ण की जमानत याचिका दायर

हैदराबाद,29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)।आय से अधिक संपत्ति के मामले में गिरफ्तार किए गए तेलंगाना रियल एस्टेट रेगुलेटरी अथॉरिटी के सचिव एस. बालकृष्ण की वकील अनीशा ने जमानत के लिए कोर्ट में याचिका दायर की। इसमें कहा गया है कि उनके पास सारी संपत्ति नहीं है जैसा कि अधिकारी कहते हैं। अनीशा ने कहा कि सारा हिसाब-किताब बैंकों के जरिए हुआ और वह हर साल इनकम टैक्स भर रहे हैं। दूसरी ओर, एक अन्य याचिका में बालकृष्ण की दस दिन की हिरासत की मांग की। इसमें कहा गया है कि इस मामले में आगे की जांच की जरूरत है।

पिछले बुधवार को अधिकारियों द्वारा बालकृष्ण के संबंध में की गई छापेमारी में आय से अधिक 100 करोड़ से अधिक की संपत्ति का खुलासा हुआ है। दूसरी ओर, पहले एचएमडीए के योजना विभाग के निदेशक रहते हुए, वह एमएयूडी के प्रभारी निदेशक के रूप में बने रहे।

नायडू जमानत मामले में एपी सरकार को झटका

नई दिल्ली। 29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। इनर रिंग रोड केस (आईआरआर) मामले में आंध्र प्रदेश सरकार को बड़ा झटका देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने टीडीपी प्रमुख चंद्रबाबू नायडू को दी गई अग्रिम जमानत रद्द करने से इनकार कर दिया है। इसमें कहा गया कि इसी मामले में सह-अभियुक्तों के खिलाफ आदेश चंद्रबाबू पर भी लागू होगा। पीठ ने पूछा, ''मामले में एसएलपी वर्ष 2022 में दायर की गई थी। इसलिए, क्या नियम 1%ए लागू होता है?'' पीठ ने यह भी पूछा कि क्या इस मामले और अलग-अलग राय के साथ दिए गए फैसले के बीच कोई संबंध है। मामले में आईपीसी की कई धाराएं भी लंबित थीं। अदालत के संज्ञान में यह भी लाया गया कि आईपीसी की धारा 420 के तहत जांच चल रही है। पीठ ने पूछा कि यह धारा कैसे लागू होगी।

चंद्रबाबू के वकील सिद्धार्थ लूथरा ने सुप्रीम कोर्ट में लंबित अन्य मामलों का विवरण मांगते हुए मामला पीठ को सौंपा। अदालत ने सभी विवरणों की जांच की। इसमें कहा गया कि शेष मामलों में सामान्य जमानत भी दी गई है। सरकार के वकील ने कहा कि नायडू को कुछ मामलों में नियमित जमानत और कुछ में अग्रिम जमानत मिल गई है। पीठ ने पूछा कि जब सह-आरोपी जमानत पर बाहर हैं तो चंद्रबाबू भी बाहर होंगे तो क्या नुकसान होगा।

एनएचआरसी ने राज्य सरकार को जारी किया नोटिस

हैदराबाद,29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) ने सोमवार को रंगा रेड्डी जिले में महिला पुलिस अधिकारियों द्वारा एक छात्रा को बाल पकड़कर घसीटने की मीडिया रिपोर्टों पर तेलंगाना सरकार को नोटिस भेजा। एनएचआरसी ने चार सप्ताह के भीतर एक विस्तृत रिपोर्ट मांगी, जिसमें जिम्मेदार पुलिस अधिकारियों के खिलाफ की गई कार्रवाई भी शामिल है। इसने एक वीडियो क्लिप पर मीडिया रिपोर्ट पर स्वत: संज्ञान लिया है जिसमें 24 जनवरी को एक आंदोलन के दौरान महिला पुलिस अधिकारियों को एक प्रदर्शनकारी छात्रा को उसके बालों से घसीटते हुए दिखाया गया है।

विशेष रूप से, विरोध प्रदर्शन प्रोफेसर जयशंकर तेलंगाना राज्य कृषि विश्वविद्यालय (पीजेटीएसएयू) के कुछ छात्रों द्वारा किया गया था।आयोग ने पाया कि मीडिया रिपोर्ट की सामग्री, यदि सच है, तो पीड़ित लड़की के मानवाधिकारों के उल्लंघन का गंभीर मुद्दा उठाया गया है। तदनुसार, इसने मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक, तेलंगाना को नोटिस जारी किया। मांगी गई रिपोर्ट में की गई कार्रवाई और पीड़ित लड़की की स्वास्थ्य स्थिति शामिल होनी चाहिए। 25 जनवरी को आई मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, छात्र नए उच्च न्यायालय परिसर के निर्माण के लिए विश्वविद्यालय की 100 एकड़ भूमि आवंटित करने के राज्य सरकार के फैसले का विरोध कर रहे थे।कथित घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। इस बीच, वीडियो ने सार्वजनिक आक्रोश पैदा कर दिया और पुलिस की कार्रवाई की विपक्ष द्वारा भारी आलोचना की गई। राजेंद्रनगर पुलिस ने एक स्पष्टीकरण जारी किया जिसमें कहा गया कि दो महिला कांस्टेबलों द्वारा की गई कार्रवाई अनजाने में थी और वे महिला प्रदर्शनकारी का हाथ पकड़ना चाहते थे।भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) एमएलसी कल्वकुंतला कविता सहित विपक्षी नेताओं ने पुलिस की बर्बरता पर गंभीर चिंता जताई और कड़ी कार्रवाई की मांग की।

कांग्रेसी नेताओं ने सीपीआई नेताओं से मुलाकात की

हैदराबाद , 29 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। सीपीआई के राष्ट्रीय सचिव डी. राजा, सीपीआई केंद्रीय समिति के सदस्य के नारायण और पूर्व राज्यसभा सदस्य अजीज पाशा से नई दिल्ली स्थित सीपीआई राष्ट्रीय कार्यालय में कांग्रेसी नेताओं से शिष्टाचार मुलाकात की और तेलंगाना राज्य में सरकार बनाने में उनके सहयोग के लिए उन्हें धन्यवाद दिया । कार्यक्रम में टीपीसीसी वरिष्ठ उपराष्ट्रपति, तेलंगाना राज्य विशेष प्रतिनिधि डॉ. मल्लु रवि, टीपीसीवी के महासचिव नरसा रेड्डी भूपति रेड्डी, सिंगम चरण कौशिक यादव, नागर कुर्नूल संसदीय क्षेत्र प्रभारी ए लुगोंडामधुसुधन रेड्डी ने भाग लिया।

CHANGE OF NAME

I, **KUSUMA W/o No. 13772143H, NK - Lovaraju Avala,** resident of D.No. 20-4-7, Vill: Durgavanipalem, PO: Peda Gantyada, Teh.: Peda Gantyada, Dist.: Visakhapatnam, AP, PIN-530044. I have changed my name from **KUSUMA** (Old Name) to **KUSUMA AVALA** (New Name) vide affidavit No. 83AA 826522, dt. 27-01-2024.

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: *Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone:27644999. Fax:27642512, RNI No.69340/98, Regd.:No.AP/HIN/00196/01/1/97/TC.